

गाय धर्म और विज्ञान

(गौ विज्ञान परीक्षा हेतु संदर्भ ग्रंथ)

संकलनकर्ता-संपादक
शताब्दी सुबोध पाण्डे

संकलन, संपादक मंडल
डॉ. पी.एल. चौधरी
डॉ. गजेन्द्र चंद्राकर
डॉ. मनोज पाण्डेय
डॉ. अमित पाण्डेय

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति
जागृति मंडल, गुरु गोविंद सिंह नगर, पंडरी, रायपुर (छ.ग.)
ई-मेल- gausevacg@gmail.com.

मुद्रक

युगबोध डिजिटल प्रिंटर्स
6, समता कालोनी, रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति—एक परिचय एवं उद्देश्य

छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति एक पंजीकृत अशासकीय स्वयंसेवी संगठन है, जिसका प्रधान कार्यालय जागृति मण्डल, गुरु गोविंद सिंह नगर, पंडरी, रायपुर में स्थित है। संस्था के माध्यम से गौवंश संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विविध आयामों को लेकर पूरे प्रदेश में विविध कार्य संपादित किये जाते हैं।

1. गौ सेवा का मूल चिंतन गाय हमारी संस्कृति है।

वयं अमृतस्य पुत्रः- पंचनाम् अमृतानां समाहारः पंचामृतं

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।

पंचामृत मयनीत स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पंच अमृत में दूध, दही, घी, गुड़ तथा मधु हैं, इसमें 3 तो गव्य हैं। गाय के दूध को अमृत माना गया है। जीवन भर हम गाय के दूध पर पलते हैं और हजारों पीढ़ियों से दूध, दही, घी का उपयोग कर रहे हैं, इसीलिए हमें अमृतपुत्र कहा जाता है।

भूमि हमारी प्रकृति है।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः अथर्ववेद

पृथ्वी यानि मिट्टी, हवा, नदी, पहाड़, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जंतु इत्यादि। हमारा शरीर इसी भूमि से उत्पन्न अन्न, जल, वायु से बना है। इसीलिए यह हमारी माँ है। भूमि का उत्तम सुपोषण गाय के गोबर से ही होता है।

2. गौ सेवा के लक्ष्य एवं उद्देश्य

घर घर में गाय गाँव में, हर घर में दूध नगरों में

गाँव में 1 गौपालक, 2 गौसेवक, 3 गौभक्त तैयार करना।

नगरों में 1 गौ व्रति, 2 गौ प्रेमी, 3 गौभक्त तैयार करना।

3. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्य योजना

1. गौ पालन एवं गौ संवर्धन

- (1) देशी नस्ल की गाय का पालन-पोषण, रख-रखाव की उचित योजना। (2) गौशाला निर्माण। (3) देशी नंदी का पालन संवर्धन। (4) उचित चारे पानी का प्रबंधन। (5) नंदी, बछड़ों की भी उचित देखभाल, रोगों से रोकथाम। (6) दूध, गोबर, गोमूत्र संग्रह का उचित प्रबंधन।

2. गौ चिकित्सा

- (1) गौ को होने वाले रोगों की पहचान और घरेलू विधि से उपचार। (2) देशी पद्धति से सभी रोगों का रोकथाम। (3) पौधों और घरेलू मसालों से चिकित्सा। (4) होम्योपैथी दवाओं से चिकित्सा।

3. गौ आधारित कृषि

(1) गाय के गोबर से भूमि सुपोषण एवं भूमि उपचार (विविध जीवामृत, विविध प्रकार गोबर खाद, विविध घनजीवामृत आदि प्रकार)। (2) गौ मूत्र से विविध प्रकार के कीट नियंत्रक (नीम पत्ता, अर्क पत्ता, धतुरा, बेल, करंज, तुलसी के पत्ते, लहसुन, मिर्च आदि)। (3) मट्ठा-छाछ से विविध प्रकार के कीट नियंत्रक (नीम पत्ता, वनतुलसी, लहसुन, हरा मिर्च, ताँबा)। (4) पौधों को आवश्यक पोषण तत्वों की जानकारी तथा बनाने के सरल, सहज पद्धति का प्रशिक्षण।

4. छत पर बागवानी

नगरों में अपने छत पर गमलों में साग-सब्जी, फूल उत्पादन करना ताकि दूषित हवा, जहरीले रसायनयुक्त सब्जी, फल-फूल से छुटकारा।

5. गौ ऊर्जा

(1) गाय-बैल के गोबर से गोबर-गैस। (2) बैलों का खेती में उपयोग। (3) बैल चालित ट्रेक्टर के प्रयोग। (4) बैलगाड़ियों का प्रयोग, (अ) माल ढोने के लिए बैलगाड़ी, (ब) सवारी ढोने के लिए बैलगाड़ी, (स) तेल पिरोने, (द) जल निकासी या सिंचाई।

6. पंचगव्य मनुष्य चिकित्सा

जन सामान्य घरेलु औषधियों पंचगव्य (दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र) मनुष्य के आंतरिक और बाह्य रोगों के लिए तक्रासव, तकारिष्ट, मालिश तेल, दर्द निवारक तेल, गोघृत बाम, गोघृत तेल, गोघृत नस्य, पाचन चूर्ण, त्रिफला चूर्ण आदि।

7. पंचगव्य उत्पाद निर्माण

(1) घरेलु उपयोगी वस्तु, गोनाईल, विविध धूपबत्ती, मच्छरबत्ती, बर्तन धोने का साबुन, मुखकान्ति पाउडर, गणेश आदि विविध मूर्तियों, दीपक आदि।
(2) मनुष्य उपयोगी वस्तु मुखकांति चूर्ण, कायाकांति चूर्ण, केशकांति मलहम, विविध साबुन, मालिश तेल, राखियाँ, मालाएँ आदि विविध वस्तुएँ।

8. विपणन (Marketing) पंचगव्य उत्पादों से रोजगार योजना

एक कार्यकर्ता यदि 500 घर-परिवार में प्रतिमाह 1000 रुपये का भी गो उत्पाद के वस्तुओं का विक्रय करें और 20% लाभ कमाए तो वह एक लाख रुपया मासिक आमदनी कर सकता है। इससे उत्पादक और उपभोक्ता को सहज जोड़ा जा सकता है।

9. गो कथा, मठ-मंदिर, गौशाला सम्पर्क

(1) गाय के अपने इतिहास, वैज्ञानिक और शास्त्रयुक्त प्रसंगों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु गो कथाओं का आयोजन श्रद्धा भाव जागरण हो।
(2) प्रत्येक पूर्णिमा में परिवार सहित सामूहिक गो पूजन का आयोजन
(3) अपने घरों में अग्निहोत्र हवन करें।

(4) गोशालाओं में सप्ताह में एक बार जा कर सेवा करें, अपने वर्ग बैठक आदि वहीं करें। मंदिरों में, पर्व त्यौहारों में गो उत्पादों की प्रदर्शनी लगे। मंदिरों में पूजन अर्चन में गोमय वस्तुओं का उचित प्रयोग हो।

10. गो विज्ञान परीक्षा

कक्षा 6 से कॉलेज विद्यार्थियों तक गाय और गो विज्ञान की सरल और सहज जानकारीयाँ ले जाना। अपने प्रांत के गाय-बैल को जानने और पंचगव्य के महत्व को समझाने का माध्यम गोविज्ञान परीक्षा है। बच्चों को अपने संस्कृति और गाय के विविध विषयों की जानकारीयाँ मिले इसीलिए प्रोत्साहन के लिए पारितोषिक दिए जाते हैं।

11. स्वावलंबी सुरभि ग्राम समूह

एक गाँव के 25 परिवारों में गो पालन, कृषि और सभी प्रकार के उत्पादन हो तथा नगर के एक बस्ती में 100 परिवारों को दूध, अन्न एवं गो उत्पाद वस्तुएँ प्राप्त हो। 10 गाँवों का एक संकुल को 10 उपबस्ती के एक संकुल से जोड़कर गाँवों के संस्कृति को नगरों में और नगरों के समृद्धि को गाँवों में ले जाने का उपक्रम है।

12. गो विज्ञान अनुसंधान, प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र

प्रत्येक प्रांत में एक से अधिक अनुसंधान केन्द्र बनाने और गाय से संबंधित सभी प्रकार के अनुसंधान तथा अनुभवी लोगों के द्वारा करने और उन उपलब्धियों को सामान्य गौपालकों तक प्रशिक्षण के द्वारा ले जाने की योजना।

13. गो रक्षा

15. गो अभ्यारण्य

17. प्रभावी प्रयोगशाला

19. स्वावलंबी गोकुल गुरुकुल

21. कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार।

14. गोचर भूमि संरक्षण

16. जेलों में गोशाला

18. स्वावलंबी कामधेनु नगर

20. गो साहित्य और डाटा संग्रह

इसके परिणाम—स्वावलंबी, सुखी, सम्पन्न, भारत

1. रोग मुक्त भारत

3. प्रदूषण मुक्त भारत

5. कुपोषण मुक्त भारत

7. अन्न युक्त भारत

9. रोजगार युक्त भारत।

2. कर्ज मुक्त भारत

4. अपराध मुक्त भारत

6. विष मुक्त भारत

8. ऊर्जा युक्त भारत

गौ विज्ञान परीक्षा क्यों ? किसलिए ? उद्देश्य !

सर्वकामदुधे देवि सर्वतीर्थीभिषेचिनि । पावने सुरभि श्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमोस्तुते ॥

लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता । घृतं वहति यज्ञार्थं मम पापं व्यपोहतु ॥

जिस गौमाता को हम सबसे पूजनीय मानते हैं दुर्भाग्य है कि वह आज सड़कों पर आ गयी है। कोई घर में पालना नहीं चाहता, कोई इसका दूध, दही, घी लेना नहीं चाहता। गाय के दूध के स्थान पर जर्सी और भैंस का दूध पी रहे हैं, शुद्ध घी के नाम पर बटर आयल का उपभोग कर रहे हैं। किसान इसके गोबर, गोमूत्र से कृषि करना नहीं चाहता। बैल का स्थान ट्रैक्टर ने ले लिया है, गोबर खाद का स्थान यूरिया, DAP और पोटाश ने तो गोमूत्र के स्थान पर हम रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कर रहे हैं। परिणाम गाय तो अनुपयोगी होकर सड़कों में आई ही है मगर हम भी समाप्ति की ओर अग्रसित हैं। जर्सी, भैंस के दूध के कारण हमारा शरीर रोगग्रस्त हो गया है। केमिकल वाला घी खाकर हर घर B.P., शुगर, कोलेस्ट्रॉल, हार्ट के मरीज बन रहे हैं। रासायनिक खेती के कारण हर चौथा आदमी कैंसर, किडनी जैसी गंभीर बीमारियों की चपेट में आ रहा है। हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता समाप्त होती जा रही है। उम्र कम होती जा रही है, अकाल और आकस्मिक मृत्यु दर बढ़ती जा रही है।

हमारी शस्य श्यामला भूमि बंजर होती जा रही है। भूजल समाप्त होता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। नए-नए वायरस का संक्रमण तेजी से फैल रहा है। वातावरण में प्रदूषण इस स्तर तक बढ़ गया कि अब साँस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है। अगर ऐसा ही 40-50 वर्षों तक चलता रहा तो सृष्टि में गंभीर संकट खड़ा हो सकता है।

अगर हम इन सभी समस्याओं के समाधान पर जायें तो सिर्फ और सिर्फ गाय ही इसका प्रमुख समाधान है। आज तक कभी हमने गाय की वैज्ञानिकता की ओर ध्यान नहीं दिया। गाय ही हमारा अर्थतंत्र है। गाय का दूध, दही, घी हमारे शरीर की आवश्यकता है। गाय का गोबर ही पृथ्वी का भोजन है। आज जब इसके एक-एक गव्य पर शोध हो रहा है तो सभी वैज्ञानिक तथ्य सामने आ रहे हैं।

वर्तमान पीढ़ी को हमने सिर्फ गाय का धार्मिक पक्ष ही बताया है कभी उसका वैज्ञानिक पक्ष नहीं बताया जिसके कारण ये पीढ़ी गाय से दूर होती जा रही है। इस पीढ़ी को गाय का सम्पूर्ण विज्ञान बताकर उन्हें गोव्रति एवं गौपालक बनाना ही हमारी इस परीक्षा का प्रमुख लक्ष्य है।

जब ये पीढ़ी गाय का महात्म्य समझेगी तो गाय सड़कों पर नहीं अपितु घरों में होगी। गाँव के प्रत्येक घर में गौपालन हो और शहर के प्रत्येक घर में गाय का दूध, दही और घी का उपयोग हो। खेती गो आधारित हो और हमारे घरों में सिर्फ जैविक अनाज का ही उपयोग हो। यदि इतना संकल्प हम सब ले लेते हैं तो न सिर्फ गोरक्षा होगी अपितु हमारे परिवार की भी रक्षा होगी।

गौ विज्ञान परीक्षा में सहभागी होने के लिए धन्यवाद। इस ग्रन्थ को पूरा पढ़कर परिवारजनों, रिश्तेदारों एवं मित्रों को भी पढ़ने अवश्य कहें।

जय गौ माता की

इरन्ना सपारे
प्रांत गौ सेवा संयोजक

सुबोध राठी
प्रांत गौ विज्ञान परीक्षा प्रमुख

निवेदन

भारतीय संस्कृति में वैदिक युग से ही गोधन समृद्धि का मूल आधार रहा है। गौ माता का आध्यात्मिक महत्व है, साथ ही वैज्ञानिक एवं आर्थिक पक्ष भी महत्वपूर्ण हैं। गाय का हमारे सामाजिक जीवन में गहरा संबंध है।

गाय के दूध, दही, मट्ठा, घी, गोबर एवं गोमूत्र का उपयोग आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में सदियों से किया जा रहा है। भारत के सभी प्रांतों में जलवायु एवं परिस्थिति के अनुसार अनेक प्रकार की गाय हैं। गाय और कृषि का अन्योन्याश्रित संबंध है। गौ संरक्षण एवं गौ संवर्धन से संबंधित जानकारी का संग्रह देशभर के विद्वतजनों के माध्यम से हुआ है। प्राप्त संगृहीत जानकारियों को संपादित कर प्रस्तुत किया जा रहा है। उद्देश्य है यह महत्वपूर्ण जानकारियों का संग्रह एक ग्रंथ के रूप में विद्यार्थियों के माध्यम से परिवारों तक पहुँचे।

जिन महानुभावों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उनमें प्रमुख मार्गदर्शक, श्री अजीत महापात्रा जी, श्री शंकरलाल जी, श्री के. ई. राघवन जी, डॉ. वल्लभ भाई कथिरिया, डॉ. हितेश जानी, श्री हेम शर्मा हैं। जिन प्रकाशित सामग्रियों में से कुछ संकलित किया गया उनमें शंकर लाल जी द्वारा संकलित सृष्टि की संरक्षक भारतीय गाय, राघवन जी द्वारा लिखित गौ ग्राम विकास, गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण पत्रिका, आर.सी. पुरोहित द्वारा संकलित सुख-समृद्धि का मार्ग गौ-पालन आदि हैं।

सभी गौ भक्तों, गौ सेवकों का मनःपूर्वक साधुवाद।

संकलनकर्ता-संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	समुद्र मंथन से गाय की उत्पत्ति	1-2
2.	गौमाता में समस्त देवी देवताओं का वास	3-3
3.	गौवंश का पुराणों में महत्व	4-7
4.	भगवान श्रीराम और गाय	8-9
5.	भगवान कृष्ण और गाय	10-11
6.	गौ सेवा की पौराणिक कथाएँ	12-24
7.	भिन्न-भिन्न मत संप्रदाय में गाय का स्थान	25-28
8.	गौमाता हमारी संस्कृति का आधार है	29-30
9.	देश के विभिन्न प्रांतों में पाये जाने वाले देशी गौवंश की प्रजाति	31-33
10.	छत्तीसगढ़ की कोसली गाय	34-36
11.	भारतीय एवं विदेशी नस्ल की गायों में अंतर	37-40
12.	गाय और भैंस में तुलनात्मक अंतर	41-44
13.	गाय के दूध, दही एवं घी की विशिष्टता	45-48
14.	गाय के गौमूत्र की विशिष्टता	49-52
15.	गाय के गोबर की विशिष्टता	53-54
16.	स्वर्णप्राशन क्या है ? क्यों जरूरी है ?	55-57
17.	पंचगव्य का महत्व	58-59
18.	गौसेवा हमारा कर्तव्य	60-62
19.	छत पर बागवानी	63-66
20.	गौ आधारित कृषि	67-75
21.	जैविक खाद, समाधि खाद एवं कीट नियंत्रक का निर्माण	76-84
22.	केचुआँ (किसानों का मित्र)	85-85
23.	पंचगव्य चिकित्सा	86-95
24.	गौ पालन से आर्थिक समृद्धि	96-97
25.	क्यों बन रहा है छत्तीसगढ़ कैसर राज्य ?	98-100
26.	ग्लोबल वार्मिंग रोकने में गाय की भूमिका	101-103
27.	भूजल स्तर गिरावट-कारण, इसे रोकने में गाय की भूमिका	104-106
28.	संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों की पूर्ति के लिए गौ-संस्कृति को आत्मसात करना होगा-इससे आदर्श निर्माण होगा	107-110
	मॉडल-प्रश्नोत्तरी	111-136

परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम- कक्षा 6 से 8 हेतु- अध्याय 1 से 16 तक
 कक्षा 9 से 12 हेतु- अध्याय 1 से 22 तक
 महाविद्यालय स्तर हेतु- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम

1. समुद्र मंथन से गाय की उत्पत्ति

जब असुरों ने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया तो अमृत की खोज के लिए समुद्र मंथन किया गया। जिसे प्राप्त कर देवता अमर हो सके। समुद्र मंथन से चौदह रत्न निकले जिसमें प्रथम कामधेनु की उत्पत्ति हुई। जिसका वर्णन पुराण में किया है।

समुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से जो मातृस्वरूपा पांच गायें उत्पन्न हुई। उनके नाम थे— (1) नंदा (आनंद देने वाली), (2) सुभद्रा (कल्याण करने वाली), (3) सुरभी (मनोकामना पूर्ण करने वाली), (4) सुशीला (दिव्य शक्ति प्रदान करने वाली) (5) बहुला- (कष्टों को दूर करने वाली)।

सृष्टि के आरंभ काल में नन्दी शिवाज्ञानुसार भूतल पर मानवों को ऐसा उपदेश देने के लिए आये कि 'प्रतिदिन अभ्यंग-स्नानादिकर ईश्वरार्चन अवश्य करें और पन्द्रह दिनों में एक बार भोजन करें। किन्तु नन्दी से भूल हो गयी उन्होंने 'प्रतिदिन खाने और पंद्रह दिन में एक बार अभ्यंग करने की बात लोगों को बतायी। नन्दी ने जब लौटकर कैलाश में यह समाचार दिया, तब शिवजी ने महारुद्र होकर उन्हें फटकारा और इस अपराध के प्रायश्चित्त में नन्दी को आज्ञा दी कि तुमको अपनी नंदिनी गौ के साथ भूलोक में अवतार लेना होगा और गो-सन्तति बढ़ाकर खेती-बाड़ी द्वारा मानवों को खिला पिलाकर उनका संरक्षण

करना होगा। उसी समय से नंदिनी अपने नन्दी के साथ भूलोकवासिनी हो गयी।

कथा का तात्पर्य स्पष्ट है **मानवों का पालनपोषण का भार गो सन्तति पर है।** यानि गौ माता का अवतार मानवों के कल्याण निमित्त हुआ है। मूल रहस्य तो यह है कि गो सन्तति विश्व के माता पिता है। इसमें महादेव के प्रतिनिधि नन्दी और महाविष्णु की प्रतिनिधि गौ है। इस तरह शिव और शक्ति ऐक्यरूप से जगत् का संचालन करते हैं।

गाय शब्द में दो अक्षर हैं 'ग' और 'य'। 'ग' अर्थात् गव्य यानि (प्राण शक्ति) 'य' का अर्थ है अग्नि अर्थात् आगे की ओर लेकर चलने वाली प्रवृत्ति। गौ माता अपने अंदर अग्नि और प्राण शक्ति दोनों के सूक्ष्म तत्व को धारण करती है। वेद-अग्नि के सूक्ष्म तत्व एवं प्राणशक्ति के सूक्ष्म तत्व के ज्ञान को वेद कहा गया है। इस पृथ्वी पर गाय ही एक मात्र प्राणी है जो अपने अन्दर अग्नि के सूक्ष्म तत्व को एवं प्राणशक्ति के सूक्ष्म तत्व को विश्व ब्रह्माण्ड की सृजन शक्ति के रूप में धारण करती है इसलिए **गाय ही प्रत्यक्ष वेदमाता विश्वमाता है।**

भगवान् ब्रह्माजी लोकपितामह हैं, अखिल सृष्टि के स्रष्टा हैं। सम्पूर्ण चराचर सृष्टि का सृजन करने के कारण उन्हें पिता से भी ऊपर 'पितामह' की उपाधि प्राप्त है।

ब्रह्माजी के ही एक पुत्र थे प्रजापति दक्ष, जिन्हें बाद में भगवान् शंकर के श्वसुर होने का गौरव प्राप्त हुआ। उन प्रजापति दक्ष को ब्रह्माजी ने आदेश दिया कि 'प्रजाओं की सृष्टि करो', परंतु प्रजापति दक्ष ने सोचा कि प्रजाओं की उत्पत्ति से पहले उनकी आजीविका का प्रबन्ध करना आवश्यक है। अतः मन-ही-मन ऐसा विचार कर उन भगवान् प्रजापति ने प्रजावर्ग की आजीविका के लिये अमृत का पान किया। उस अमृत पान से पूर्ण तृप्त होने पर उनके मुख से सुरभित (मनोहर) गन्ध निकलने लगी। उस गन्ध के साथ ही उनके मुख से एक गौर प्रकट हो गयी। सुरभित गन्ध से प्रकट होने के कारण उस गौ का 'सुरभि'-यह नाम पड़ा। चूँकि सुरभि की उत्पत्ति प्रजापति दक्ष के मुख से हुई थी, इसलिये उसे दक्ष की पुत्री माना गया। इस प्रकार पितामह ब्रह्मा के पुत्र हुए प्रजापति दक्ष और दक्ष की पुत्री हुई गोमाता सुरभि। अतः ब्रह्माजी गोमाता सुरभि के पितामह हुए। उन देवी

सुरभि ने स्वर्ण के समान वर्णवाली बहुत-सी गायों को जन्म दिया।

प्राचीनकाल में गौओं ने श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए एक लाख वर्षों तक कठोर तपस्या की थी, तब ब्रह्माजी ने गौओं को ऋषियों-मुनियों और देवताओं से भी श्रेष्ठ मानते हुए सब लोकों से ऊपर गो लोक में स्थान दिया ब्रह्माजी के वरदान से जगत् में दक्षिणा देने योग्य जितनी भी वस्तुएँ हैं, उन सब में गौएँ सर्वोत्तम मानी जाती हैं। मनुष्य ही नहीं देवता भी पवित्रता की प्राप्ति के लिये गौओं के गोमय का उपयोगकर पवित्र होते हैं।

लोक पितामह भगवान् ब्रह्माजी गो-भक्ति के आदि उपदेशक हैं।

देवराज इन्द्र के पूछने पर पितामह ब्रह्माजी ने गायों को सर्वोच्च लोक गो लोक दिये जाने का कारण बताये हुए कहा कि गायों ने लोभ और कामना का त्यागकर निष्काम भाव से तप किया था, इसीलिये इन्हें तीनों लोकों से ऊपर गो लोक में निवास मिला।

●●

2. गौमाता में समस्त देवी देवताओं का वास

गावो विश्वस्य मातरः अर्थात् गाय चराचर जगत की माता है यानि अखिल विश्व की आधार शक्ति गौ माता ही है। यही कारण है कि केवल गौ की पूजा एवं सेवा से सम्पूर्ण देवी-देवताओं की आराधना हो जाती है। **गौ के शरीर में समस्त देवी देवताओं का वास होता है।** गौ के पैरों में समस्त तीर्थ, गाय के गुह्य भाग में लक्ष्मीजी का वास होता है। जहाँ गौएं रहती हैं उस स्थान को तीर्थभूमि कहा जाता है। गायें समस्त उत्कृष्ट अन्नो के उत्पादन की मूलभूत शक्ति हैं। गायें दर्शन स्पर्शादि से सभी प्राणियों को सर्वथा शुद्ध, निर्मल एवं निष्पाप बना देती हैं। सभी पवित्र वस्तुओं में सर्वाधिक पवित्र गाय है। गायें स्वर्ग प्राप्त करने की प्रत्यक्ष मार्गभूता सोपान हैं। गौओं के रजकण में निरन्तर वृद्धि होने वाली धर्मराशि एवं पुष्टि का निवास है। गौ माता में अखिल विश्व व्याप्त है। भूत व भविष्य की जननी है गोमाता। अथर्ववेद में गौ का विश्वरूप बताया गया है। गौ के विश्वरूप में प्रजापति सींग है, इन्द्र सिर है, अग्नि ललाट है और यम गले की सन्धि है। चन्द्रमा मस्तिष्क, द्युलोक ऊपर का जबड़ा और पृथ्वी नीचे का जबड़ा है। गौ के विश्वरूप में इसका लोक स्वर्ग है। अन्तरिक्ष बल और बृहस्पति

कूबड़ है। मनुष्यों को स्वयं को गौमाता का अंग ही समझना चाहिए उसे यह समझना चाहिए। **गौ पूजनीय, वंदनीय, पालनीय माता है।** जहाँ इन्द्रादि देव रहते हैं वह ही स्वर्ग है गोमाता के देह में इन्द्रादि देव हैं इसलिए गोमाता ही स्वर्ग लोक है। ऐसा मानने वाले लोगों में कभी भी गोवध और गोमांस भक्षण की कल्पना ही नहीं आयेगी।



गौ के ललाट में देवी पार्वती और नाक के मध्य में कार्तिकेय का निवास है।

सुरभी गाय के दाहिनी आंख में सूर्य और बायीं आंख में चन्द्रमा का निवास है।

भविष्य पुराण के अनुसार गोमूत्र में साक्षात् गंगा और गोमय में यमुना स्थित है।

●●

3. 'गौवंश का पुराणों में महत्व'

भारतीय संस्कृति में गौ की महत्ता व विशिष्ट स्थान का उल्लेख हमारे वेदों, पुराणों तथा धर्मशास्त्रों में स्थान-स्थान पर देखने को मिलता है। ऋग्वेद 8.35.18 में कहा गया है। “**धेनुः जिन्वत उत जिन्वत विशः हतं रक्षासि से धंत अभीदाः** अर्थात् हे अश्विनीनीकुमारों, गायों को बलवती करो, जनता को बलवती करो। हानियों को नष्ट करो, रोगों को बाहर करो।” अथर्ववेद में कहा है—‘**धेनुः सवनं रयीणसाम्**’ अर्थात् गाय संपत्ति का भण्डार है। यजुर्वेद में कहा गया है—गौ अनुपनेय है। गौ माता धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने में प्रातः स्मरणीय वन्दनीय है। पुराणों के अनुसार, इस विश्व में सर्वप्रथम वेद, अग्नि और गाय का अवतरण हुआ। गाय के विश्व रूप का वर्णन अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्रह्माण्डपुराण, स्कन्दपुराण, भविष्य पुराण, अग्नि पुराण, स्मृतियों में, महाभारत, रामायण तथा गीता में देखने को मिलता है। वेदों में लिखा है “एतद् वैविश्व रूपम् सर्वरूपम् गौ रूपम्।”

भारतीय संस्कृति का आधार ही गौ है। एक समय था जब भारत देश सोने की चिड़िया कहलाता था। यहाँ घी, दूध की नदियाँ बहती थी। ऋग्वेद के 58वें मण्डल के चौथे सूक्त में

ऋषि वामदेव गौतम कहते हैं कि जो वस्तुएँ देवता समान पूज्यनीय हैं उनमें अग्नि, सूर्य, जल और गाय है।

स्कन्द पुराण ब्रह्म धर्मरत्न 1018 के अनुसार, “**गौमाता समस्त देवों की जननी है।** गौमाता यज्ञ की कारण रूपा है, सभी तीर्थों की महातीर्थ है जिन्हें सदैव नमस्कार है।” स्कन्द पुराण में एक प्रसंग में ऋषि आपस्तम्ब ने राजा नाभाग को गाय को अमूल्यरत्न का रूप देते हुए बताया है कि “**गौ सदैव सबके लिए वन्दनीय है।**” स्वयं ब्रह्माजी ने इनको दिव्य गुणों से सुशोभित किया है। **इनके गोबर से देवताओं के मंदिर व मनुष्यों के गृह शुद्ध होते हैं।** गौ दुग्ध, घी, दही, गोबर व गौ मूत्र पवित्र होता है तथा समस्त जगत को पवित्र करती है। समस्त जगत के लिए गाय पूज्यनीय है तथा सदैव विष्णु पद में स्थित रहती है।

प्राचीन काल में गौ ही प्रधान धन समझी जाती थी। उस गौ की रक्षा के लिए पहले-पहल गोत्र, गौशाला की सृष्टि हुई। जैसा कि ऋग्वेद में आता है— “**त्वां गोत्रमऽग्निं रोम्यः अवृणोः**” गोत्रपति के नाम से ही गोत्र चलता था। इसलिए वशिष्ठ-भारद्वाज, कश्यप आदि गोत्रों की सृष्टि हुई जो अब वंश परिचय का प्रधान निशान है।

गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री अदिति पुत्रों की बहन और कृत रूप अमृत का खजाना है। अपने माता-पिता की भाँति श्रद्धापूर्वक गायों का पालन करना चाहिए। दुर्दिन और विप्लव के समय पर गायों को घास और शीतल जल मिलता रहे इस बात का प्रबन्ध करते रहना चाहिए। (ब्रह्मपुराण)

पदमपुराण (सृष्टि 48/145-146) के अनुसार गायों की एक मात्र परिक्रमा करने से मनुष्य सारे पापों से छूटकर अक्षय स्वर्ग को प्राप्त करता है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार, आत्मा से भी अधिक गाय की रक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

विष्णु स्मृति में कहा गया है—

गावः पवित्रं मांगलयं गोषु लोका प्रतिष्ठिताः ।

गावों वितन्वते यज्ञ गावः पर्वाधसूदना ।।

अर्थात् गाय पवित्र मंगलकारक होती है, इनमें समस्त लोक प्रतिष्ठित है। गाय यज्ञ का विस्तार करती है व समस्त पापों का विनाश करती है। विष्णु पुराण के तृतीय खण्ड में कहा गया है—

गोमये तु सदा लक्ष्मीः स्वयमेव व्यवस्थिता,
गो मूत्रे च तथा गंगा दधि क्षीर धृतेषु च
सदा व्यवस्थित सोम रोचनायाम् सरस्वती ।।

अर्थात् गौमाता के गोबर में साक्षात् लक्ष्मी, गौ मूत्र में गंगाजी, दूध, दही और घी में सोम तथा गोरोचन में भगवती सरस्वती विराजमान है।

पुण्य एवं स्व-कल्याण चाहने वाले गृहस्थों को गौ सेवा करनी चाहिए क्योंकि गौ सेवा में लगे हुए पुरुषों की शीघ्र ही सम्पत्ति वृद्धि होती है। गौ सेवा से धन, सम्पत्ति, आरोग्य आदि मनुष्य जीवन को सुखकर बनाने वाले सम्पूर्ण साधन सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। जिस गृह में गौ पाली जाती है। उस घर में अनेक प्रकार के स्वाभाविक ही लाभ होते रहते हैं।

गाय मनुष्यों की बंधु है और जिस घर में गाय नहीं वह घर बंधु शून्य है।

—(पदम पुराण सृष्टि 50/165-166)

जो प्रतिदिन गौ का स्पर्श करता है वह प्रतिदिन तीर्थजल में स्नान करने का फल पाता है।

—अग्निपुराण

“महाभारत काल में गाय का स्थान”—

पाण्डु पुत्रों में सहदेव गौ वैज्ञानिक थे जो इन्द्रप्रस्थ की चालीस कोस की परिधि में पलने वाली गायों के बारे में बता देते थे कि किस गाय का दूध पीने से लाभ होगा और किसका गौमूत्र सूँघने से बन्ध्या स्त्री गर्भवती होगी (महाभारत)। महाभारत युद्ध में 18 अक्षोहिणी सेना अर्थात् 53,18,840 योद्धा काम आये। उनकी विधवाओं, अनाथ बच्चों तथा अशक्त माता-पिता का सहारा गौधन बना।

महाभारत के अनुच्छेद 8 में कहा गया है—
पुत्रार्थी लेभते पुत्रं, कन्यार्थी तामवाप्नुयात्
धनार्थी लभते वित्तं, धर्मार्थी धर्ममानुयात्।
विद्यार्थी चाप्यादू विद्यां, सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम्
न किञ्चित् दुर्लभं चैत्र गवां भक्तस्य भारत ॥

अर्थात् पुत्रार्थी को पुत्र मिलता है। महाराज दिलीप को रघु और महाराज ऋतंभर को सत्यवान जैसे श्रेष्ठ पुत्र गौ सेवा से ही मिले। गौ सेवा से कन्यार्थी को कन्या, धनार्थी को धन, धर्मार्थी को धर्म, विद्यार्थी को विद्या और सुखार्थी को सुख मिलता है। गौ भक्त के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

भारतीय संस्कृति के चार स्तंभ हैं। पहला स्तंभ गाय को बताया गया है। गाय के मूत्र में दूसरा स्तंभ गंगा का निवास है। तीसरा स्तंभ गायत्री है। महाभारत में यज्ञों का फल गौमाता ही बताई गई है।

गायों का विकास ब्रज में हुआ। ब्रज का विस्तार गायों ने किया। जहाँ 10 हजार गाय हुई उसे ब्रज की संज्ञा मिली। पोलासपुर के शकडाल के पास एक ब्रज, वाणिज्य ग्राम के आनन्द के पास चार ब्रज, श्रावस्ती के सालिहिपिता के पास चार ब्रज थे। चम्पानगरी का कामदेव, वाराणसी का सुरादेव, अमालिका का चुललशतक, कपिलकपुर का कुण्डकोशिक छः-छः ब्रजों का स्वामी था। काशी वासी महाशतक ने 8 ब्रज खड़े किये थे। महाभारत

काल में महाराज नृग ने 1 करोड़ गाय दान में दी। राजा विराट के पास उत्तम जाति की 1 लाख गाय तथा महाराज नन्द के पास 9 लाख गाय थी।

गौ को अध्व्या कहा गया है क्योंकि यह प्रजाओं को भाग्यवान व धनवान बनाती है। महाभारत में कहा गया है कि गायों के दूध से बढ़कर कोई पदार्थ नहीं। योगीश्वर भगवान कृष्ण ने 13 हजार 84 गाय प्रतिदिन दान करने का नियम बना लिया था।

युधिष्ठिर के पास गाय के 10 हजार वर्ग थे तथा प्रत्येक वर्ग में 8-8 लाख गाय थी। लाख-दो-लाख गाय के और भी वर्ग थे। कृष्ण ने गाण्डीवधारी अर्जुन को महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा कि निर्भय होकर गौ जिस भूमि पर श्वांस लेती है, वह परम शोभामयी है वहाँ से पाप पलायित हो जाता है।

ऋग्वेद में कहा गया कि जिस स्थान पर गाय सुखपूर्वक रह सके वहाँ की रजत पवित्र हो जाती है। वह स्थान तीर्थ बन जाता है। अग्निपुराण में कहा है गौ पवित्र और मंगल दायिनी है। महाभारत में 18 लाख अक्षोहिणी सेना के विनाश का पाप नष्ट करने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने महाराज युधिष्ठिर को गोवत्स द्वादशी व्रत रखने की सलाह दी थी। वैदिक काल में गाय दिन में तीन बार दुही जाती थी।

भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में कृषि के साथ गौ सेवा जारी रखी है 'कृषि गो रक्ष्य वाणिज्यम् ।'

प्राचीन युग में गाय का महत्व

सायणाचार्य ने ऋग्वेद की व्याख्या की है। अपने भाष्य में उन्होंने वर्णन करते हुए कहा है कि सृष्टि के आदि में मनुष्य और गाय दोनों आये थे। दोनों मौन थे। पहले गाय ने बोलना शुरू किया तथा उसके सहारे से मनुष्य ने मुँह खोला अतः गायों से मनुष्य को बोली मिली।

राजा विराट के पास उत्तम जाति की एक लाख गाय थी। **महाराज नन्द के पास नौ लाख गाय थी।** महाराज नृग द्वारा एक करोड़ गाय ब्राह्मणों को दान में दी गई थी।

महर्षि वशिष्ठ की शबला नामक कामधेनु की महत्ता सभी को मालूम है। एक दिन महाराज विश्वामित्र अपनी विशाल सेना के साथ महर्षि वशिष्ठ के आश्रम पर ठहरे। शबला की कृपा से तथा उसके दूध से सारी सेना ने संतुष्ट होकर भोजन किया। गाय की महिमा

से प्रसन्न होकर विश्वामित्रजी ने शबला की माँग ऋषि से कर डाली तब वशिष्ठ जी द्वारा अस्वीकार करने पर युद्ध हुआ। गौ की कृपा से वशिष्ठ ऋषि ने महाराज विश्वामित्र को परास्त कर दिया। महाराज जनक ने एक हजार गायों का दान याज्ञवल्क्य को पुरोहित बनाकर किया था। इक्ष्वाकु के पौत्र ने बैल के कुकुद पर चढ़कर युद्ध किया इसलिए रामजी के वंश का नाम काकुत्स्थ पड़ा। धन की देवी लक्ष्मी पहले पहल पृथ्वी पर गायों के रूप में आयी, उन्होंने जो गोबर त्यागा, उससे बिल्व वृक्ष की उत्पत्ति हुई।

शोणितपुर (वर्तमान में नेपाल) के राजा बाणासुर शंकर जी के महान भक्त थे। एक बार महादेव जी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने गोकुल में से वशिष्ठ जाति की 12 गाय ऐसी दी जिनको पाकर बाणासुर अत्यंत प्रतापी और शक्तिशाली हुए।

हिन्दुओं का विश्वास है कि गौ लोक सभी लोकों के ऊपर, सबसे पवित्र और सर्वोत्तम है।



4. “भगवान श्रीराम और गाय”

भगवान श्रीराम के लीला प्रसंगों का अनुशीलन करने पर उनके उपकरणों में गौ की विशेषता के दर्शन होते हैं।

महाराज दशरथ ने पुत्र कामेष्ठी यज्ञ के समय दस लाख गौएं दान की थी।

वर्णन मिलता है कि राजा दशरथ के यज्ञ में अग्निदेव स्वर्णपात्र में खीर लेकर प्रकट हुए थे। उस खीर को राजा दशरथ की तीनों रानियों को खिलाया गया। परिणामस्वरूप भगवान राम भाइयों सहित अवतरित हुए। यह भी हमने शास्त्रों से जाना है कि जब शिशु श्रीराम की माताओं को बालकों को नजर लग जाने की शंका होती थी तो उसके निवारण के लिए श्रीराम को गाय के घी से तोलकर घी का तुलादान किया करती थीं।

मानस की चौपाई में वर्णन मिलता है—
“भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाई”। इसका भावार्थ है श्रीराम भोजन करते करते अवसर पाकर मुख में दही-भात लपेटे भाग जाते थे।

भगवान श्रीराम के विवाह के अवसर पर राजा जनक ने महाराज दशरथ से अनुरोध किया था कि राजन, श्रीराम-लक्ष्मण से पहले गौदान करवाइये, बाद में विवाह कार्य सम्पन्न होंगे।

राजा जनक के अनुरोध पर महाराज दशरथ ने श्रीराम लक्ष्मण के हाथों स्वर्ण मंडित सींगों वाली चार लाख गायें कांसे के दोहन पात्र के साथ ब्राह्मणों को दान करवाई।

विश्वामित्र जी ने श्रीराम को भयंकर यक्षी ताड़का का वध करने के लिए कहा था। रावण का गौओं के प्रति शत्रुभाव था, रावण के अनुचर जिस नगर गांव और पुर में गौ-ब्रह्मणों को देखते वहां आग लगा देते थे।

मानस के अनुसार श्री राम ने विप्र, धेनु, सुर, सन्त हितार्थ अवतार लिया था। लंका में युद्ध करने का श्रीराम का एक और हेतु था। गौघाती आतताई असुरों का विनाश करना। रामराज्य में गौएं पूज्या थीं। उनकी सेवा राजधर्म था। श्रीराम सोकर उठते ही माता पिता के साथ कामधेनु का स्मरण करते थे।

सीता जी नित्य ही कामधेनु की पूजा करती थी उसे पकवान खिलाती थी।

भगवान श्रीराम का अवतार यज्ञ की रक्षा के लिए हुआ था। रावण के द्वारा यज्ञ पर आक्रमण किया जाता था। भगवान राम का जन्म पुत्रेष्ट यज्ञ के द्वारा यज्ञों की रक्षा के लिए सूर्यवंशी कुल में हुआ। अग्नि देव उनके कुल देवता थे अतः वे अग्नि के उपासक थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बताया है कि गौद्विज हितकारी प्रभु मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रकट होने के प्रमुख कारणों में एक गौ हित भी था। आध्यात्म रामायण के अनुसार श्री राम का बाल्य जीवन गौ और गौ वत्सों के संसर्ग में बीता। भगवान राम ने दस सहस्र करोड़ों गायों का दान दिया था। वाल्मिकी

रामायण के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने वन जाने के पूर्व एक ब्राह्मण को एक गौशाला ही दान कर दी थी।

भगवान श्रीराम के वनवास के समय चौदह वर्ष तक भरत जी अन्न के साथ गौ मूत्र का सेवन करते रहे जिससे वे स्वस्थ रहकर आध्यात्मिक उन्नति करते रहे।

●●

5. भगवान कृष्ण और गाय

भगवान कृष्ण ने यदुकुल में जन्म लिया क्योंकि गायों की रक्षा करनी थी। गौ माता उनकी कुलदेवता थी। कंस गायों की हत्या करवाता था। कंस यमुना जी के जल में कालिया नाग के द्वारा जहर घोलकर गायों को मरवाता था। इसलिए भगवान श्री कृष्ण ने कंस का वध करके गायों की रक्षा की। गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर धारण कर गौमाता को पुनः धर्म से प्रतिष्ठित किया।

भगवान श्रीकृष्ण ने कंस के अत्याचार से ब्रजवासियों को मुक्ति दिलाने के लिए गोकुल के ग्वालबाल जो निर्लोभि निर्भय और निष्कपट थे उनका संगठन तैयार किया। उन्हें खेल-खेल में कंस के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए शिक्षित, प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया।

गोपियों की मटकी फोड़ना एवं माखनचोरी लीला के द्वारा समस्त गोकुलवासियों को कंस के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए मजबूर किया।

इस तरह भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा गौचारण लीला ग्वाल-बाल को मेधावी-बलवान और स्वावलम्बी एवं संघर्षशील बनाने का एक सशक्त आन्दोलन था।

माता यशोदा बालकृष्ण के भाल पर गोरोचन का तिलक लगाती थीं।

बालकृष्ण बछड़े की पूंछ पकड़ साथ-साथ दौड़ते थे। श्यामसुन्दर बालकृष्ण चुपचाप जाते और एक-एक कर सभी बछड़ों को खोल देते और प्रसन्न होते थे क्योंकि बछड़ों को अपनी-अपनी माँ के थनों से दूध पीने मिलता था।

“बाबा मोहि दूहन सिखावो” इस पंक्ति में श्यामसुन्दर नंदबाबा से कह रहे हैं मुझे गाय दुहना सिखाओ।

यशोदा नंदन गो दोहन कला में अत्यन्त कुशल हो गए ब्रजवनिताएँ गौ दुहाने के लिए उन्हें घर लेकर जाती थी क्योंकि न दुहाने वाली गाय भी यशोदानंदन के दूहने पर दूध दे देती थी।

“मैया मैं गाय चरावन जैहों” में नंदनंदन अपनी माँ से गाय चराने जाने की जिद करते हैं।

कृष्ण गौओं के पालक थे, इसलिए गोपाल कहलाये।

माखनचोरी अर्थात् गौ गरीब और नारी के प्रति समाज में ममत्व का भाव पैदा करना। गौ सेवा से आम लोगों का लगाव पैदा करना। गाय का दूध, दही, घी सेवन करने के लिए समाज को प्रेरित करना। समाज को सात्विक गुणों से युक्त शक्तिशाली और बलवान बनाना। गौ और धर्म रक्षा के लिए लोगों को



प्रेरित करना मुख्य उद्देश्य था। भगवान श्री कृष्ण के द्वारा गाय और गोवर्धन की पूजा की और समाज को प्रेरित किया गया जिनकी कृपा से समस्त गोकुलवासी सुखी और समृद्ध हुए थे।

उपनिषद् रूपी गायों का दोहन कर गीतामृत पान कराने वाले गोपाल कृष्ण ने

हलधर (बलदेव) की अगुवाई में बिना कृषि-गौपालन किए मौज-मस्ती करने वालों का शासन पलटा। भगवान कृष्ण के समय जिन्होंने गौपालन में कीर्तिमान स्थापित किया उनमें उपनन्द, नन्द, वृषभानु, वृषभानुज और नन्दराज थे। उपनन्द के पास पाँच लाख, नन्द के पास नौ लाख, वृषभानु के पास दस लाख, वृषभानुज के पास पचास लाख तथा नन्द राज के पास एक करोड़ गाय थी।

भक्त कवि छीतस्वामी की रचना में उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण और गाय पर प्रकाश डाला है—

आगे गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय,
गोविंद को गायन में बसबोड़ भावे।
गायन के संग धावें, गायन में सचु पावें,
गायन की खुर रज अंग लपटावे॥
गायन सो ब्रज छायो, बैकुंठ बिसरायो,
गायन के हेत गिरि कर ले उठावे।
‘छीतस्वामी’ गिरिधारी, विट्ठलेश वपुधारी,
ग्वारिया को भेष धरें गायन में आवे॥

●●

6. “गौ सेवा की पौराणिक कथाएँ”

1. जबालापुत्र सत्यकाम को गोसेवा से ब्रह्मज्ञान

एक सदाचारिणी ब्राह्मणी थी, उसका नाम जबाला था। उसका एक पुत्र था **सत्यकाम**। जब वह विद्याध्ययन करने योग्य हुआ, तब एक दिन अपनी माता से कहने लगा- माँ ! मैं गुरुकुल में निवास करना चाहता हूँ, गुरुजी जब मुझे नाम और गोत्र पूछेंगे तो मैं अपना कौन गोत्र बतलाऊँगा? इस पर उसने कहा कि पुत्र ! मुझे तेरे पिता से गोत्र पूछने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ, क्योंकि उन दिनों मैं सदा अतिथियों की सेवा में ही व्यस्त रहती थी। अतएव जब आचार्य तुमसे गोत्रादि पूछें, तब तुम इतना ही कह देना कि मैं, ‘जबाला’ का पुत्र ‘सत्यकाम’ हूँ। माता की आज्ञा लेकर सत्यकाम **हरिदुमत गौतमऋषि** के यहाँ गया और बोला- ‘मैं श्रीमान के यहाँ ब्रह्मचर्यपूर्वक सेवा करने आया हूँ।’ आचार्य ने पूछा ‘वत्स ! तुम्हारा गोत्र क्या है?’

सत्यकाम ने कहा- ‘भगवन् ! मेरा गोत्र क्या है, इसे मैं नहीं जानता। मैं ‘सत्यकाम जाबाल’ हूँ, बस इतना ही इस संबंध में जानता हूँ।’ इस पर गौतम ने कहा- ‘वत्स ! ब्राह्मण को छोड़कर दूसरा कोई भी इस प्रकार सरल भाव से सच्ची बात नहीं कह सकता। जा, थोड़ी समिधा ले आ। मैं तेरा उपनयन-संस्कार करूँगा।’

सत्यकाम का उपनयन करके चार सौ दुर्बल गायों को उसके सामने लाकर गौतम ऋषि ने कहा- ‘तू इन्हें वन में चराने ले जा। जब तक इनकी संख्या एक हजार न हो जाय, इन्हें वापस न लाना।’ उसने कहा- ‘भगवन् ! इनकी संख्या एक हजार हुए बिना मैं न लौटूँगा।’

सत्यकाम गायों को लेकर वन में गया। वहाँ वह कुटिया बनाकर रहने लगा और तन-मन से गौओं की सेवा करने लगा। धीरे-धीरे गायों की संख्या पूरी एक हजार हो गयी। तब एक दिन एक वृषभ (साँड़) ने सत्यकाम के पास आकर कहा- ‘वत्स ! हमारी संख्या एक हजार हो गयी है, अब तू हमें आचार्य कुल में पहुँचा दे। साथ ही ब्रह्मतत्त्व के संबंध में तुझे एक चरण का मैं उपदेश देता हूँ। वह ब्रह्म ‘प्रकाशस्वरूप’ है, इसका दूसरा चरण तुझे अग्नि बतलायेंगे।’

सत्यकाम गौओं को हाँककर आगे चला। संध्या होने पर उसने गायों को रोक दिया और उन्हें जल पिलाकर वहीं रात्रि निवास की व्यवस्था की। तत्पश्चात् काष्ठ लाकर उसने अग्नि जलाई। अग्नि ने कहा- “सत्यकाम ! मैं तुझे ब्रह्मा का द्वितीय पाद बतलाता हूँ वह ‘अनन्त’ लक्षणात्मक है, अगला उपदेश तुझे हंस करेगा।”

अगले दिन सायंकाल सत्यकाम पुनः किसी सुंदर जलाशय के किनारे ठहर गया और उसने गौओं के रात्रि निवास की व्यवस्था की। इतने में ही एक हंस ऊपर से उड़ता हुआ आया और सत्यकाम के पास बैठकर बोला—‘सत्यकाम !’ सत्यकाम ने कहा—‘भगवन् ! क्या आज्ञा है ?’ हंस ने कहा—‘‘मैं तुझे ब्रह्म के तृतीय पाद का उपदेश कर रहा हूँ, वह ‘ज्योतिष्मान्’ है, चतुर्थ पाद का उपदेश तुझे मुद्ग (जलकुक्कुट) करेगा।’’

अगले दिन सायंकाल सत्यकाम ने एक वट वृक्ष के नीचे गौओं के रात्रि निवास की व्यवस्था की। अग्नि जलाकर वह बैठ ही रहा था कि एक जलमुर्ग ने आकर पुकारा और कहा ‘‘वत्स ! मैं तुझे ब्रह्म के चतुर्थ पाद का उपदेश करता हूँ, वह ‘आयतन स्वरूप’ है।’’

इस प्रकार उन-उन देवताओं से सच्चिदानन्द घन लक्षण परमात्मा का बोध प्राप्त कर एक सहस्र गौओं को लेकर सत्यकाम आचार्य गौतम ऋषि के यहाँ पहुँचा। आचार्य ने उसकी चिन्ता रहित, तेजपूर्ण दिव्य मुख कान्ति को देखकर कहा—‘‘वत्स ! तू ब्रह्मज्ञानी के सदृश दिखलायी पड़ता है।’’ सत्यकाम ने कहा—‘‘भगवन् ! मुझे मनुष्यतरों से विद्या मिली है। मैंने सुना है कि आपके सदृश आचार्य के द्वारा प्राप्त हुई विद्या ही श्रेष्ठ होती है, अतएव मुझे आप ही पूर्ण रूप से उपदेश कीजिए।’’ आचार्य बड़े प्रसन्न हुए और बोले—‘‘वत्स ! तूने जो प्राप्त किया है, वही ब्रह्मतत्त्व है।’’ तदनन्तर आचार्य ने उस सम्पूर्ण तत्त्व का पुनः ठीक उसी प्रकार उपदेश किया। (छान्दोग्य 4.4-9)

2. गौ संरक्षक सम्राट दिलीप का गौ प्रेम

महाराज दिलीप और देवराज इन्द्र में मित्रता थी। देवराज के बुलाने पर दिलीप एक बार स्वर्ग गये। वहाँ से लौटते समय मार्ग में कामधेनु मिली किन्तु दिलीप ने पृथ्वी पर आने की आतुरता के कारण उसे देखा नहीं। कामधेनु को उन्होंने प्रणाम नहीं किया। इस अपमान से रुष्ट होकर कामधेनु ने शाप दिया— ‘‘मेरी संतान यदि कृपा न करे तो यह पुत्रहीन ही रहेगा।’’

महाराज दिलीप को शाप का कुछ पता नहीं था किन्तु उनके कोई पुत्र न होने से वे स्वयं, महारानी तथा प्रजा के लोग भी चिन्तित एवं दुःखी रहते थे। पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से महाराज रानी के साथ कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ के आश्रम पर पहुँचे। महर्षि ने उनकी प्रार्थना सुनकर आदेश दिया—‘‘कुछ काल आश्रम में रहो और मेरी कामधेनु नन्दिनी की सेवा करो।’’

महाराज ने गुरु की आज्ञा स्वीकार कर ली। महारानी सुदक्षिणा प्रातःकाल उस गौ की भली-भाँति पूजा करती थीं। आरती उतारकर नन्दिनी को पति के संरक्षण में वन में चरने के लिए बिदा करती। सम्राट दिन भर छाया की भाँति उसका अनुगमन करते, उसके ठहरने पर ठहरते, चलने पर चलते, बैठने पर बैठते और जल पीने पर जल पीते। संध्या काल में जब सम्राट के आगे-आगे सद्यः प्रसूता, बालवत्सा (छोटे दुध मुँह बछड़े वाली) नन्दिनी आश्रम को लौटती तो सम्राज्ञी देवी

सुदक्षिणा हाथ में अक्षत-पात्र लेकर उसकी प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करती और अक्षतादि से पुत्र प्राप्ति रूप अभीष्ट-सिद्धि देने वाली उस नन्दिनी का विधिवत् पूजन करती। बछड़े को यथेष्ट पयः पान परिचर्या करते, अपने हाथों से कोमल हरित शष्प-कवल खिलाकर उसकी परितृप्ति करते और उसके विश्राम करने पर शयन करते। इस तरह उसकी परिचर्या करते इक्कीस दिन बीत गये।

एक दिन वन में नन्दिनी का अनुगमन करते महाराज दिलीप की दृष्टि क्षणभर अरण्य की प्राकृतिक सुषमा में अटक गयी कि तभी उन्हें नन्दिनी का आर्तनाद सुनायी दिया। वह एक भयानक सिंह के पंजों में फँसी छटपटा रही थी। उन्होंने आक्रामक सिंह को मारने के लिए अपने तरकश से तीर निकालना चाहा, किन्तु उनका हाथ जडवत् निश्चेष्ट होकर वहीं अटक गया, वे खड़े रह गये, भीतर-ही-भीतर छटपटाने लगे।

किन्तु परदुःखकातर दिलीप भय और व्यथा से छटपटाती, नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहाती नन्दिनी को देखकर और उस संध्याकाल में अपनी माँ की उत्कण्ठा से प्रतीक्षा करने वाले उसके दुध मुँहे बछड़े का स्मरण कर करुणा-विगलित हो उठे। नन्दिनी का मातृत्व उन्हें अपने जीवनसे कहीं अधिक मूल्यवान जान पड़ा और उन्होंने सिंह से प्रार्थना की कि वह उनके शरीर को खाकर अपनी भूख मिटा ले और बालवत

नन्दिनी को छोड़ दे—

सिंह ने राजा के इस अद्भुत प्रस्ताव का उपहास करते हुए कहा—‘राजन् ! तुम चक्रवर्ती सम्राट हो। गुरु के नन्दिनी के बदले करोड़ों दुधार गौएँ देकर प्रसन्न कर सकते हो। इस तुच्छ प्राणी के लिए अपने स्वस्थ-सुंदर शरीर और यौवन की अवहेलना कर जान की बाजी लगाने वाले सम्राट ! लगता है तुम अपना विवेक खो बैठे हो’—

भगवान् शंकर के अनुचर सिंह की बात सुनकर अत्यंत दयालु महाराज दिलीप ने उसके द्वारा आक्रान्त नन्दिनी को देखा जो अश्रुपूरित कातर नेत्रों से उनकी ओर देखती हुई प्राण रक्षा की याचना कर रही थी।

राजा ने क्षत्रियत्व के महत्व को प्रतिपादित करते हुए उत्तर दिया—“नहीं सिंह ! नहीं, मैं इसे तुम्हारा भक्ष्य बनाकर नहीं लौट सकता। मैं अपने क्षत्रियत्व को क्यों कलंकित करूँ?” क्षत्रिय संसार में इसलिए प्रसिद्ध हैं कि वे ‘क्षत’—विनाश या विपत्ति से औरों की रक्षा करते हैं। राज्य का भोग उनका लक्ष्य नहीं। उनका लक्ष्य तो है लोक रक्षा से कीर्ति अर्जित करना। निन्दा से मलिन प्राणों और राज्य को तो वे तुच्छ वस्तुओं की तरह त्याग देते हैं,

इसलिए तुम मेरे यशः शरीर पर दयालु होओ। मेरे भौतिक शरीर को खाकर उसकी रक्षा करो, क्योंकि यह शरीर तो नश्वर है।

सिंह के स्वीकृति दे देने पर राजर्षि दिलीप ने शस्त्रों को फेंक दिया और उसके आगे अपना शरीर मांस पिण्ड की तरह खाने के लिए डाल दिया और वे उसके आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगे, तभी आकाश से विद्याधर उन पर पुष्प वृष्टि करने लगे। नन्दिनी ने कहा—‘हे पुत्र ! उठो !’ यह मधुर दिव्य वाणी सुनकर राजा को महान् आश्चर्य हुआ और उन्होंने **वात्सल्यमयी जननी** की तरह अपने स्तनों से दूध बहाती हुई नन्दिनी गौ को देखा, किन्तु सिंह दिखलायी नहीं दिया। आश्चर्य चकित दिलीप से नन्दिनी ने कहा—“हे सत्पुरुष ! तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए मैंने ही माया से सिंह की सृष्टि की थी। महर्षि वशिष्ठ के प्रभाव से यमराज भी मुझ पर प्रहार नहीं कर सकता तो अन्य हिंसक सिंहादि की क्या शक्ति है। मैं तुम्हारी गुरु भक्ति से और मेरे प्रति प्रदर्शित दयाभाव से अत्यंत प्रसन्न हूँ। वर माँगो ! तुम मुझे दूध देने वाली मामूली गाय मत समझो, अपितु सम्पूर्ण कामनाएँ पूरी करने वाली कामधेनु जानो।” राजा ने दोनों हाथ जोड़कर वंश चलाने वाले अनन्त कीर्ति पुत्र की याचना की।

नन्दिनीने ‘तथास्तु’ कहकर उन्हें पत्ते के दोने में अपना दूध दुहकर पी लेने की आज्ञा दी।

राजा ने निवेदन किया—“माँ ! बछड़े के पीने तथा होमादि अनुष्ठान के बाद बचे हुए ही तुम्हारे दूध को मैं पी सकता हूँ।”

राजा के धैर्य ने नन्दिनी के हृदय को जीत लिया। वह प्रसन्नमना धेनु राजा के आगे-आगे आश्रम को लौट आयी। राजा ने बछड़े के पीने तथा अग्निहोत्र से बचे दूध का महर्षि की आज्ञा पाकर पान किया, फलतः वे रघु जैसे महान् यशस्वी पुत्र से पुत्रवान् हुए और उनकी **गोभक्ति तथा गोसेवा** सभी के लिए एक महानतम आदर्श बन गयी। इसलिए आज भी गोभक्तों की परिगणना में महाराज दिलीप का नाम बड़े ही श्रद्धा भाव एवं आदर से सर्वप्रथम लिया जाता है।

3. राजा विराट की गो सम्पदा और पाण्डु

पुत्र सहदेव की गो-चर्या

गौ भारत की राष्ट्रीय समृद्धि और सम्पदा की विशिष्ट प्रतीक रही है। तपोवन-संस्कृति की यह महत्वपूर्ण अङ्ग थी। गृहस्थों की ही नहीं आश्रम में रहने वाले ऋषियों की समृद्धि का परिचय भी उनके यहाँ रहने वाली गौओं की संख्या से मिलता है। उपनिषद्‌ों में ऐसी अनेक कथाएँ हैं, जिनमें राजा शास्त्रार्थ में विजयी ऋषियों को अनेक सोने से मढ़ी सींगों वाली गाय देने की घोषणा करते थे। महाभारत

में मत्स्य देश के राजा विराट के गोहरण की कथा में इसका ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है कि गो सम्पदा को कितना महत्व दिया जाता था तथा राजाओं के यहाँ उनके रक्षण की व्यवस्था क्या थी।

राजा विराट का मत्स्यदेश अपनी विशाल गोसम्पदा के लिए प्रसिद्ध था। यह सम्पदा इतनी विशाल थी कि दूसरे राष्ट्रों की आँख इस पर लगी रहती थी। द्रोपदी सहित पाँचों पाण्डव अपने वनवास के 13वें वर्ष में छद्म-वेष में राजा विराट के यहाँ रह रहे थे। इधर दुर्योधन अपने गुप्तचरों द्वारा चारों ओर उनकी खोज करवा रहा था। इसी क्रम में दुर्योधन ने राजा विराट के यहाँ भी गुप्तचरों को भेजा और राजा विराट के गोधन का अपहरण करने की योजना बनायी। दुर्योधन को यह संभावना थी कि यदि पाण्डव वहाँ छिपे होंगे तो निश्चय ही वे अपने मित्र विराट के गोधन की रक्षा के लिए बाहर आयेंगे। यदि उनका पता नहीं भी लगेगा तो गायों की विशाल सम्पदा हमारे हाथ लगेगी ही। अतः उन्होंने मत्स्य देश पर चढ़ाई कर दी और विशाल गो सम्पदा का अपहरण कर लिया, परन्तु पाण्डवों के सहयोग से राजा विराट ने पुनः उसे प्राप्त कर लिया।

सहदेव ग्वालों का परम उत्तम रूप बनाकर विराट की सभा में गये। वहाँ उन्होंने पाण्डवों की गो समृद्धि और उसकी व्यवस्था का राजा

विराट को जो परिचय दिया है उससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि राजाओं के यहाँ गायों के संरक्षण और उनके पालन की विशेष व्यवस्था थी और उसके लिए पृथक् विभाग हुआ करता था। **महाभारत** के उल्लेख से ज्ञात होता है कि विराट के यहाँ गौओं के रहने का स्थान राजभवन के निकट ही था—

गोष्ठमासाद्य तिष्ठन्तं भवनस्य समीपतः ।

विराट के समक्ष सहदेव ने अपना परिचय दिया कि वे पाण्डवों के यहाँ गो संरक्षक थे। उनका काम गौओं की गणना और उनकी देखभाल करना था। पाण्डवों की गौओं की विशाल संख्या, उनका वर्गीकरण, गणना और देखभाल की व्यवस्था का परिचय उन्होंने राजा विराट के समक्ष इस रूप में दिया—युधिष्ठिर के पास गौओं के आठ लाख वर्ग थे और प्रत्येक वर्ग में सौ-सौ गायें थीं। इनसे भिन्न प्रकार की गायों के एक लाख वर्ग तथा तीसरे प्रकार की गायों के इनसे दूने अर्थात् दो लाख वर्ग थे। पाण्डवों की इतनी गायों का मैं गणक तथा निरीक्षक था। वे लोग मुझे ‘तन्तिपाल’ कहा करते थे। गायों की मुझे इतनी सूक्ष्म पहचान है कि चारों ओर दस योजन की दूरी में जितनी गायें हो उनकी भूत, वर्तमान, भविष्य में जितनी संख्या थी है और होगी, उसे बतला सकता हूँ। गौओं के संबंध में तीनों कालों में होने वाली कोई ऐसी बात नहीं है जो मुझे ज्ञात न हो। महाराज युधिष्ठिर मेरे

इन गुणों से भलीभाँति परिचित थे, इसलिए वे मुझपर सदा संतुष्ट रहते थे। जिन-जिन उपायों से गौओं की संख्या शीघ्र बढ़ जाती है और उनमें कोई रोग नहीं होता, वह सब मुझे ज्ञात है। इसके अतिरिक्त उत्तम लक्षण वाले उन बैलों की भी मुझे पहचान है, जिनके मूत्र को सूँघ लेने मात्र से वंध्या स्त्री भी गर्भ धारण करने योग्य हो जात है—

ऋषभांश्चापि जानामि राजन् पूजित-लक्षणान् ।

येषां मूत्रमुपाघ्राय अपि वन्ध्या प्रसूयते ।।

सहदेव द्वारा कहे विवरण से ज्ञात होता है कि उस युग का गो लक्षण और संरक्षण-विज्ञान अत्यंत विकसित था और बड़े राजाओं के यहाँ इसकी विशेष व्यवस्था थी। राजा विराट के राज्य में भी एक लाख गायें थीं। इनमें कुछ तो एक ही रंग की थीं और कुछ मिश्रित रंग की। ये सभी भिन्न-भिन्न गुणों से युक्त थीं। विराट ने अपनी सम्पत्ति का परिचय इन शब्दों में दिया है—

शतं सहस्राणि समाहितानि

सवर्णवर्णस्य विमिश्रितान् गुणैः ।

विराटने सहदेव को गौपालकों के साथ इन गौओं के संरक्षण का भार सौंपा। गोपाल गौपालन में ही नहीं, युद्ध कला में भी निपुण होते थे। जब कौरवों के मित्र त्रिगर्तों की सेना ने गौओं की बस्ती पर आक्रमण किया और गौओं को हरकर ले जाने लगे तब गोपालों ने अस्त्र-शस्त्रों से वीरतापूर्वक युद्ध किया। युद्ध

में उन्होंने परशु, मुसल, भिन्दिपाल, मुद्गर तथा कर्षण नामक विचित्र अस्त्रों का प्रयोग किया। पहली बार तो वे अश्व सैनिकों को मार भगाने में सफल हुए, किन्तु सैनिकों की शरवर्षा के आगे वे टिक नहीं सके। त्रिगर्तराज गौओं का अपहरण करके ले जाते हैं। विराट उन्हें छुड़ाने के लिए जाते हैं, किन्तु बंदी बना लिए जाते हैं। विराट के युद्ध के लिए जाते ही कौरव उत्तर दिशा से मत्स्य देश पर आक्रमण कर देते हैं और वहाँ की साठ हजार गौओं का अपहरण कर लेते हैं। अर्जुन भीषण युद्ध द्वारा कौरवों की विराट सेना पर विजय प्राप्त करके गौओं को मुक्त करते हैं। यहीं पाण्डवों का अज्ञातवास समाप्त होता है और वे अपना छद्मवेष त्यागकर अपने असली रूप में प्रकट होते हैं।

महाभारत का यह गोहरण-आख्यान महाभारत कालीन गो सम्पदा के महत्व तथा गो रक्षण-व्यवस्था का ऐतिहासिक प्रमाण है। गौ राष्ट्र की महत्वपूर्ण सम्पत्ति समझी जाती थी तथा इसकी अस्मिता और गरिमा का प्रश्न इससे जुड़ा हुआ था।

4. 'च्यवन ऋषि की गौभक्ति'

पुराणों में गौ की अनन्त महिमा गाई गई है। महाभारत में आख्यान है कि एक बार च्यवन ऋषि गंगा गर्भ में बैठकर तपस्या कर

रहे थे। मछली पकड़ने वालों के जाल में मुनि जी भी आ गये। वे मछलियों के साथ बिकते हुए 'नहुष' के दरबार में पहुँचे। राजा मुनि जी के बदले एक थैली सोना देने लगा, किन्तु मुनि ने कहा यह अन्याय है महुआरे के साथ। राजा ने और भी बहुत सा सोना लगा दिया और अन्त में अपना समूचा राज्य तक देना चाहा। परन्तु मुनि जी ने कहा—आप उसे एक गौ दे दीजिए, बस यही बदला ठीक हो जायगा। गौ की इतनी महिमा है।

5. गो-सेवा-व्रत से पुत्र प्राप्ति और

रामनाम-स्मरण से गोहत्या-पाप का नाश

ऋतम्भर नाम के एक राजा थे। उनके कई स्त्रियाँ थीं, पर उनके कोई सन्तान नहीं थी। एक दिन अकस्मात् जाबालि मुनि आ पहुँचे। राजा ने स्वागत-सत्कार के बाद संतान के लिए उपाय पूछा।

पुत्रकामी धर्मात्मा राजा ऋतम्भरने मुनि के आज्ञानुसार गो-सेवा-व्रत ग्रहण कर दिया। एक दिन वन में राजा प्रकृति की शोभा देख रहे थे कि इसी बीच में दूसरे वन से आकर एक सिंह ने गौ को मार डाला। उस समय गौ ने बड़े कातर-स्वर से ऊँची आवाज की। राजा ने दौड़कर देखा और अपनी गो-माता को सिंह के द्वारा निहत जानकर वे विकल होकर रोने लगे। तदनन्तर धैर्य धारण करके वे जाबालि मुनि के पास आये और सारी घटना सुनाकर

उनसे इस पाप से छूटने का और पुत्र व्रत की पूर्ति का उपाय पूछा। मुनि ने कहा—‘पापों के नाश करने के लिए शास्त्रों ने भौँति-भौँति के प्रायश्चित्त बतलाये हैं। नियमानुसार उनका अनुष्ठान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। परन्तु—अज्ञान से किये हुए गो-वध का प्रायश्चित्त है। तुम राजा ऋतु पर्ण के पास जाओ, वे तुम्हें उचित परामर्श देंगे।’

जाबालि मुनि के आज्ञानुसार राजा ऋतम्भर समदृष्टि-सम्पन्न श्रीराम-भक्त राजा ऋतु पर्ण के पास गये और सभी कथा सुनाकर उन्होंने उपाय पूछा। प्रतापवान् धर्मविद् बुद्धि ऋतुपर्ण ने हँसते हुए कहा—‘महाराज! कहाँ शास्त्रवेत्ता मुनि और कहाँ मैं। आप उन्हें छोड़कर मुझ पण्डिताभिमानी मूर्ख के पास क्यों आये ? परन्तु यदि मेरे ही प्रति आपकी श्रद्धा है तो मैं निवेदन करता हूँ, आप आदरपूर्वक सुनिये—

भज श्रीरघुनाथं त्वं कर्मणा मनसा गिरा ।

नैष्कापद्येन लोकेशं तोपयस्व महामते ॥

सन्तुष्टो दास्यते सर्वं तव हृत्स्थं मनोरथम् ।

अज्ञानकृतगोहत्सापापनाशं करिष्यति ॥

‘महामते ! अब आप कपट छोड़कर तन, मन, वचन से सर्वलोकेश्वर भगवान् श्रीराम का भजन कीजिये और उनको सन्तुष्ट करने में लगिये। वे सन्तुष्ट होकर आपके हृदय की समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देंगे और आपके इस अज्ञानकृत गो-हत्या-पाप को भी नष्ट कर देंगे।’

महाराज ऋतु पर्ण से आदेश प्राप्त करके गो-सेवाव्रती राजा ऋतम्भर भगवान् श्रीराम के भजन-स्मरण से पवित्रात्मा होकर पुनः व्रत पालन में लग गये। वे प्राणि मात्र के हित साधन में लगकर निरन्तर भगवान् श्रीरामचन्द्र के नाम का स्मरण करते हुए गो-सेवा के लिये महान् वन में चले गये। कुछ दिनों के बाद उनकी सेवा से सन्तुष्ट होकर कृपामयी देवी कामधेनु ने प्रकट होकर उन्हें अभीष्ट वर दिया और फिर वे अन्तर्धान हो गयीं। उसी वर के फलस्वरूप नरेन्द्र ऋतम्भर के घर परम भक्त सत्यवान् नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

6. चरती गाय को रोकने से नरक-दर्शन

प्राचीन काल की बात है। राजा जनक ने ज्यों ही योग बल से शरीर का त्याग किया, त्यों ही एक सुन्दर सजा हुआ विमान आ गया और राजा दिव्य-देहधारी सेवकों के साथ उस पर चढ़कर चले। विमान यमराज की संयमनीपुरी के निकटवर्ती मार्ग से जा रहा था। ज्यों ही विमान वहाँ से आगे बढ़ने लगा, त्यों ही बड़े ऊँचे स्वर से राजा को हजारों मुखों से निकली हुई करुण-ध्वनि सुनायी पड़ी—‘पुण्यात्मा राजन् ! आप यहाँ से जाइये नहीं; आपके शरीर को छूकर आने वाली वायु का स्पर्श पाकर हम यातनाओं से पीड़ित नरक के प्राणियों को बड़ा ही सुख मिल रहा है।’

धार्मिक और दयालु राजा ने दुखी जीवों की करुण पुकार सुनकर दयार्द्र होकर निश्चय किया कि ‘जब मेरे यहाँ रहने से इन्हें सुख मिलता है, तो बस, मैं यहीं रहूँगा। मेरे लिये यही सुन्दर स्वर्ग है।’ राजा वहीं ठहर गये। तब यमराज ने उनसे कहा—‘यह स्थान तो दुष्ट, हत्यारे पापियों के लिये है। हिंसक, दूसरों पर कलंक लगाने वाले, लुटेरे, पति परायणा पत्नी का त्याग करने वाले, मित्रों को धोखा देने वाले, दम्भी, द्वेषी और उपहास करने वाले मन-वाणी-शरीर से कभी भगवान् का स्मरण न करने वाले जीव यहाँ आते हैं और उन्हें नरकों में डालकर मैं भयंकर यातना दिया करता हूँ। तुम तो पुण्यात्मा हो, यहाँ से अपने प्राप्त दिव्यलोक में जाओ।’ जनक ने कहा—‘मेरे शरीर से स्पर्श की हुई वायु इन्हें सुख पहुँचा रही है, तब मैं कैसे जाऊँ ? आप इन्हें इस दुःख से मुक्त कर दें, तो मैं भी सुख पूर्वक स्वर्ग चला जाऊँगा।’

यमराज ने पापियों की ओर इशारा करते हुए कहा—‘ये कैसे मुक्त हो सकते हैं ?’ इन्होंने बड़े-बड़े पाप किये हैं। इस पापी ने अपने पर विश्वास करने वाली मित्र की पत्नी का बलात्कार किया था, इसलिए इसको मैंने लोहशंकु नामक नरक में डालकर दस हजार वर्षों तक पकाया है। अब इसे पहले सूअर की और फिर मनुष्य की योनि प्राप्त होगी और वहाँ यह नपुंसक होगा। यह दूसरा

बलपूर्वक व्यभिचार में प्रवृत्त था। सौ वर्षों तक रौरव नरक में पीड़ा भोगेगा। इस तीसरे ने पराया धन चुराकर भोगा था, इसलिए दोनों हाथ काटकर इसे पूय-शोणित नामक नरक में डाला जायगा। इस प्रकार ये सभी नरक के अधिकारी हैं। तुम यदि इन्हें छुड़ाना चाहते हो तो अपना पुण्य अर्पण करो। एक दिन प्रातः काल शुद्ध मन से तुम ने **मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरघुनाथ जी का ध्यान किया था** और अकस्मात् राम-नाम का उच्चारण किया था, बस, वही पुण्य इन्हें दे दो। उससे इनका उद्धार हो जायगा।

राजा ने तुरन्तु अपने जीवन भर का पुण्य दे दिया और इसके प्रभाव से नरक के सारे प्राणी नरक-यंत्रणा से तत्काल छूट गये तथा दया के समुद्र महाराज जनक का गुण गाते हुए दिव्य लोक को चले गये।

तब राजा ने धर्म राज से पूछा कि 'जब धार्मिक पुरुषों का यहाँ आना ही नहीं होता, तब फिर मुझे यहाँ क्यों लाया गया?' इस पर धर्म राज ने कहा, 'राजन्! तुम्हारा जीवन तो पुण्यों से भरा है। पर एक दिन तुमने छोटा-सा पाप किया था।'

**एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान् ।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम् ।।**

तुम ने चरती हुई गाय को रोक दिया था। उसी पाप के कारण तुम्हें नरक का दरवाजा देखना पड़ा। अब तुम उस पाप से मुक्त हो

गये और इस पुण्यदान से तुम्हारा पुण्य और भी बढ़ गया। तुम यदि इस मार्ग से न आते तो इन बेचारों का यंत्रणामय नरक से कैसे उद्धार होता ? तुम-जैसे दूसरों के दुःख से दुखी होने वाले दयाधाम महात्मा दुखी प्राणियों का दुःख हरने में ही लगे रहते हैं। भगवान् कृपासागर हैं। पाप का फल भुगताने के बहाने इन दुखी जीवों का दुःख दूर करने के लिए ही इस संयमनी के मार्ग से उन्होंने तुमको यहाँ भेज दिया है।' तदनन्तर राजा धर्मराज को प्रणाम करके परम धाम को चले गये।

7. गोबर में लक्ष्मी जी का निवास

एक बार मनोहर रूपधारिणी लक्ष्मी जी ने गौवंशों के समूह में प्रवेश किया। उनके सौन्दर्य को देखकर गायों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने उनका परिचय पूछा, लक्ष्मीजी ने कहा—गायों! तुम्हारा कल्याण हो। इस जगत में सब लोग मुझे लक्ष्मी कहते हैं। सारा जगत मुझे चाहता है। मैंने दैत्यों को छोड़ दिया, इससे वे नष्ट हो गये। इन्द्र आदि देवताओं को आश्रय दिया, तो वे सुख भोग रहे हैं। देवताओं और ऋषियों को मेरी ही शरण में आने से सिद्धी मिलती है। जिसके शरीर में मैं प्रवेश नहीं करती उसका नाश हो जाता है। धर्म, अर्थ और काम ये मेरे ही सहयोग से सुख देने वाले हो सकते हैं। मेरा ऐसा प्रभाव है। अब मैं तुम्हारे शरीर में सदा निवास करना

चाहती हूँ इसके लिये स्वयं तुम्हारे पास आकर प्रार्थना करती हूँ। तुम लोग मेरा आश्रय ग्रहण करो और श्री लक्ष्मी संपन्न हो जाओ। गायों ने कहा - हे देवी ! बात तो ठीक है, पर तुम बड़ी चंचला हो। कहीं भी जमकर नहीं रहती। फिर तुम्हारा संबंध भी बहुतों के साथ है। इसलिये हमको तुम्हारी इच्छा नहीं है। तुम्हारा कल्याण हो। हमारा शरीर तो सुन्दर है। हमें तुमसे कोई काम नहीं है। तुम इच्छा हो, जा सकती हो। तुमने हमसे बातचीत की, इसी से हम अपने को कृतार्थ मानते हैं। लक्ष्मी जी ने कहा- गायों ! तुम यह क्या कर रही हो ? मैं बड़ी दुर्लभ हूँ और परम सती हूँ, पर तुम मुझे स्वीकार नहीं करती ! आज मुझे यह पता लगा कि 'बिना बुलाये किसी के पास जाने से अनादर होता है यह कहावत सत्य है। उत्तम व्रतचारिणी धेनुओं ! देवता, दानव, गन्धर्व, पिशाच, नाग, मनुष्य और राक्षस बड़ी उग्र तपस्या करने पर कहीं मेरी सेवा का सौभाग्य प्राप्त करते हैं, तुम मेरे इस प्रभाव पर ध्यान दो और मुझे स्वीकार करो। देखो! इस चराचर जगत में मेरा अपमान कोई भी नहीं करता। गायों ने कहा-देवी ! हम तुम्हारा अपमान नहीं करते। हम तो केवल त्याग कर रहे हैं, सो भी इसलिये कि तुम्हारा चित्त चंचल है। तुम कहीं स्थिर होकर नहीं रहती, फिर भी हम लोगों का शरीर तो स्वभाव से सुंदर

है अतएव तुम जहाँ जाना चाहो चली जाओ ! लक्ष्मीजी ने कहा- गायों ! तुम दूसरों को आदर देने वाली हो। मुझको यूँ त्याग दोगी, तो फिर संसार में सर्वत्र मेरा अनादर होने लगेगा। मैं तुम्हारी शरण में आयी हूँ, निर्दोष हूँ और तुम्हारी सेविका हूँ यह जानकर मेरी रक्षा करो। मुझे अपनाओं ! तुम महान् सौभाग्यशालिनी, सदा सबका कल्याण करने वाली, सबको शरण देने वाली पुण्यमयी पवित्र और सौभाग्यशाली हो। मुझे बतलाओं मैं तुम्हारे शरीर के किस भाग में रहूँ। गायों ने कहा- यशस्विनी ! हमें तुम्हारा सम्मान अवश्य करना चाहिये। अच्छा, तुम हमारे गोबर में निवास करो। जो बहुत पवित्र है। लक्ष्मी जी ने कहा- सुखदायिनी गायों ! तुम लोगों ने मुझ पर बड़ा उपकार किया मेरा मान रख लिया, तुम्हारा कल्याण हो। मैं ऐसा ही करूँगी। गायों के साथ इस प्रकार प्रतिज्ञा करके देखते ही देखते लक्ष्मी जी वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गयी। तब से गोबर में लक्ष्मी जी का स्थायी निवास हो गया।

●

8. महारानी अहिल्याबाई की गो भक्ति

एक बार मध्यप्रदेश के इन्दौर नगर में एक रास्ते से महारानी देवी अहिल्याबाई होल्कर के पुत्र मालोजीराव का रथ निकला तो उनके रास्ते में हाल ही ही जनी गाय का

एक बछड़ा सामने आ गया। गाय अपने बछड़े को बचाने दौड़ी तब तक मालोरावजी का रथ गाय के बछड़े को कुचलता हुआ आगे बढ़ गया। किसी ने उस बछड़े की परवाह नहीं की। गाय बछड़े के निधन से स्तब्ध व आहत होकर बछड़े के पास ही सड़क पर बैठ गई। थोड़ी देर बाद अहिल्याबाई वहाँ से गुजरी। अहिल्याबाई ने गाय को और उसके पास पड़े मृत बछड़े को देखकर घटनाक्रम के बारे में पता किया।

सारा घटनाक्रम जानने पर अहिल्याबाई ने दरबार में मालोजी की पत्नी मेनाबाई से पूछा—

“यदि कोई व्यक्ति किसी माँ के सामने ही उसके बेटे की हत्याकर दें, तो उसे क्या दण्ड मिलना चाहिए ?”

मालोजी की पत्नी ने जवाब दिया—

“उसे प्राण दण्ड मिलना चाहिए।”

देवी अहिल्याबाई ने मालोराव को हाथ-पैर बाँधकर मार्ग पर डालने के लिए कहा और फिर उन्होंने आदेश दिया मालोजी को मृत्यु दण्ड रथ से टकराकर दिया जाए। यह कार्य कोई भी सारथी करने को तैयार न था।

देवी अहिल्याबाई न्यायप्रिय थी। अतः वे स्वयं ही माँ होते हुए भी इस कार्य को करने के लिए रथ पर सवार हो गईं। वे रथ को लेकर आगे बढ़ी ही थीं कि तभी एक अप्रत्याशित घटना घटी। वहीं गाय फिर रथ

के सामने आकर खड़ी हो गई। उसे जितनी बार हटाया जाता उतनी बार पुनः अहिल्याबाई के रथ के सामने आकर खड़ी हो जाती।

यह दृश्य देखकर मंत्री परिषद् ने देवी अहिल्याबाई से मालोजी को क्षमा करने की प्रार्थना की, जिसका आधार उस गाय का व्यवहार बना।

इस तरह गाय ने स्वयं पीड़ित होते हुए भी मालोजी को द्रौपदी की तरह क्षमा करके उनके जीवन की रक्षा की।

इन्दौर में जिस जगह यह घटना घटी थी वह स्थान आज भी गाय के आड़ा होने के कारण ‘आड़ा बाजार’ के नाम से जाना जाता है। उसी स्थान पर गाय ने अड़कर दूसरे की रक्षा की थी।

गौ-भक्ति के अन्य उल्लेख

प्रजापति ने महादेव जी को कई गौएँ और एक वृषभ दिया। **शिव जी ने प्रसन्न होकर वृषभ को अपना वाहन बनाया।** शिवजी ने अपनी ध्वजा को वृषभ के चित्र से सुशोभित किया इसलिए वे वृषभ ध्वज कहलाये।

शास्त्रों से हमें ज्ञात हुआ है कि देवताओं ने महादेव जी को पशुओं का स्वामी अर्थात् पशुपति नाथ बना दिया।

पुराणों में धर्म को वृषभ रूप माना गया है। मध्य पर्व में कहा गया है कि सभी गावों में गोचर भूमि होनी चाहिए जो कम से कम एक हजार हाथ के परिणाम में हो।

भगवान आदिशंकराचार्य ब्रम्ह साक्षात्कार को सर्वोपरि उपलब्धि मानने वाले ब्रम्हमोपलब्धि में सर्वोपरि साधना गो सेवा करने वाले आचार्य हैं।

सन्त नामदेव जब मंडली लेकर दिल्ली आ गए बादशाह ने उन्हें मुसलमान धर्म स्वीकार करने कहा और उनकी परीक्षा ली कसाई से गाय का सिर कटवाकर कहा कि तुम सच्चे सन्त हो तो इस गाय को जीवित करो अन्यथा तुम्हारा सिर कलम कर दिया जाएगा।

नामदेव जी ने उत्तर दिया मुझ में कोई शक्ति नहीं जो प्रभु करता है वही होता है।

जब नामदेव जी को हाथी के पैरों तले कुचलवाने का आदेश बादशाह ने दिया तब भगवान विठ्ठल की कृपा से सन्त नामदेव बच गए। भगवान विठ्ठल बैकुण्ठ से गरुड़ पर चढ़कर वहां आये और उन्होंने मृत गाय को जीवित कर दिया।

भक्त वत्सल भगवान ने नामदेव जी से कहा नामदेव। तुम धन्य हो। धर्म और गाय की रक्षा हेतु अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले नामदेव धन्य हो।

बादशाह शर्म से पानी-पानी हो गया, नामदेवजी के चरणों में झुककर क्षमा माँगने लगा। इस घटना का वर्णन 'गुरुग्रन्थ साहिब' में वर्णित है।

एक दिन कसाई बाजार से एक गाय को डण्डे से मारता-मारता जबरन लिये जा रहा

था, दुकानों में बैठे हिन्दू व्यापारी मस्तक झुकाये यह सब देख रहे थे किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वो कसाई को कुछ कह सकें बालक शिवाजी ने तुरन्त अपनी तलवार निकाली कूदकर कसाई के पास गये एक वार से रस्सी काटी तो गाय भाग गई और दूसरे बार से कसाई का सिर कटकर भूमि पर लुढ़कने लगा। इसलिए शिवाजी के राजा बनने पर उनके नाम में जोड़ा गया गौ ब्राह्मण प्रतिपालक।

महामहिमामयी गौ हमारी माता है। उसकी बड़ी ही अद्भुत महिमा है। वह सभी प्रकार से पूज्य है। समस्त वेद शास्त्र, पुराण, रामायण, महाभारत भागवत आदि ग्रन्थ गोमाता की महिमा से भरे पड़े हैं। गौमाता की सेवा से बढ़कर कोई दूसरा महान पुण्य नहीं है। विभिन्न आचार्यों द्वारा की गई गौ महिमा राष्ट्र की सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से उपयोगिता पर महत्वपूर्ण है।

ब्रह्मलीन योगिराज श्री देवरहा बाबा ने भारतीय संस्कृति की दृष्टि से गौ का महत्व गायत्री और गंगा से बढ़कर बताया है।

देवरहा बाबा के अनुसार यदि गायत्री वाक है गंगा प्राण है तो गौ मन है।

देवरहा बाबा कहते हैं कि मनुष्य की सम्पूर्ण क्रियाओं का मूल मन है तो फिर गौ मन की शुद्धि का मूल हेतु है।

बाबा के कहे अनुसार गो महिमा का सबसे अधिक वर्णन महाभारत के अनुशासन पर्व में है।

जिस राज्य में गोवध होता है वह आध्यात्मिकता से दूर हो जाता है। जो राष्ट्र गौरक्षा में प्रमाद करता है वह इस संसार में यश और श्री से हीन हो जाता है।

गौ हमें देवताओं को अर्पण करने योग्य हवि देने वाली है। इसलिए गौ को हविदुर्घा कहा गया है।

यज्ञ अनुष्ठान के पूर्व प्रत्येक यजमान को देहशुद्धि के लिए पंचगव्य प्राशन करने का विधान है। अध्व्या अर्थात् अवध्या (जिसका वध न हो) वेदों में अध्व्या पद का सवा सौ से अधिक बार प्रयोग हुआ है।

गौदेवी सम्पदा की प्रथम निधि है। वह व्यक्ति को स्वावलम्बन प्रदान करती है। व्यक्ति के पास प्रकृति प्रदत्त शरीर तो है ही और वह भूमि पर रहता है अतः व्यक्ति अपने शरीर तथा थोड़ी सी भूमि के साथ बस देव विग्रह-स्वरूप एक गौ रख ले तो फिर उसे अपने सार्थक जीवन यापन हेतु किसी अन्य सहारे

की आवश्यकता नहीं है। वह अपना सम्पूर्ण जीवन आराम से परधर्म परोपकार करते हुए भवबन्धन से मुक्त रहकर पूर्णत्व प्राप्त कर सकता है। गाय धरती के लिए वरदान, गाय भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड ईश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप गोमाता सर्वहितकारी धन है।

सुरभि देवी का षडक्षर मंत्र है ॐ सुरभ्यै नमः। एक लाख जप करने पर यह मंत्र सिद्ध होकर कल्पवृक्ष का फल देता है।

सुरभी देवी की पूजा भक्तिपूर्वक दीपावली के दूसरे दिन पूर्वान्हकाल में करनी चाहिए।

सिद्धि प्रद सुरभि स्तोत्र में महादेवी सुरभी की स्तुति इन्द्र द्वारा की गई है।

यह सुरभी स्तोत्र देवी भागवत में है। प्राचीन काल में गौओं की अग्रपूजा करके उनका सम्मान किया जाता था।

गौमाता की पूँछ में वायु के देवता पवन देव निवास करते हैं। और पवन पुत्र हनुमान जी हैं। इसलिए गाय की पूँछ में हनुमान जी का वास होता है। गौमाता की पूँछ पकड़कर सभी संकटों का निवारण किया जाता है। इसलिए हनुमान जी का एक नाम संकटमोचन है।



7. ‘भिन्न-भिन्न मत संप्रदाय में गाय का स्थान’

स्वर्ण युग में गाय—चन्द्रगुप्त का पौत्र सम्राट अशोक अहिंसावादी बौद्ध था। उसने अपने शासन काल में प्राणी हत्या बंद कर दी थी। बैलों के बधिया करने की प्रथा भी बंद कर दी थी। गौशालाएँ खुलवाई। उनके समय दक्षिण भारत में शातवाहनों का राज्य था। इनके शासन काल में यज्ञों के समय गौओं के दान करने का उल्लेख महाराष्ट्र के अंतर्गत नाणे घाट में मिले शिलालेखों में मिलता है। महाराष्ट्र और गुजरात के प्रसिद्ध राजा नहपान के जामाता उषवदात द्वारा लाखों गौओं का दान करने का उल्लेख शिलालेखों में आया है। अशोक के शासन पश्चात् द्वितीय चन्द्रगुप्त के शासन काल में चीन देश का यात्री फाहियान भारत आया था। उसने लिखा है कि उस समय किसी के द्वारा प्राणी हिंसा नहीं होती थी। गाय-बैल को बेचा नहीं जाता था। किसी बाजार में कसाई की कोई दुकान नहीं थी। हर्ष के शासन काल में ह्यूनसांग यात्री आया था। उस समय गौ हत्या निषेध तो थी ही अपितु अन्य पशुओं का मांस भी वर्जित था।

इस्लाम में गाय—

गाय की कुर्बानी करना इस्लाम का धर्म नहीं है। (फतवे हुमायूनी भाग 1 पृ. 360)। न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गाय की

कुर्बानी का समर्थन करती है। (हकीम अजमल खाँ) मुसलमान गाय नहीं मारे क्योंकि गौ वध हदीस के खिलाफ काम है। (मौलाना हयात साहब) मुल्लाओं की राय लेकर अफगानिस्तान के अमीर ने गौ वध बंदी का कानून बनाया था और उसी के आधार पर एक फरमान जारी करके हैदराबाद के निजाम ने अपने राज्य में गौ वध बन्द करवा दिया था।

मुसलमानी शासनकाल के अंत में उस मत के नेताओं द्वारा समय-समय पर जारी फतवे जारी किए गए—

(1) गौ भक्त मुसलमान फकीर गौप्याराशाह लिखते हैं “गौ मेरी माता है अगर दिल से गाय की मोहब्बत की जाये तो हम दुनिया भर के ऐशो आराम से भर जायेंगे।”

(2) बेंगलोर के बैरिस्टर-एट-ला अब्दुल हमीर ने कहा कि कुरान शरीफ में गौ वध का आदेश नहीं है।

(3) 1915 में कुस्तुनतुनीय के सुल्तान ने बकरीद के समय गाय की कुर्बानी करने से हिन्दुस्तानी मुसलमानों को मना किया था।

(4) मंगरोल निवासी पीर मिया साहब अपनी गद्दी छोड़कर जीवन भर गौ रक्षा का काम करते रहे।

(6) ब्रिटिश शासन काल में नवाब रावलपुर, नवाब मंगरौल, नवाब दुजाना (करनाल), नवाब गुड़गाँव, नवाब मुर्शिदाबाद ने अपनी रियासतों में गौ हत्या बन्द करवाई।

(7) लखनऊ के छः उलमाए सुन्नत ने गो हत्या बंदी का फतवा दिया।

(8) स्वतंत्रता सेनानी हकीम अजमलखान का कहना था कि न तो कुरान और न ही अरब की प्रथा ही गाय की कुर्बानी की इजाजत देती है।

“मैं तो लोगों को कहता हूँ कि गाय बैल दोनों के कितने उपकार है कुरान शरीफ तो पूछता है ‘हल् जजाउल् इहसानि इल्लल् इहसानु’ अर्थात् एहसान का बदला एहसान के सिवाय और क्या हो सकता है।” (झमरोली के हकीम इस्माइल भाई)

रुस्तम खान पठान थे। वे भगवान कृष्ण के भक्त होकर रसखान बन गये। रसखान मुसलमान होकर भी गौ भक्त हो गये। कश्मीर जैसे मुस्लिम प्रधान प्रदेश में गौ वंश की हत्या पूर्ण रूप से बंद है। शेख खुशीन शाह ने कहा था “मैं हिन्दु और मुसलमान से इस्तदुआ करता हूँ कि यह सबका फर्ज है कि हमारी माँ गाय की हिफाजत करें। खुदा बरकत करेगा।

कुरान और अरब की प्रथा दोनों ही गौ कुर्बानी की इजाजत नहीं देती है। (हकीम अजमल खाँ)

गाय की कुर्बानी इस्लाम का नियम नहीं है। (फतवे हुमायुनी)

अफगानिस्तान जैसे मुस्लिम राष्ट्र में गौ वध बंदी है।

जैन व बौद्ध मत में गाय—

जैन मत में अहिंसा का प्रतिपादन किया गया है। जैन तीर्थंकरों के प्रयत्नों से मुसलमान बादशाहों ने तीर्थ स्थानों पर प्राणी हत्या न होने देने के आदेश जारी करवाये थे। इन प्रयत्न करने वालों में हीर विजय सूरी का नाम विख्यात है। विजय सेन ने गौ, बैल और भैंस की हत्या के विरुद्ध अकबर से आदेश जारी कराये थे। बुद्ध ने जनता को गौ की, और गौ वंश की उपयोगिता बताकर गौ वध न करने की शिक्षा दी थी। बर्मा के अंतर्गत विजयपुर में सन् 1350 के लगभग सीहसूर नामक राजा के प्रधान मंत्री मदा चतुरंग बल द्वारा लिखित ‘लोकनीति’ नामक ग्रंथ में गौ-बैल को माता-पिता के समान पूज्य मानने का उपदेश है। जैन-श्रावक सामान्यतः खेती करते थे। खेती की दृष्टि से बैल उपयोगी थे। जैन आगमों में कामधेनु का भी उल्लेख मिलता है। पहले जैन लोग अपनी सम्पत्ति की गणना गौओं की संख्या से करते थे। ब्रज और गोकुल उनके माप थे। प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने कृषि का उत्थान जन-जन में किया। इसलिए उनका चिन्ह बैल है। भगवान महावीर के समय ‘द्वादशांक’ सूत्र में बारह श्रावकों का वर्णन है। एक-एक श्रावक हजारों की संख्या में गौ पालता था।

पारसी व जरथ्रष्ट मत में गाय—मुसलमानों के आगमन के पूर्व भारत में पारसी लोग आ चुके थे। वे गाय का आदर करते थे। गाय के गोबर और मूत्र में पवित्रता प्राप्त होने में विश्वास रखते थे। पारसियों के धर्म गुरु ‘जरथ्रष्ट’ कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य जाति के लिए अभ्युदय तथा गौओं का हित करने के लिए आवश्यक बुद्धि, सदाचार तथा दृढ़ता प्रदान करें। जरथ्रष्ट मत में महोत्सवों में दूध व घी का होना आवश्यक है। जरथ्रष्टी का एक अत्यंत महान और पवित्र उत्सव निरंगदीन है उसमें बैल के मूत्र को इकट्ठा किया जाता है। इसका पान भी किया जाता है तथा शरीर पर मला जाता है। पारसी मत में गुरुओं द्वारा ईरानी पद्धति के अनुसार, धन की वृद्धि की बजाय “गाय की वृद्धि का आशीर्वाद लिया जाता है।” ‘अर्दा विराफ नामा’ नामक पुस्तक में गाय के प्रति मनुष्य की दयालुता के पुण्य के विषय में प्रसंग है। जरथ्रष्टी धर्मशास्त्र (बंदीदार-अध्याय 3) में वर्णन आता है कि जहाँ गाय चरती है और जहाँ वे सुरक्षित रूप से रखी जाती है वहाँ की पृथ्वी, प्रसन्न होती है। पृथ्वी की आत्मा उन लोगों को श्राप देती है जो गोचर भूमि और खेतों को कब्रिस्तान बना देते हैं। यूनानी मूर्तियों और प्राचीन ईरानी सिक्कों पर चित्र नामक देवता को भी बैल के साथ दिखाया गया है।

यहूदी व ईसाई मत में गाय—ईसा मसीह का जन्म एक गौशाला में हुआ था। इसलिए ईसाई गायों के प्रति आदर भावना रखते हैं।

बाइबल में वृषभ को देवता माना है। फिलीस्तीन की खुदाई में मिट्टी के गौ की आकार की मूर्तियाँ मिली है। यहूदियों का दुग्ध से प्रेम था। ‘ओल्डटेस्टामेण्ट’ में गौ और गौ दुग्ध के संबंध में कम-से-कम पचास उल्लेख हैं। यहूदी बहुत निपण गौ पालक थे। ईसाई मतावलम्बियों एवं विद्वानों द्वारा गौ के प्रति उच्च कोटी के विचार समय-समय पर दुनियाँ को दिये हैं जो मुख्यतः इस प्रकार है—

गाय से बढ़कर अन्य कोई भी चौपाया मनुष्य का मित्र नहीं है, और न गाय जैसा कोई मधुर स्वभाव वाला है। उसमें शत्रु-प्रतिशत्रु मातृत्व है और उसका मनुष्य जाति से माता का संबंध है।

—**वाल्टर ए. डामर अमेरिका**

अंग्रेजी शासन में सबसे घटिया काम यदि कोई हुआ है तो वह है भारत के समुन्नत गौ वंश का पतन। इस कलंक को मिटाने के लिए उसने हर गाँव में एक बढ़िया सांड उपलब्ध कराने की आवश्यकता महसूस की।

— **वाइसराय लार्ड लिनलिथगो-ब्रिटिश**

“यदि गौ हत्या बंदी देश का आम कल्याण करने में सहभागी होती है तथा भारत की बहुसंख्यक जनता को गाय के प्रति जो आदर

भावना है, उसका सम्मान करने में सहायक होती है तो क्रिश्चियन चर्च को भारत में गौ हत्या बंदी करने में कोई एतराज नहीं है।”

—बिशप अल्लेघी

अपनी संतान का हार्दिक कल्याण चाहने वाले माता-पिता को अपनी संतान को कभी भी भैंस का दूध नहीं पिलाना चाहिए। भैंस का दूध मनुष्यों के लिए उपयोगी पेय नहीं है।

—ईसा दवीट

सिक्ख पंथ में गाय—

सिक्ख पंथ के दशमेश गुरु गोविन्द सिंह ने कहा था कि “यह खालसा पंथ धर्म, गौ-साधु, गरीब तथा दीन-दुखियों की रक्षा के लिए है।” उन्होंने काशी के पण्डित केशवदत्त पुरोहित की देखरेख में महाचण्डी यज्ञ करवाया था। यह यज्ञ कोटनयना देवी के पर्वत पर

संवत् 1756 में करवाया तथा यज्ञ के बाद खालसा पंथ का सृजन किया था। इसी शृंखला में सन् 1871 ईस्वी में नामधारी वीरों ने पंजाब में अनेक स्थानों पर अंग्रेजों की राह पर स्थापित बूचड़खानों तो तोड़कर गौ हत्यारों को मार डाला था। इस मामले में अंग्रेजों ने पेंसठ नामधारी वीरों को तोपों से उड़वा दिया था। सरदार इन्द्रसिंह ने अमृतसर में घोषणा की थी कि गौ रक्षा आन्दोलन में हिन्दुओं को जरा भी खतरा महसूस हुआ तो दस लाख सिक्ख अपनी कुर्बानी देने को तैयार रहेंगे। गुरु तेगबहादुर, गुरु अर्जुनदेव आदि सिक्ख गुरुओं के बलिदान, गौ माता की रक्षा के लिए हुए थे। महाराजा रणजीतसिंह ने शासन की बागडोर संभालते ही राज्य में गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाने का पहला कार्य किया।



8. “गौमाता हमारी संस्कृति का आधार है”

गाय संसार की दिव्य प्राणी है। गाय के मुख से “ॐ” और “माँ” शब्द निश्चित हुआ है। धर्म शास्त्र में सभी मंत्र “ॐ” से ही पूर्ण होते हैं। इसलिए गौ माता को धर्म की जननी कहा गया है। इस संसार में सजीव प्राणी के रूप में गौमाता और गुरु दोनों पूजनीय हैं। गुरु ने अपनी पूजा और सम्मान की परम्परा धार्मिक व्यवस्था के अन्तर्गत कायम रखा है।

प्रकृति ने इस संसार में कुछ ऐसी वस्तु पदार्थ प्राणी का निर्माण किया है जिसकी तुलना आज के भोगवादी विज्ञान से नहीं की जा सकती।

जिस तरह जन्म देने वाले माता पिता, गुरु भगवान गोविंद और भगवान श्रीराम की विज्ञान से तुलना नहीं की जा सकती। उसी तरह गौमाता का धार्मिक आध्यात्मिक महत्व विशेष है। उनकी तुलना आज के भोगवादी विज्ञान से नहीं की जा सकती। गौ माता हमारी संस्कृति का आधार और विश्व की माता है। वैदिक युग-धर्म सिद्धांत के अनुसार वेद यज्ञ अग्नि और गौमाता की सेवा साधना का विशेष महत्व था जो धर्म का मूल आधार है। उस समय भारत विश्व में जगद्गुरु के पद पर आसीन था।

भक्तिकाल के आरंभ में अनेकों देवी-देवताओं और उसके माध्यम से अनेकों मंदिरों की स्थापना के द्वारा धर्म के मूल आधार वेद, अग्नि और गौ का महत्व बताया गया।

गौ वैदिक धर्म संस्कृति की पहचान और वैदिक धर्म व्यवस्था है। वैदिक धर्म सिद्धान्त के अनुसार सूर्य उपासना और कामधेनु साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

यह शाश्वत सत्य है कि गाय एक दिव्य जीवन दायनी सामाजिक प्राणी है। उनके शरीर में कोई अशुद्धि नहीं है। पूर्ण रूपेण उपयोगी है। अतः गाय की सेवा और सानिध्य प्राप्त करने का महत्व है —

1. भगवान श्री कृष्ण—गौ सेवक गोविन्द कहलाये।
2. माँ गंगा—गौमुख से निकलकर धरती पर आयी और (पतित-पावनी) कहलायी।
3. भगवान बुद्ध और महावीर—गौ हत्या, जीव हत्या के विरोध में अहिंसा व धर्म के पुजारी कहलाए।
4. ऋषिमुनि वशिष्ठ—कामधेनु गौमाता की कृपा से गायत्रीमंत्र सिद्ध किए।
5. महर्षि दधिची की अस्थि—गौ माता की कृपा से इन्द्र का वज्र बन गया।
6. छत्रपति शिवाजी ने—गौमाता की रक्षा महाराष्ट्र में की।

7. देवी अहिल्या बाई होलकर—की गौ रक्षाके प्रति न्याय प्रियता थी।

8. मंगल पांडे—गाय की चर्बी से युक्त कारतूस को अपने दांतों से खींचने के लिए मना करके गौ हत्या के विरुद्ध अंग्रेजी हुकुमत से विरोध किया, सुपरिणाम आज हम स्वतंत्र हैं।

9. करपात्री जी महाराज—राष्ट्र में गौ हत्या के विरुद्ध आन्दोलन किये, प्रेरित होकर अनेक सन्तों ने रैली की, रैली में अनेकों संत शहीद हो गए।

10. विनोबा भावे जी—पेट रोग से ग्रस्त होने के बाद चिकित्सक की सलाह पर नित्य गौ सेवा के साथ गौ दुग्ध पान से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर गौमाता की रक्षा के लिए सत्याग्रह आन्दोलन में सारा जीवन समर्पित कर दिये।

11. लालबहादुर शास्त्री जी—गरीब परिवार में जन्म लिये, परिवार का आर्थिक आधार गौ सेवा ही था, गाय का दुग्ध बेचकर शिक्षा ग्रहण किये, बनारस में गौ सेवासंघ गौशाला की स्थापना किये, भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद शासन द्वारा पूरे राष्ट्र में गौ हत्या बंदी के लिए दृढ़ संकल्पित थे।

“गौमाता हमारी सम्पन्नता का आधार”—
सम्पन्नता का अर्थ ज्ञानबल, प्राणबल, आत्मबल, मनोबल, शरीर बल, तपबल और धनबल से परिपूर्ण होना है। इन सातों बलों की प्राप्ति गौमाता के द्वारा हमारे जीवन में सहज हो जाती है। अतः पूर्वकाल में गौधन सम्मान के कारण ही भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था।

●●

9. देश के विभिन्न प्रांतों में पाये जाने वाले देशी गौवंश की प्रजाति

भिन्न-भिन्न जलवायु और लालन-पालन का गौवंश पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए आकृति प्रकृति गुण-दोष रंग रूप को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अंगों जातियों का वर्गीकरण विद्वानों ने किया है इस वर्गीकरण से संबंधित कुछ बिन्दुओं पर विचार करते हुए हम देखते हैं कि गायों का एक विभाजन उनके दूध और बछड़ों के गुणों के आधार पर किया गया है इस विभाजन को तीन भागों में बाँटा गया है।

- (1) दुग्ध प्रधान एकांगी,
- (2) वत्स प्रधान एकांगी,
- (3) सर्वांगी।

जन्म स्थान के आधार पर मुख्य छः नस्ल हैं। **मैसूर** की लंबे सींगोंवाली गौ। **काठियावाड़** की गीर जाति की गौ। **उत्तर** की सफेद रंग की बड़ी रास की गौ। **पंजाब** की मांट गुमरी या साहिवाल जाति की गौ। **धन्नी** जाति की गौ। छोटी रास की छोटे सर वाली पहाड़ी गौ। लंबे सींगों की मसूरी गौ प्रायः कम दूध देती है। इनका सर काफी लंबा मुँह और नथुने कम चौड़े और ललाट काफी उभरा हुआ होता है। इस जाति के प्राणी प्रायः छोटी रास के होते हैं। मसूरी गौ की मुख्य नस्ल सात प्रकार की होती हैं।

अमृत महाल नस्ल के गौवंश का रंग खाकी तथा मस्तक, गला और थूहा काले रंग के होते हैं।

हल्लीकर नस्ल की गाय अमृत महल जाति से अधिक दूध देती है। कंगायन गौवंश **कोयंबटूर** के दक्षिणी भाग में पाए जाते हैं। इस जाति की गाएँ दूध तो कम देती हैं, परंतु 10 से 12 वर्ष तक दूध देती ही रहती हैं। **खिल्लारी नस्ल** के गौवंश का रंग खाकी, सिर बड़ा, सींग लंबे और पूँछ छोटी होती है, जबकि गला कंबल काफी बड़ा होता है।

मुंबई प्रांत के दक्षिणी भाग एवं हैदराबाद राज्य में कृष्णा नदी के तट पर पाई जाने वाली गाय कृष्णावेली गाय हैं। **बरगुर नस्ल** के गौवंश कोयंबटूर के बरगुर नामक पहाड़ पर पाए जाते हैं।

आलमबादी नस्ल को हल्लिकर नस्ल की शाखा मानते हैं। **काठियावाड़** के जंगलों में गीर गाय गीर नामक जंगल में पाई जाती है। जिनका ललाट विशेष उभरा हुआ और चौड़ा होता है। इस नस्ल का मूल रंग सफेद होता है और उस पर विविध रंगों के धब्बे होते हैं। गीर गाय की प्रमुख नस्लों में गीर देवानी, डांगी, मेवाती, निमाड़ी, नस्ल हैं।

गीर नस्ल की गाय की पीठ मजबूत सीधी और समचौरस होती है जो काफी दूध देती है तथा बच्चे नियत समय पर देती है। **देवानी नस्ल** की गाय उत्तर मुंबई की **डांगी नस्ल** की गाय से मिलते-जुलते होते हैं। **मेवाती नस्ल** की गाएँ काफी दूध देती हैं। इनमें गीर जाति तथा हरियाणा नस्ल के लक्षण पाए जाते हैं।

निमाड़ी नस्ल, की गाय बहुत फुर्तीली होती हैं इनका रंग लाल होता है जिसमें जगह-जगह सफेद धब्बे होते हैं। इस जाति की गाय अधिक दूध देती हैं।

गुजरात की कांकरेज नस्ल उत्तर भारत की चौड़े मुँह तथा मुड़े हुए सिंग वाली बड़े रास की गौ होती है। **मालवी नस्ल** की गायों को प्राकृतिक गोचर भूमि में पाला जाता है इनका रंग खाकी और गर्दन काले रंग की होती है। परंतु बुढ़ापे में इनका रंग सफेद हो जाता है।

नागौरी नस्ल के गौवंश जोधपुर मारवाड़ के उत्तर-पूर्वी भाग में पाए जाते हैं। इनकी गाय दूध कम देती हैं। **कच्छ जोधपुर एवं जैसलमेर में थारपारकर** जाति के गौवंश बड़ी संख्या में पाले जाते हैं। इस नस्ल की गाय भारत वर्ष की सर्वश्रेष्ठ दुधारु गाय मानी जाती है। थारपारकर नस्ल की गाय दूध अधिक देती हैं।

बचौर नस्ल के गौवंश बिहार के सीतामणी जिले के बचौर और कोयिल पुर, प्रांगणों में पाए जाते हैं। **पवार नस्ल** संयुक्त प्रांत पीलीभीत जिले की पतनपुर तहसील में और खेरी के उत्तर-पश्चिमी भागों में पाई जाती है। इनके सींगों की लंबाई 12 से 18 इंच तक तथा ये फुर्तीले और क्रोधी होते हैं। **भगनारी नस्ल** के गौवंश नारी नदी के तटवर्ती भाग नामक इलाके में पाए जाते हैं इस जाति की गाय अधिक दूध देने के लिए प्रसिद्ध हैं।

दज्जल नस्ल के गौवंश पंजाब के दौरा गाजी खाँ, जिले में बड़ी संख्या में पाले जाते हैं। **हरियाणा नस्ल** की गाय दूध देने के लिए बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष कोलकाता आदि बड़े शहरों में भेजी जाती है। **हरियाणा नस्ल** के गौवंश राजस्थान के भरतपुर और अलवर जिलों में भी पाए जाते हैं। **हरियाणा नस्ल** जैसी ही दूसरी नस्ल हांसी हिसार नस्ल है। इसके गौवंश हिसार जिले में हांसी नदी के आसपास पाए जाते हैं।

अंगोल नस्ल के गौवंश भारत में मद्रास के अंगोल नामक इलाके में पाए जाते हैं। **गंतूर** के किसान इन्हें पालते हैं। **नागौरी गौवंश** धनवानों के गौवंश समझे जाते हैं तो निर्धनों के गौवंश राठ नस्ल को माना जाता है। **साहिवाल नस्ल** की गाय पंजाब के मध्य एवं दक्षिणी भागों में बहुत बड़ी संख्या में पाली जाती हैं। ये दुधारु गाय होने के कारण शहरों में भेजी जाती है।

पंजाब की धनी नस्ल को स्वतंत्र जाति मानना चाहिए। **सिरी नस्ल** तथा **लोहानी नस्ल** भारत में विशेष कर हिमालय प्रदेश एवं अन्य पर्वतीय प्रदेशों में छोटे रास की पहाड़ी गौ पाई जाती है। **पहाड़ी गौ** कद में छोटी होती हैं इनके ललाट और गलकंबल में सफेद धब्बा होता है इनका सर शरीर के अनुपात में बहुत छोटा होता है।

गाय धर्म और विज्ञान

पोंवर / Ponwar	नागोरी / Nagori	निमाड़ी/Nimari	केनकाशा/Kenkatha	मालवी/Malvi
				
डॉंगी/Dangi	खिल्लारी/Khilari	अमृतमहल/Amrithmahal	कृष्णा/Krishna	मलेनाडु गिड्डा/Malenadu Gidda
				
जवरी/Javari	हल्लीकार/Hallikar	ऑंगोल/Ongole	कांगायाम/Kangayam	अंब्लाचेरी/Umblachery
				
बारगूर/Baragur	कासरगोड/Kasaragod	हरियाणा/Haryana	थारपारकर/Tharparkar	कंक्रेज/Kankrej
				
देवनी/Deoni	लालकंधारी/Lalkandhari	गवलव/Gaolao	साहीवाल/Sahiwal	सिंघी/Sindhi
				

10. छत्तीसगढ़ की कोसली गाय

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र में लगभग 90 प्रतिशत किसान आज भी खेती और गौपालन साथ में करते हैं। इन गौपालकों के पास देशी गाय होती हैं। इन्हीं गायों में से एक हैं कोसली। विशिष्ट रूप से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली ये गाय हाइब्रिड गायों से सभी मायनों कहीं बेहतर है। छत्तीसगढ़ में पायी जाने वाली ये गाय ज्यादा दूध उत्पादन के साथ-साथ गुणवत्ता में भी बेहतर मानी जाती है।

छत्तीसगढ़ की इस गाय को राष्ट्रीय पशु अनुवांशिकीय संसाधन ब्यूरो करनाल ने 36 वाँ गोवंश नस्ल के नाम से पंजीकृत किया है। इंडिया केटल 2600 कोसली 03036 और राज्य की पहली पंजीकृत नस्ल होने के बाद देश भर में कोसली नाम से प्रचलित हो गई है।

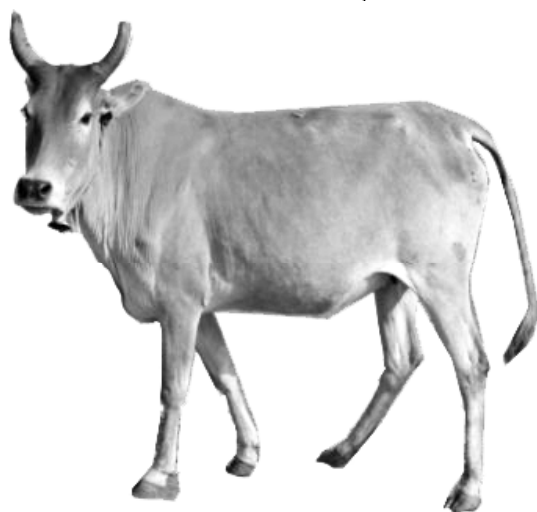
कोसली गाय के बारे में जरूरी बातें—कोसली एक देशी गाय की नस्ल है, जो सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में पाई जाती है। छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम कौशल था, इसलिए इस गाय का नाम कोसली पड़ा।

ये गाय छोटे कद-काठी की होती है। इसके मूत्र में यूरिया, खनिज लवण, एंजाइम और फसलों के लिए उपयोगी अन्य तत्वों की मात्रा भी पाई जाती है। खेतों में इसका छिड़काव कर कीट नियंत्रण किया जाता है। इस गाय का पालन छोटे और मध्यम वर्ग के किसानों के लिए काफी लाभकारी है। इसके दूध में मिठास ज्यादा होती है।

कोसली गाय क्यों है इतनी विशेष ?

छत्तीसगढ़ के जो किसान जैविक पद्धति के पक्षधर हैं और अपने खेतों में रासायनिक खाद, उर्वरकों और कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं करते हैं। इसी दिशा में उन्होंने नवाचार करते हुए लगातार कई सालों तक अपने खेतों में रासायनिक उर्वरक की जगह अलग-अलग गायों के गोबर और गौमूत्र का छिड़काव नियमित रूप से किया। इस एक्सपेरिमेंट में उन्होंने पाया कि जिस साल उन्होंने अपने खेत और बगीचे में कोसली गाय के गौमूत्र का छिड़काव किया उस साल उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई।

कोसली गाय के गौमूत्र छिड़काव के फायदे—
मिट्टी कीटों की संख्या में बढ़ोत्तरी— भूमि की उर्वरक क्षमता बढ़ाने वाले, फसल उत्पादन में सहायक, शत्रु कीटों से बचाव और फलों के परागण के आवश्यक कीट बढ़ते हैं।



भूमि की जल धारण क्षमता में वृद्धि— भूमि में मित्र कीटों की संख्या ज्यादा होती है तो भूमि से वाष्पीकरण कम होता है और जल धारण क्षमता बढ़ती है।

शत्रु कीटों के प्रकोप से राहत— जमीन और फसलों में कोसली गाय के गौमूत्र छिड़काव से किसानों ने देखा कि मित्र कीटों की अधिकता के वजह से शत्रु किट पनपने और फसलों को नुकसान पहुँचाने के पहले ही खत्म हो जाते हैं।

फसल उत्पादन में वृद्धि— किट पतंगों और परजीवियों की अनुपस्थिति में फसल नुकसान में कमी देखी गई और उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई।

उच्च गुणवत्ता— कोसली गाय के गौमूत्र छिड़काव से फसलों, सब्जियों की गुणवत्ता में फर्क साफ नजर आता है। सब्जियों का आकार बड़ा होता है। स्वाद भी रासायनिक खाद से उपजी सब्जियों से बेहतर होता है। वहीं धान और गेहूँ की बालियाँ अपेक्षाकृत बड़ी और मजबूत होती हैं। इंदिरा गाँधी कृषि विश्व विद्यालय रायपुर के वैज्ञानिक भी इस एक्सपेरिमेंट से सहमति रखते हैं। वैज्ञानिकों की टीम ने किसानों के इस दावे को सही माना है।

कोसली नस्ल की गाय का दूध— (NDDB National Dairy Development Board) के अनुसार, कोसली नस्ल की गाय एक ब्यान्त में अधिकतम 250 लीटर तक दूध देती है। इनके दूध में अधिकतम फैट की मात्रा 4.5 प्रतिशत पाई जाती है।

कामधेनु कृषि विश्व विद्यालय रायपुर द्वारा भी प्रमाणित किया गया है कि कोसली गाय के दूध में मिठास अधिक होती है, कोसली गाय के दूध से निर्मित उत्पादों के सेवन से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। कोसली गाय के दूध से बने घी को सेवन करने से कब्ज, बलगम, जुकाम की समस्या दूर होती है। इसके दही में गुड बैक्टेरिया ज्यादा होते हैं, जो पाचन शक्ति बढ़ाने में मदद करते हैं, वहीं त्वचा संबंधी समस्याएँ भी काफी हद तक कम होती हैं।

कोसली गाय को आसानी से पाला जा सकता है, ये गाय इसलिए इतनी खास है क्योंकि ये पारिस्थितिक बदलावों के साथ ढलना जानती हैं। धूप, गर्मी, बारिश, ठण्ड से इन्हें ज्यादा परेशानी नहीं होती। ना ही इनका रख-रखाव हाइब्रिड गायों की तरह मंहगा है। बड़ी सरलता से कहीं भी आसानी से इन्हें पाला जा सकता है। मानवीय भावनाओं के प्रति इनकी समझ भी अन्य गायों की अपेक्षा अच्छी होती है।

आवास प्रबंधन और रख रखाव— कोसली नस्ल के गौवंश का रखरखाव व्यापक प्रबंधन प्रणाली के तहत किया जाता है, ताकि इन्हें ठंड, बारिश और तूफान से बचाया जा सके, इन को दिन में चरने दिया जाता है और रात में बाँध दिया जाता है। इन्हें समूहों में या अकेले

खिलाया जाता है, आमतौर पर इन्हें चारे को चरने के लिए छोड़ दिया जाता है। इसके अलावा, किसानों द्वारा स्थानीय रूप से उगाया जाने वाला चारा भी उपलब्ध कराया जाता है दूध देने वाले और गर्भवती गायों को अतिरिक्त पोषण के लिए पोषक युक्त पदार्थ भी खिलाया जाता है। छत्तीसगढ़ की इकलौती रजिस्टर्ड गाय है कोसली गाय।

कोसली गाय की विशेषताएँ—

1. दो-तिहाई चौपायों के कोट का रंग हल्का लाल पाया जाता है, जबकि एक तिहाई का रंग सफेद-भूरा होता है।
2. सिर चौड़ा होता है, जबकि माथा सपाट और सीधा होता है।
3. कूबड़ छोटे से मध्यम आकार का होता है।
4. पैर सीधे, छोटे और मजबूत और काले रंग के होते हैं।

5. सींग टूँठदार होते हैं, सीधे उभरते हैं, फिर पोल से बाहर, ऊपर और अंदर की ओर मुड़े होते हैं।

6. थन छोटा और कटोरे के आकार का होता है।

7. थूथन, पलकें और पूछ स्विच काले रंग के होते हैं।

8. बैलों की ऊँचाई औसतन 121 से.मी. और गायों की ऊँचाई 103 सेमी होती है।

9. बैलों की शरीर की लंबाई औसतन 126 से.मी. और गायों की 102 से.मी. होती है।

10. बैलों के शरीर का वजन औसतन 250-300 किलों ग्राम और गायों का वजन 150-200 किलों ग्राम होता है।

11. गाय एक ब्यांत में 200-250 लीटर तक दूध देती है।

12. दूध में अधिकतम फैट की मात्रा 4.5 प्रतिशत पाया जाता है।

13. यह छोटे आकार की लेकिन मजबूत नस्ल है।



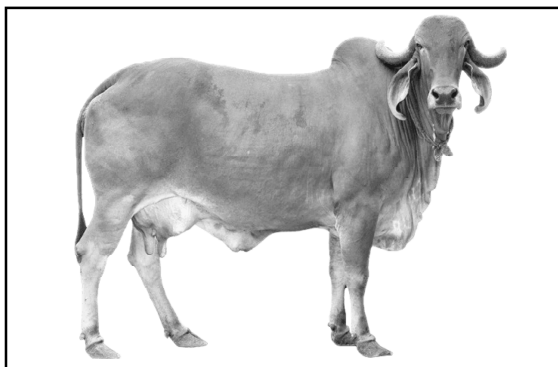
11. भारतीय एवं विदेशी नरल की गायों में अंतर

इतिहासकारों के अनुसार डिलदार भारतीय जैबू नरल साण्ड का प्रादुर्भाव भारत में हुआ। धीरे-धीरे यह साण्ड एशिया के व यूरोप के अन्य देशों व मिश्र तक पहुँच गया था। इन सभी क्षेत्रों की संस्कृति में साण्ड का विशेष महत्व रहा है। साण्ड निर्भीकता, साहस, ओज व प्रजनन शक्ति में सामर्थ्य का प्रतीक रहा है। संसार भर के सभी देश-देशान्तरों में दूध के लिए ही गाय पाली जाती है। जबकि भारत में गौ-सेवा दूध के साथ-साथ भावनात्मक भी है। भारत में गायें मनुष्य सहचरी हैं। जबकि अन्य देशों की गायों का इतिहास यह है कि वे बहुत समय तक जंगलों में हिंसक पशु के रूप में घूमने के बाद मनुष्यों द्वारा घरों में पाली गईं। भारतीय गायों का विशिष्ट लक्षण है पीठ पर ककुद और गल कंबल। प्राणीत्व विदों के अनुसार ककुद युक्त गाय जेबू श्रेणी के किसी-किसी भाग में पायी जाती है। इसके अतिरिक्त और कहीं ऐसी गायें नहीं हैं। पाश्चात्य देशों के दूध देने वाले इन पशुओं को गाय न कहकर 'गवय' कह सकते हैं

क्योंकि इनकी आकृति बहुत कुछ गाय से मिलती है। इन गायों का पूर्वज "यूरास" नामक जंगली और हिंसक पशु है। जर्मन में इसे यूरच कहा गया है यह पशु पूर्व में सिंह, बाघ, गैण्डा और भालू की तरह जंगलों में घूमता था। जूलियस सीजर ने इसका उल्लेख किया है। यह पशु, सात फीट से अधिक ऊँचा होता था व इसके सींग तीन फुट तक लम्बे होते थे। अब भी इंग्लैण्ड के किसी-किसी रक्षित बाग की जंगली गायें इसी आकृति के काले बच्चे उत्पन्न करती हैं। इस यूरास पशु को लोग जंगलों से लाकर पालने लगे। तथा धीरे-धीरे यह दूध देने वाले पशु के रूप में परिणत हो गया। भू-गर्भ खनन से इंग्लैण्ड के वारहिल न्यूस्टेड आदि रोमन स्टेशनों से ऐसी गायों के कंकाल दिखाई दिये हैं। इन सब बातों से पता चलता है कि विलायती गाय जंगली हिंसक एवं मनुष्यों के भीषण शत्रु रूप पशु से उत्पन्न होकर केवल मनुष्यों के यत्न और चेष्टा से वर्तमान पालतू और दूध देने वाली बन गयी है।

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
विलक्षण गाय का चित्र	देशी गाय के ककुद, गलकम्बल, सींग 3 विशिष्ट लक्षण हैं।	तीनों लक्षण नहीं होते हैं।
गोबर	देशी गाय का गोबर बंधा हुआ छल्लेदार एवं चिपचिपा झिल्ली लिये होता है।	इसका गोबर पतला होता है।

गाय धर्म और विज्ञान



देशी गाय



विदेशी गाय

गोबर के गुण	देशी गाय के गोबर से चर्म रोग निवारण की अद्भुत क्षमता होती है।	इसके गोबर से चर्म रोग बढ़ते हैं।
गौमूत्र	देशी गाय का गौमूत्र अमृत तुल्य सर्व रोग निवारक, सर्व विष शोषक, गंगा समान एक दिव्य तरल पदार्थ है।	इसके मूत्र में यह गुण नहीं होता है।
स्वर्णांश	देशी गाय के ककूद में सूर्य केतु नाम की नाड़ी होती है जो सूर्य की किरणों के साथ दूध, गोबर, गौमूत्र को स्वर्ण युक्त बना देती है।	ककूद (थूहा) नहीं होता अतः स्वर्ण का प्रश्न ही नहीं होता।
दूध	देशी गाय का दूध पीला होता है। गुणों की खान है अमृत तुल्य है।	इसका दूध सफेद होता है। रोगों को जन्म देने वाला होता है क्योंकि इसमें हुक वार्म होते हैं अतः जहर तुल्य है।
दही	सुपाच्य व अनेको रोगों का नाश करता है।	इसमें वे गुण नहीं।
तक्र (छाछ)	दही से भी ज्यादा लाभप्रद पेट के अनेक रोगों की दवा है।	इसमें भी वह क्षमता नहीं

गाय धर्म और विज्ञान

घी	देशी गाय का घी सुगंधयुक्त, पीला सोने के समान रंगवाला, जमने के बाद भी नरम होता है। हमारे शरीर के तापमान पर पिघल जाता है।	इसका घी सुगंधहीन, सफेदसा होता है। अपेक्षाकृत कड़ा होता है।
सुपाच्यता	गाय का दूध, दही, घी सुपाच्य होता है। नवजात शिशु से लेकर 100 वर्ष के बुजुर्ग व्यक्ति भी इसे आसानी से पचा सकते हैं।	इसका दूध, दही, घी रोगयुक्त गुणहीन होने के कारण सुपाच्य नहीं है।
नस्यक्रिया	देशी गाय के शुद्ध घृत की नस्य क्रिया से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।	नुकसानदायी हो सकती है।
पौष्टिकता	देशी गाय के दूध, दही, घी में अद्भुत पौष्टिकता होती है।	इसके दूध में उतनी नहीं होती है।
पूर्णता	देशी गाय का दूध एक सम्पूर्ण आहार है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज आदि सभी आवश्यक तत्व हैं।	देखने में एक जैसा होते हुए भी गुण हीन है।
रोग प्रतिरोधक क्षमता	देशी गाय जल्द बीमार नहीं होती। बीमार गाय जल्द स्वस्थ हो जाती है।	जल्द रोगी होती है, जल्द मर जाती है।
आहार	कम खाती है।	ज्यादा खाती है।
बछड़ा-बछड़ी	देशी गाय का बछड़ा जन्म लेने के साथ खड़ा हो जाता है।	विदेशी गाय का बछड़ा इतनी जल्दी अपने पाव पर खड़ा नहीं होता न ही इतना चपल होता है।
रूपा	देशी गोवंश लक्ष्मी रूप है। सभी देवी-देवताओं का वास है। प्रसन्न होने पर सब कुछ दे सकती है। आँखों में करुणा व प्यार है।	देखने में सुन्दर नहीं कुरूप है।

गाय धर्म और विज्ञान

रख-रखाव	नहीं के बराबर कुछ नहीं चाहिए,	बहुत अधिक ऐसी एवं कूलर चाहिए।
धूप सहनशीलता	सूर्य रूपी है अतः 8/10 घण्टे धूप में सुखपूर्वक रह सकती है। कड़ी से कड़ी धूप में सुखपूर्वक रह सकती है।	जरा भी गर्मी पड़ने पर हाँफने लगती है। ज्यादा गर्मी पड़ने पर मर भी सकती है।
वर्तमान स्थिति	संख्या तेजी से घट रही है। कृत्रिम गर्भाधान के प्रचलन से नस्ल बिगड़ रही है।	अधिक लालच में शहर के ग्वाले यहाँ तक अनेक गोशाला वाले भी इस गाय जैसे पशु की संख्या बढ़ा रहे हैं।
रोग	प्रतिकारण शक्ति, पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर सीमित खर्च के कारण गंभीर बीमार नहीं होती। मृत्यु संख्या कम और बछड़े बढ़ कर उत्कृष्ट बैल बनते हैं।	पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर खर्च अधिक और रोग के कारण मृत्यु संख्या ज्यादा जबकि बछड़ों का खेती के लिये उपयोग नहीं होता है।
प्रजनन क्षमता	प्रजनन से 12 से 15 बार तक क्षमता।	5-6 बार तक
दूध क्षमता	अच्छे नन्दी जिसकी माँ अधिक दूध वाली रही हो से बीजदान करवाने, अच्छे खान-पान से इसकी भी कई नस्ले-गिर, कांकरेज, राठी, थार-पारकर, हरियाणा, साहीवाल, मालवी 15 से 20 लीटर दूध प्रति दिन दे सकती है।	दूध क्षमता अच्छी लेकिन दूध स्वास्थ्यवर्धक नहीं।

●●

12. ‘गाय और भैंस में तुलनात्मक अंतर’

हमारी प्रतिदिन बहुत-सी ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनसे राष्ट्र की बड़ी हानि होती है पर हम उन कुक्रियाओं के अनिष्ट कारक फल को जानने की तनिक भी चेष्टा नहीं करते। यही बात भैंस-पालन के संबंध में है। लोग नहीं जानते कि इससे भारतवर्ष का कितना और कैसे अपकार हो रहा है। महात्मा गाँधी जी ने इस भयंकर क्षति की ओर लोगों का ध्यान तो आकृष्ट किया। परंतु वे इस आंदोलन को राजनैतिक उथल-पुथल के सिलसिलों में विकसित नहीं कर सके।

पशु-विशेषज्ञ ई. जे. ब्रूएन ने एक बार अपने एक वक्तव्य में भैंस से होने वाली हानि की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया था—‘भैंस का दूध लोग इसलिए अधिक पसंद करते हैं कि उसमें अधिक चिकनाई है। पर भैंस के दूध के प्रति यह अधिक रुचि इस देश के गौ-वंश की वृद्धि पर अपना पूरा प्रभाव डाल रही है’। वस्तुतः जितना नुकसान गौ-वंश तथा कृषि का भैंस ने किया है, कदाचित् ही उतना और किसी ने किया हो।

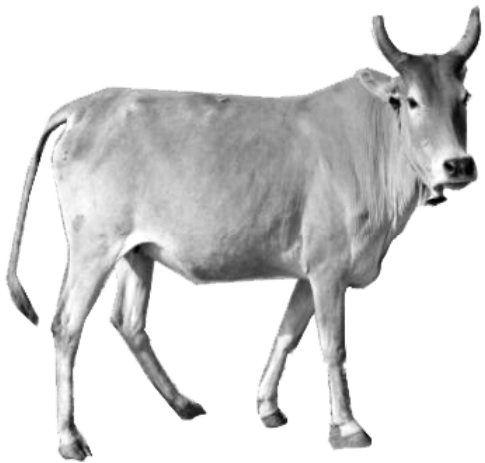
भैंस पालन किसी भी देश में नहीं होता और न उसका दूध ही कहीं के लोग व्यवहार करते हैं। दक्षिणी चीन, फिलीपाइन द्वीप-पुञ्ज तथा भारतवर्ष ही ऐसे देश हैं, जहाँ भैंस भी पाली जाती है। प्राचीन भारत में भैंस नहीं थी। वेदों में भैंस-पालन का उल्लेख नहीं है। वेदों ने गाय की बड़ी महिमा गायी है। उसको ‘अध्व्या’ कहा है! गायों की उत्पत्ति के विषय

में वेदों में सुंदर वर्णन है ! सृष्टि निर्माण में सर्वप्रथम गाय उत्पन्न हुई। इसलिये वेद इसको ‘अग्रजा’ कहते हैं। गाय के पश्चात् मनुष्य आये। गायों के ‘म्हाँ’ शब्द के सहारे मनुष्य बोल सके। अतः वेदों की टिप्पणी में श्री सायणाचार्य ने लिखा है कि मनुष्य को गाय से बोली मिली। सबसे पहले ऋग्वेद प्रकट हुआ। उसमें ‘गौमें माता’ कहा गया है, जिसका अर्थ हुआ—‘गौ हमारी माता है’। गाय दुहनेवाली को वेदों में ‘दुहिता’ कहा है, जो हम लोगों की प्यारी पुत्री के लिये पर्यायवाचक शब्द है।

वेदों के समान कुरान, बाइबिल, बौद्ध-पिटक, जैन-ग्रंथ सिक्खों के ‘गुरु-ग्रंथ साहिब’, जिंदाअवेस्ता आदि में भी भैंस के लिये कोई स्थान नहीं है।

भैंस उत्पत्ति के विषय में विचित्र दन्त-कथाएँ हैं। कहते हैं कि अत्यंत प्राचीन काल में ‘नन्दिनी’ नामक गाय के लिये एक बार वशिष्ठजी और विश्वामित्र जी झगड़ पड़े। विश्वामित्र जी हार गये और उन्होंने रंज में आकर घोर तपस्या की। फिर तपोबल से दूसरी सृष्टि की रचना की। तब ‘गाय’ से सामना करने के लिये उन्होंने भैंस का निर्माण किया। तभी से भैंस भारत में आयी और शनैः-शनैः उसका विस्तार हुआ। अब तो वह भारत के कोने-कोने में छा गयी है और गाँव-गाँव से गायों को हटा रही है। बहुत-से गाँव तो गायों से एकदम खाली हो गये हैं और वहाँ भैंस आ गयी हैं।

गाय और भैंस के दूध में अंतर

1. गाय के दूध में संपूर्ण पोषक तत्व पाये जाते हैं। 2. गाय के दूध में रहने वाले प्रोटीन सुगमता से पच जाने वाले होते हैं। 3. गाय का दूध हल्का होता है। 4. प्रोटीन को पचाने वाली चिकनाई गाय के दूध में पर्याप्त मात्रा में होती है। 5. बच्चों तथा बीमारों के लिए विशेष रूप से प्रौढ़ों के लिए साधारण रूप से गाय का दूध लाभदायक है। सेरीब्रोसाइड तत्व पाया जाता है। 6. गाय के दूध में ब्यूटिरियन अधिक मात्रा में उपस्थित रहता है। 7. गाय के दूध में विटामिन, ए, बी, और डी अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। 8. गाय के कच्चे दूध में ऑक्साइड तथा रिडक्टेस आदि पाचक रसों की प्रचुरता रहती है।	1. भैंस के दूध के संपूर्ण पोषक तत्व उपलब्ध नहीं हैं। 2. भैंस के दूध के प्रोटीन सुगमता से नहीं पचते। 3. भैंस का दूध गाढ़ा होता है। 4. भैंस के दूध में यह नहीं पाई जाती। 5. भैंस के दूध की चिकनाई एक विशेष मात्रा में होने और विशेष प्रकार की होने के कारण उतनी परिपूर्ण नहीं होती। दूध पाचन में भारी होता है। 6. भैंस के दूध में नहीं पाया जाता। 7. भैंस के दूध में यह कम पाया जाता है। 8. भैंस के दूध में नहीं पाया जाता है।
	

9. गाय का दूध टौक्सिन्स तथा टोमेन्स नामक विषैले पदार्थों को शरीर से दूर करता है।	9. भैंस के दूध में यह क्षमता नहीं होती है।
10. गाय का दूध मनुष्य की शक्ति, ग्रंथि संस्थान तथा रंग का संचालन करता है।	10. भैंस के दूध में यह गुण नहीं होता है।
11. गाय का दूध क्षय एवं कुष्ठ रोगों को दूर करने वाला होता है।	11. भैंस के दूध से कुष्ठ तथा क्षय रोग दूर नहीं होता है।
12. गाय का दूध में क्षार अधिक घुलने वाला और अधिक पाचक होता है।	12. भैंस का दूध कम पाचक होता है। अपच करता है।
13. दूध के अच्छे कीटाणु गाय के दूध में अधिक स्वतंत्रता से बढ़ते हैं।	13. दूध के अच्छे कीटाणु भैंस के दूध में उपस्थित नहीं रहते हैं।
14. गाय के दूध में Strontion तत्व है जो अणु विकिरण का प्रतिरोधक है।	14. भैंस के दूध में यह तत्व नहीं पाया जाता।
15. एसीडीटी, अल्सर, दाह व शरीर में अधिक गरमी आदि में गाय का दूध उत्तम है।	15. भैंस के दूध से यह लाभ नहीं होता है।
16. जलोदर के रोगी को पानी पीना मना होता है उसके लिए गाय का दूध लाभकारी होता है।	16. भैंस का दूध जलोदर के रोगी के लिए लाभकारी नहीं होता है।
17. गाय के दूध में CLA (Conjuated Lineic Acid) है जो रोग नाशक शक्ति उत्पन्न करता है।	17. भैंस के दूध में यह तत्व नहीं मिलता।
18. ALA Alfalioneic Acid Omega-3 गाय के दूध में मिलता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता से भरपूर होता है।	18. भैंस के दूध में यह तत्व नहीं पाया जाता।
19. गाय के दूध में विटामिन 'डी' पाया जाता है और बी12 भी पाया जाता है।	19. भैंस के दूध में नहीं पाया जाता है।

20. गाय के दूध में ट्रांस फेटी एसिड कम मात्रा में होता है।	20. भैंस के दूध में ट्रांस फेटी एसिड का प्रतिशत गाय के दूध से पाँच गुना अधिक होता है। यह ट्रांस फेटी एसिड एल.डी.एल. कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है और एच.डी.एल. कोलेस्ट्रॉल को कम करता है।
21. गाय का दूध हृदय को स्वस्थ रखता है।	21. भैंस के दूध से हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है।
22. गाय के दूध में पानी की मात्रा अधिक होती है इसलिए यह शरीर को हाइड्रेड रखता है।	22. भैंस का दूध गाढ़ा होता है।
23. भारतीय गाय के दूध में ओमेगा-6 होता है जो कैंसर नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।	23. भैंस के दूध में यह अनुपस्थित होता है।
24. गाय के दूध के सेवन से अवांछित वजन बढ़ने का खतरा नहीं होता है।	24. भैंस के दूध के अधिक सेवन से अवांछित वजन बढ़ता है। मोटापा होता है।
25. देशी गाय के दूध के सेवन से मधुमेह रोग का खतरा नहीं होता है।	25. भैंस के दूध के सेवन से मधुमेह की रोकथाम के लिए लाभदायक नहीं है।
26. गाय के दूध के सेवन से त्वचा से संबंधी रोग ठीक होते हैं।	26. कुछ लोगों को भैंस के दूध से एलर्जी होती है, त्वचा को नुकसान पहुँच सकता है।
27. गाय का दूध कब्ज, बवासीर के रोगियों के लिए लाभदायक होता है।	27. भैंस का दूध कुछ लोगों को पचाने में दिक्कत होती है जिसमें कब्ज और बवासीर के लक्षण बढ़ सकते हैं।



13. गाय के दूध, दही एवं घी की विशिष्टता

देशी गाय का दूध पीने से सतोगुण की वृद्धि होती है। मानव शरीर के अन्दर विद्यमान सभी तत्व एवं धातु पुष्ट होते हैं। फलस्वरूप शरीर के अन्दर चुस्ती, स्फूर्ति, तन्दरुस्ती बनी रहती है। चेहरे पर कांति एवं तेज उभरता है। मस्तिष्क के अन्दर ज्ञान ग्रंथियों की वृद्धि होती है। बुद्धि का विकास होता है। मनुष्य दीर्घ आयु को प्राप्त करता है।

1. गोदुग्ध—गौदुग्ध बलकारक, लघु, शीत, अमृत के समान अग्नि दीपक एवं विशेषशामक होता है।

प्रातःकाल पिया हुआ दूध वृष्य वृहण तथा अग्निदीपक होता है। दोपहर में पिया हुआ दूध बलवर्धक कफनाशक व पित्तनाशक होता है।

रात्रि में पिया हुआ दूध बालक के शरीर को बढ़ाता है, क्षय का नाश करता है और बूढ़ों के शरीर में तेज उत्पन्न करता है। कालीगाय का दूध वातनाशक एवं अधिक गुणवान होता है। पीली गाय का दूध वात तथा पित्त शमक होता है। श्वेत गाय का दूध कफनाशक होता है। लाल एवं चितकबरी गाय का दूध वातनाशक होता है।

गौ दुग्ध में 6 प्रकार के विटामिन पाये जाते हैं—

विटामिन ए—चेहरे की त्वचा आंख, दिमाग को सक्रिय बनाये रखता है।

विटामिन बी—उत्साह स्फूर्ति ताजगी आनंद जीवनी शक्ति बनाए रखता है।

विटामिन सी—पाचन शक्ति और नेत्र की ज्योति बढ़ाता है।

विटामिन डी—हड्डियों को मजबूत करता है। जिसमें भूख और वजन दोनों नियंत्रित होता है।

विटामिन ई—चेहरे की कांति बढ़ाता है। और शक्ति प्रदान करता है।

विटामिन के—त्वचा को सुरक्षित रखकर चर्मरोगों से बचाता है।

केरोटिन—गाय के दूध में स्ट्रॉंग टी.एन. रसायन मौजूद रहता है। जो परमाणु विकीरण प्रदूषण और असहनीय तापमान में मानव शरीर को सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं हृदय की सक्रियता और संवेदनशीलता बढ़ता है। भारतीय गाय के दूध में ओमेगा-6 फैटी एसिड होता है, जिसकी कैंसर-नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भाव प्रकाश इत्यादि आयुर्वेद ग्रन्थों में गोदुग्ध के गुणों का वर्णन है।

महाभारत में यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में यक्ष प्रश्न पूछता है।

“किं अमृतम् ?” अमृत क्या है ? तो धर्मराज उत्तर देते हैं - “गवामृतम्”। गो दुग्ध ही अमृत है। अन्य खाद्य पदार्थों के साथ तुलना करने पर गाय का दूध वस्तुतः अमृत ही सिद्ध होता है।

महर्षिचरक ने गौमाता के दूध को जीवनी शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा है।

गौ का दूध पुष्टिकारक होता है गो दुग्ध को इसी कारण रसायन कहा गया है।

गौ दुग्ध से शारीरिक और मानसिक विकास जितना होता है उतना विकास अन्य किसी प्राणी के दुग्ध से या किसी अन्य पदार्थों के सेवन से नहीं हो सकता है। गो दुग्ध तत्काल वीर्य उत्पन्न करने वाला है। गोदुग्ध से बुद्धि और मेघा शक्ति की वृद्धि होती है। दूसरे किसी भी प्राणी के दूध में यह शक्ति यह दिव्य गुण नहीं है।

चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि भारत में पानी मांगने पर दूध दिया जाता है। जब इस देश में लोग गोमाता की सेवा करते थे, तब देश खुशहाल था और यहां दूध दही की नदियां बहती थी। दूर-दूर तक चिकित्सक नहीं हुआ करते थे।

“विश्व में गौ दुग्ध के समान पौष्टिक आहार नहीं” शुद्ध देशी गाय के 50 किलोग्राम शुद्ध दूध में 1 किलोग्राम स्वर्ण (सोना) की मात्रा होती है।

एक क्यूबिक सेंटीमीटर अथवा 35 बूँद दूध में 5 से 10 लाख छाछ में 5 से 10 करोड़ ऐसे अणु रहते हैं जिनका काम रोगाणुओं को भगाना है।

गाय के दूध में एक अद्भुत औषधीय गुण है। इसकी छाछ किसी भी तरीके के नशे (भांग, तम्बाकू, स्मोक) से होने वाले प्रभाव को कम करती है तथा नियमित सेवन से नशे की इच्छा धीरे-धीरे कम हो जाती है।

गाय का दूध दस्त को बाँधने वाल चिकना, भारी, रक्तय-पित्त को शमन करने वाला, शीतल स्वाद और परिणाम में मधुर जीवन बढ़ाने वाला, वात-पित्त का नष्ट करने वाला कहा गया है।

प्रयोगों से सिद्ध किया गया है कि गौ दुग्ध से तपेदिक का इलाज किया जा सकता है।

दूध का सेवन का फल “भाव प्रकाश” में बताया गया है। दोपहर के पहले दूध वीर्यवद्धक, दोपहर को बल कारक व कफ व कफ का नाश करने वाला मंदाग्नि को नष्ट करने वाला होता है तथा रात्रि में सेवन करने से बहुत से रोगों का हरण करने वाला होता है। चरक संहिता में गाय के दूध के 10 गुणों का वर्णन किया गया है।

स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्षणी पछिलय गुरु मदं प्रसन्न च गव्यं दश गुण पय।

कश्यप संहिता में खाद्य विज्ञान का वर्णन है जिसके अनुसार मुर्छा अथवा किसी पुराने रोग की स्थिति में वैद्य दूध को सर्वश्रेष्ठ औषध स्वीकार करते हैं। विज्ञान के प्रयोगों ने सिद्ध कर दिया है कि गौ दुग्ध के समस्त तत्व माँ के दूध के तत्वों के ठीक समान है तथा माँ के दूध के अभाव में अमृत रूप गौ दुग्ध का सेवन किया जा सकता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, फैट, क्षार तथा विटामिन होता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि पीले रंग का कैरोटीन नामक द्रव्य केवल गाय के घी में है। कैरोटीन की कमी से मनुष्यों को मुँह, फेफड़ों, मूत्राशय की झिल्ली में और अन्य प्रकार से कैंसर हो जाते हैं। कैरोटीन शरीर में जाकर विटामिन “ए” तैयार करता है।

सुश्रुत संहिता में दुग्ध को सभी प्राणियों का आहार बताया गया है। चरक संहिता में गो-दुग्ध को जीवनी-शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा गया है।

गौ दुग्ध जीवन के लिये उपयोगी, जरा व्याधिनाशक, बुद्धिवर्धक, बलवर्धक, तथा विभिन्न रोगों को दूर करने वाला है।

गाय के दूध में विटामिन डी पाया जाता है। गाय का दुग्ध वात-नाशक तथा अधिक गुणवान, पीली-लाल गौ का दुग्ध वात तथा पित्त नाशक, गुणवान होता है।

गाय के दूध में ब्यूटिरिन व अन्य कोमल तत्व होते हैं। अतः यह सरलता से पच जाता है।

गाय का दूध गर्म करने पर भी उसमें पोषक तत्व विद्यमान रहते हैं परंतु भैंस का दूध गर्म करने पर पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।

2. “गौघृत सर्वोत्तम”—गाय का घृत सृष्टि में सर्वोत्तम पदार्थ है। गौघृत का वर्णन वेदों में “आयुर्वैघृतम्” के रूप में किया गया है। औषधियों की महाऔषधि के रूप में प्राचीन चिकित्सक इस पर गर्व करते थे।

गौघृत में 11 अम्ल, 12 धातुएं, 2 लेक्टोज होती हैं। जिससे एसीटिलीन गैस का भी निर्माण होता है। यह एसीटिलीन गैस प्रखर उष्णता की ऊर्जा है। जो दूषित वायु को अपनी ओर खींचकर पूर्ण शुद्ध करती है।

गौघृत अग्नि में जाने से फार्मेलिन गैस उत्पन्न होकर वायुमंडल में फैलकर वातावरण को रोगाणु एवं प्रदूषण मुक्त करती है।

गौघृत के जलने से उत्पन्न गैस चक्र और मानव मस्तिष्क को संतुलित करने का कार्य करती हैं। इसलिए यज्ञ करने से वर्षा होती है। वर्षा से सजीव सृष्टि के लिए शुद्ध सात्विक अन्न, जल एवं पुष्टिकारक वातावरण का निर्माण होता है। वेदशास्त्र के अनुसार गौघृत सेवन करने से वाक् सामर्थ्य वाणी में तेज आता है। और सात्विक गुणों का विकास होता है।

पाराशर गृह सूत्र में कहा गया है कि जब शिशु का जन्म होता है। तब शिशु में मेधा जनन हेतु मधु घृत में स्वर्ण को घिसकर अथवा केवल गोघृत में ही स्वर्ण घिसकर नवजात शिशु को चटाया जाता है।

दही एवं छाछ आरोग्यकारी- गौमाता के दूध से निर्मित दही सबसे श्रेष्ठ गुणों वाला रुचि और भूख बढ़ाने वाला पुष्टिकारक तथा वायु नाशक है। रुसी जीव वैज्ञानिक एली मर्चनी कॉफ्र ने दही पर अनेक प्रयोग किये हैं। दही में मानव शरीर के लिए लाभकारी अनेक विलक्षण गुण पाये हैं। दही अम्ल से उत्पन्न सूक्ष्म जीवाणु जो मानव आंतों में हानिकारक विषाणुओं की उत्पत्ति को रोकता है। भूख को बढ़ाता है पाचन शक्ति को बढ़ाता है। हृदय के लिए हानिकारक कालेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। गौमाता का दही विश्व में सर्वोत्तम है।

दही को मथकर मक्खन निकाला जाता है। पौष्टिक मट्ठा कहलाता है। इसमें विद्यमान जीवाणु के कारण शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है।

लोग दीर्घायु रहते हैं। बुरा शक्कर के साथ सेवन उत्तम पाचक सिद्ध होता है। नियमित उपयोग से आंखों की ज्योति दांतों की मजबूती बढ़ती है।

अरुचिकर, पोलियो, मंदाग्नि, उल्टी, वात, रक्तचाप, वायुगोला, अतिसार, प्रमेह कोढ़, पेट की गड़बड़ी, मोटापा, मूत्ररोग प्यास इत्यादि में भी अत्यधिक गुणकारी है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार रात्रि में शयन के पूर्व दुग्ध, प्रातः उठकर जल और भोजन के बाद मट्ठा पीये तो जीवन में वैद्य चिकित्सक की आवश्यकता नहीं हो सकती है।



14. “गाय के गौमूत्र की विशिष्टता”

चरक संहिता में गोमूत्र की उपयोगिता के बारे में कहा गया है। प्रयोगशाला परीक्षणों में देशी गाय के गौ-मूत्र में 24 रसायन तत्व पाये गये हैं।

आयुर्वेद सिद्धांतानुसार गोमूत्र से अर्क आदि अनेक औषधियाँ तैयार की जाती हैं। विज्ञान अब गौ मूत्र के गुणों को समझने लगा है जबकि हमारे देशवासी हजारों वर्षों से इसका प्रयोग करते आ रहे हैं। गौ मूत्र के रासायनिक अवयव (1) अमोनिया मूलक (2) अमोनिया गैस (3) यूरिया (4) यूरिक अम्ल (5) कॉपर (6) पोटेशियम (7) मैंगनीज (8) कैल्शियम (9) आयरन (10) सोडियम (11) फास्फेट यौगिक (12) कार्बोनिक अम्ल (13) विटामिन ‘ए’ (14) हिम्यूरिक अम्ल (15) स्वर्णक्षार आदि हैं।

गौ मूत्र के प्रयोग से हृदय रोग दूर होता है तथा मूत्र खुलकर आता है।

गौ मूत्र रक्त में रहने वाले दूषित कीटाणुओं को नष्ट कर देता है।

श्री राम वनवास के समय भरत 14 वर्ष तक गौ मूत्र का पान करते थे जिससे वे स्वस्थ रहकर आध्यात्मिक उन्नति करते रहे।

“गौमूत्र यावक श्रुत्वाभ्रातरं वलकलाम्बरम्”

गौ का मूत्र कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, खारा, तिक्त, कषाय, लघु अग्निदीपक, बुद्धि वर्धक पित्तकारक तथा वात कफ नाशक है। गौ मूत्र सेवन से कुष्ठ आदि व अन्य रोग मिट जाते हैं।

गौ मूत्र में पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नेशियम क्लोराइड, यूरिया, फास्फेट अमोनिया, क्रिएटिनिन आदि विभिन्न पोषक क्षार विद्यमान रहते हैं।

गौ मूत्र का सेवन पान करके, मालिश द्वारा, पट्टी रखकर, एनिमा तथा गर्म सेक द्वारा किया जाता है। इसके सेवन काल के दौरान मिर्च, मसाले, गरिष्ठ भोजन, तम्बाकू तथा मादक पदार्थों से परहेज रखना आवश्यक है।

भारतीय नस्ल की गाय के मूत्र में वैज्ञानिकों ने 95% जल, 2.5% यूरिया या प्रोटीन, 2.5% खनिज, विटामिन, विविध एन्जाइम्स का मिश्रण पाया जाना सिद्ध किया।

गौ मूत्र द्वारा निम्न रोगों का इलाज आयुर्वेद के अनुसार किया जा सकता है-

- | | |
|----------------------|---------------------|
| (1) यकृत के रोग | (2) कब्जी |
| (3) बवासीर | (4) जलोदर |
| | (पेट में पानी भरना) |
| (5) उदर में वायु | (6) मोटापा |
| विकार | |
| (7) चर्मरोग (कोढ़, | (8) पुराना जुकाम |
| खाज आदि) | |
| (9) शोथ | (10) पेट के कीड़े |
| (11) जोड़ों में दर्द | (12) हृदय रोग |
| (13) कफ वृद्धि | (14) नासूर |
| (15) हिस्टेरिया | (16) स्त्रियों के |
| (17) क्षय रोग | (18) गुप्त रोग |

(19) बच्चों का सूखा (20) जीर्ण ज्वर रोग

(21) दस्त रोग (22) आँख-कान की तकलीफ

(23) दन्तरोग (24) एक्जिमा।

गौ मूत्र से कामधेनु वटी बनाकर कई रोगों पर सफलता पूर्वक इलाज किया गया है।

फाइलेरिया से पीड़ित लोगों ने चालीस दिन तक लगातार गौ मूत्र पीकर फाइलेरिया से मुक्ति पाई है।

गौ मूत्र अर्क : एक प्राकृतिक औषधि

वैज्ञानिकों ने अब सिद्ध कर दिया है कि गोमूत्र के अर्क (डिस्ट्रीलेट) का सेवन करने से कैंसर जैसी महाघातक बीमारी की दवाइयों और एंटीबायोटिक दवाइयों की क्षमता कई गुना बढ़ जाती है अब वैज्ञानिकों का मानना है कि गौ मूत्र के अर्क से जो औषधीय फार्मूलेशन तैयार होगा, इसमें कैंसर, जीवाणु जनित एवं अन्य रोगों की बेहतर दवाएँ तैयार करने का काम शुरू किया जा सकता है। एंटीबायोटिक दवाइयों का जो भाग शरीर उपयोग नहीं कर पाता था, गौ मूत्र अर्क का इन दवाइयों के साथ प्रयोग करने से वह भाग भी शरीर के उपयोग में आने लगता है, इससे एंटीबायोटिक्स दवा की मात्रा कम लेने पर भी वह अधिक लाभ करती है। गौ मूत्र को गंगाजल के समान पवित्र मानते हैं, गंगाजल जिस प्रकार लम्बे समय तक दूषित नहीं होता। उसी तरह गौमूत्र दूषित नहीं होता।

विश्व तो गौमूत्र का महत्व अमेरिका से पेटेण्ट मिलने के बाद ही जान सका है, पर

आयुर्वेद के ग्रंथ गौमूत्र की उपयोगिता एवं महत्व से भरे पड़े हैं।

गौमूत्र के अर्क का इस्तेमाल कर साइड इफेक्ट से पूरी तरह बचाव संभव है एंटीबायोटिक दवाएँ काफी मँहगी आती है। हमारा शरीर एंटीबायोटिक्स दवाओं का पूरा-पूरा इस्तेमाल नहीं कर पाता है। इस प्रकार लगभग 25 करोड़ डोज (खुराक) बेकार हो जाती है। गौमूत्र के अर्क से इस क्षति को रोका भी जा सकता है।

गौमूत्र अर्क निश्चित ही शरीर में रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ाते हैं।

आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार गौमूत्र के रासायनिक तत्वों का रोगों पर प्रभाव विवरण

1. नाइट्रोजन- मूत्रक, वृक्क का प्राकृतिक उत्तेजक, रक्त विषमयता को निकालता है।
2. गंधक (सल्फर) - बड़ी आँत की पुरःसरण क्रिया को बल मिलता है। रक्त शोधक है।
3. अमोनिया - यह शरीर धातुओं और रक्त संगठन को स्थिर करता है।
4. अमोनिया गैस - फेफड़ों व श्वसन अंगों को संक्रमण से बचाता है।
5. तांबा (कॉपर)- अनुचित मेद (चर्बी) को बनने से रोकता है। शरीर की जीवाणुओं से रक्षा करता है।
6. आयरन- रक्त में उचित लाल कणों का निर्माण बनाये रखता है। कार्य शक्ति स्थिर रखता है।

7. यूरिया- मूत्र उत्सर्ग पर प्रभाव करता है। कीटाणु नाशक है।

8. यूरिक एसिड- हृदय शोथ नाशक, मूत्रल होने से विषशोधक है।

9. फॉस्फेट- मूत्रवाही संस्थान से सिकता कण (पथरी कण) निकालने में सहायक है।

10. सोडियम- रक्त शोधक, अम्लता नाशक है।

11. पोटेशियम- आमवात नाशक क्षुधा कारक है। मांसपेशी दौर्बल्य, आलस्य मिटाता है।

12. मैंगनीज- कीटाणुनाशक, कीटाणु बनने से रोकना, गैंगरीन, संज्ञाध से बचाता है।

13. कार्बोलिक एसिड- कीटाणु नाशक, कीटाणु बनने से रोकना, गैंगरीन, संज्ञाध से बचाता है।

14. कैल्सियम- रक्त शोधक, अस्थि पोषक, जन्तुधन, रक्त, स्कन्द है।

15. लवण(नमक)- दूषित व्रण, नाड़ी व्रण, मधुमेह जन्य संयास, विषमयता, अम्लरक्तता नाशक, जन्तुधन।

16. विटामिन ए, बी, सी, डी, ई- विटामिन बी, जीवनीय तत्व, उत्साहस्फूर्ति बनाये रखना, घबराहट, प्यास से बचाता है। अस्थि पोषक प्रजनन शक्ति दाता है।

17. अन्य मिनरल्स- रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है।

18. दुग्ध शर्करा- तृप्ति रहती है। मुख शोष, हृदय को ताकत देता है, स्वस्थ करता है। प्यास, घबराहट को मिटाता है।

19. एन्जाइम- पाचक रस बनाते हैं। रोग प्रतिरोधक शक्ति (आरोग्य कारक तत्व) बढ़ाते हैं।

20. जल- जीवनदाता है, रक्त को तरल बनाए रखता है तापक्रम को स्थिर रखता है।

21. हिप्युरिक एसिड- मूत्र के द्वारा विषों को बाहर निकालता है। जन्तुधन है।

22. क्रियाटिनिन- आठ मास की गर्भवती गाय के गौमूत्र में हारमोन्स ही होते हैं। जो स्वास्थ्यवर्धक है।

23. स्वर्ण क्षार जन्तुधन- रोग निरोधक शक्ति बढ़ाता है।

गौ मूत्र में गुण अधिक होते हैं। अतः चिकित्सा में गौमूत्र का ही प्रयोग करना चाहिए।

(1) गौमूत्र में किसी भी प्रकार के कीटाणु नष्ट करने की चमत्कारी शक्ति है। सभी कीटाणुजन्य व्याधियाँ नष्ट होती हैं।

(2) गौमूत्र दोषों (त्रिदोष) को समान बनाता है। अतएव रोग नष्ट हो जाते हैं।

(3) गौमूत्र शरीर में यकृत (लिवर) को सही कर स्वच्छ खून बनाकर किसी भी रोग का विरोध करने की शक्ति प्रदान करता है।

(4) गौमूत्र में सभी तत्व ऐसे हैं, जो हमारे शरीर के आरोग्यदायक तत्वों की कमी की पूर्ति करते हैं।

(5) गौमूत्र में कई खनिज, खासकर ताम्र होता है, जिसकी पूर्ति से शरीर के खनिज तत्व पूर्ण हो जाते हैं। स्वर्ण क्षार भी होने से रोगों से बचने की यह शक्ति देता है।

(6) मानसिक रोग से स्नायु तंत्र (नर्वस सिस्टम) को आघात होता है। गौमूत्र को मेध्य ओर हृद्य कहा गया है। यानी मस्तिष्क एवं हृदय को शक्ति प्रदान करता है। एतएव मानसिक कारणों से होने वाले आघात से हृदय की रक्षा करता है और इन अंगों को होने वाले रोगों से बचाता है।

(7) किसी भी प्रकार की औषधियों की मात्रा का अतिप्रयोग हो जाने से जो तत्व शरीर में रहकर किसी प्रकार से उपद्रव पैदा करते हैं उनको गौमूत्र अपनी विषनाशक शक्ति से नष्ट कर रोगी को निरोग करता है।

(8) विद्युत तरंगें हमारे शरीर को स्वस्थ रखती हैं। ये वातावरण में विद्यमान हैं सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से तरंगे हमारे शरीर में गौमूत्र से प्राप्त ताम्र के रहने से ताम्र के अपने विद्युतीय आकर्षक गुण के कारण शरीर से आकर्षित होकर स्वास्थ्य प्रदान करती हैं।

(9) गौमूत्र रसायन है। यह बुढ़ापा रोकता है। व्याधियों को नष्ट करता है।

(10) आहार में जो पोषक तत्व कम प्राप्त होते हैं उनकी पूर्ति गौमूत्र में विद्यमान तत्वों से होकर स्वास्थ्य लाभ होता है।

(11) आत्मा के विरुद्ध कर्म करने से हृदय और मस्तिष्क संकुचित होता है, जिससे शरीर में क्रिया-कलापों पर प्रभाव पड़कर रोग हो जाते हैं। गौमूत्र सात्विक बुद्धि प्रदान कर, सही कार्य कराकर इस तरह के रोगों से बचाता है।

(12) शास्त्रों में पूर्व कर्मज व्याधियों भी कही

गयी है जो हमें भुगतनी पड़ती है। गौमूत्र में गंगा ने निवास किया है। गंगा पाप नाशिनी है, अतएव गौमूत्र पान से पूर्व जन्म के पाप क्षय इस प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

(13) शास्त्रों के अनुसार भूतों के शरीर प्रवेश के कारण होने वाले रोगों पर गौमूत्र इसलिए प्रभाव करता है कि भूतों के अधिपति भगवान शंकर हैं। शंकर के शीश पर गंगा है। गौमूत्र में गंगा है, अतएव गौसूत्र पान से भूतगण अपने अधिपति के मस्तक पर गंगा के दर्शन कर, शांत हो जाते हैं और इस शरीर को नहीं सताते हैं। इस तरह भूताभिष्यंगता रोग नहीं होता है।

(14) जो रोगी वंश परंपरा से रोगी हो, रोग के पहले ही गौमूत्र कुछ समय पान करने से रोगी के शरीर में इतनी विरोधी शक्ति हो जाती है कि रोग नष्ट हो जाते हैं।

(15) विषों के द्वारा रोग होने के कारणों पर गौमूत्र विषनाशक होने के चमत्कार के कारण ही रोग नाश करता है। बड़ी-बड़ी विषैली औषधियाँ गौमूत्र से शुद्ध होती हैं। गौमूत्र, मानव शरीर की रोग प्रतिरोधनी शक्ति को बढ़ाकर, रोगों को नाश करने की क्षमता देता है। Immunity Power देता है। निर्विष होते हुए यह विषनाशक है। Anti-Toxic है।

गौमूत्र मानक —गाय की अस्वस्थ परिस्थिति, ऋतुओं के बदलाव भी गो मूत्र में भिन्नता उत्पन्न करती है। वर्तमान में WHO, AYUSH, (GOI), FDF आदि के निर्देशानुसार भी मानकीकरण आवश्यक है।



15. “गाय के गोबर की विशिष्टता”

स्कंद पुराण में कहा गया है कि—

“लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्व मंगला।

गोमया लेपनं तस्मात् कर्तव्यं पाण्डनन्दन।”

अर्थात् गोबर में लक्ष्मी का निवास रहता है अतः उसके द्वारा भूमि को लीपने से लक्ष्मी स्वयं आ जाती है।

गाय अपने दूध, दही, घी, मक्खन आदि से बनने वाली उत्तम एवं श्रेष्ठ भोज्य पदार्थों के रूप में मानव शक्ति, ऊर्जा तथा जीवन शक्ति प्रदान करती है। आर्थिक एवं व्यवहारिक दृष्टि से इसके पश्चात् गोबर, गो मूत्र का भी स्थान है। वृद्धता, अथवा रोग के कारण गाय यदि दूध और बछड़े देने योग्य न रहे तो भी वह जब तब जीवित रहेगी खाद (गोबर) तो देती रहेगी।

एक गाय के गोबर के साल भर में 800 किलो नत्रजन, 860 किलो सुपर फास्फेट 1050 किलो पोटाश तथा 17600 किलो अन्य द्रव्य मिल सकते हैं।

गोबर में ऐसी क्षमता है कि यदि कूड़े-कचरे के ढेर पर गोबर का घोल बनाकर डाला जाये तो वह कूड़ा-कचरा तीन चार माह में उपयोगी खाद बन जाता है। गोवर्धन केंद्र यवतमाल में एक किलोग्राम गोबर से तीस किलो उपयोगी खाद इसी प्रकार बनाकर इसका सफल प्रयोग किया है। भारत सरकार की गठित एक समिति

ने कानपुर, नागपुर, वर्धा, भोपाल, इन्दौर, पाण्डिचेरी, बम्बई व मदास में अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि रासायनिक उर्वरकों की बजाय जैविक खाद के प्रयोग से खेती में कम लागत, व फसल निरोगी व अच्छी हुई है।

श्री नारायण देवराय पढ़री ने त्वचा के रोगों में औषधी का कार्य करने वाली सबुन की टिकिया गोबर से बनाई है तथा गोबर से धूप बत्ती बनाई है। गोबर से एक प्लास्टर तैयार किया है जो दीवारों व छत पर लगाने से ताप और शीत का प्रभाव कम हो जाता है। यदि बिजली चमक कर गोबर पर गिरती है तो उसका दूषित प्रभाव वहीं खत्म हो जाता है।

विषधर सांप, बिच्छु या अन्य जीव के काटने पर रोगी को गोबर पिलाने तथा शरीर पर गोबर का लेप करने से विष का असर खत्म हो जाता है।

गोबर की राख का मंजन करने पर पायरिया, मसूड़ों में खून गिरना तथा दांतों के अन्य रोग ठीक हो जाते हैं।

गोबर खाद से लाभ—

रासायनिक उर्वरक खाद की बजाय यदि गोबर खाद से खेती करने से निम्न लाभ मिलते हैं—

- (1) भूमि का प्राकृतिक रूप बना रहता है।
- (2) भूमि के सूक्ष्म जीवाणु बढ़ते हैं।
- (3) सिंचाई के लिए पानी कम लगाना पड़ता है।
- (4) खेत एवम् गाँव के कूड़े-कचरे का भी उपयोग होता है।
- (5) किसानों और बैलों को अधिक काम मिलता है।
- (6) पर्यावरण में सुधार होता है, खाद्यान्न पौष्टिक एवम् सुस्वाद होता है।
- (7) कीटनाशकों के जहर का अंश हमारे शरीर पर नहीं होता।
- (8) ग्रामीणों को रोजगार मिलता है।
- (9) अनुपयोगी गौ वंश को आवारा छोड़ने की प्रवृत्ति बंद होने से उनके कत्लखाने में जाने की स्थिति पर रोक लगती है।
- (10) गाँव का धन व संसाधन गाँव में ही रहता है।
- (11) विदेशी मुद्रा की बचत होती है।
- (12) देश सम्पन्नता की ओर बढ़ता है।



16. स्वर्णप्राशन क्या है ? क्यों जरूरी है ?

वेदों के समय से ही भारतीयों को रोग प्रतिरोधक क्षमता का ज्ञान था। ऋग्वेद में कहा गया है कि सोना अग्नि का वीर्य है, अथर्ववेद के समय से ही सोने का आंतरिक उपयोग प्रचलन में था। उस समय इसका उपयोग बच्चों के लिए मेधाजनन और गर्भवती महिला के लिए मनचाहा लिंग प्राप्त करने के लिए किया जाता था। स्वर्णप्राशन एक ऐसा संस्कार है जिसमें बच्चे को घी और शहद के साथ सोना चटाया जाता है। स्वर्णप्राशन बुद्धि को बढ़ाता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और बैक्टीरिया और वायरल संक्रमण से बचाता है, पाचन अग्नि को बढ़ाता है, शारीरिक शक्ति को बढ़ाता है। यह लंबा, आध्यात्मिक, पवित्र और संत जैसा जीवन देता है।

पश्चिमी चिकित्सा और वैकल्पिक चिकित्सा में सोने और सोने के यौगिकों पर बहुत सारे शोध किए गए हैं, जो आयुर्वेद की स्वर्णप्राशन अवधारणा का समर्थन करते हैं।

परिचय

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में स्वर्णप्राशन उन सोलह संस्कारों में से एक है, जिनका वर्णन प्राचीन भारतीय शास्त्रों में किया गया है। बच्चे को सोना चटाना मूल रूप से सुवर्णप्राशन है।

स्वर्णप्राशन सोना, आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ, गाय का घी और शहद का मिश्रण है, जिसे पुष्ट्य नक्षत्र में विशेष समय पर दिया जाता है। नवजात से लेकर सोलह वर्ष की आयु के बच्चों को स्वर्णप्राशन दिया जाता है। छह महीने तक नियमित रूप से स्वर्णप्राशन का सेवन करने से बच्चा बहुत बुद्धिमान बनता है और वह सुनी हुई सारी बातें याद रख सकता है, यानी यह

याददाश्त और बुद्धि को बहुत हद तक बेहतर बनाता है।

प्रतिरक्षा और भारतीय विचार

भारतीय ऋषियों ने आयुर्वेद के माध्यम से हमेशा स्वास्थ्य के महत्व को स्वीकार किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ-साथ पूरी दुनिया आयुर्वेद के इस सिद्धांत को स्वीकार करती है कि स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण है और बीमारी का इलाज दूसरी प्राथमिकता है। अत्याधि क्षमात्व-स्वास्थ्य से सहनशीलता, बी-व्याधि-प्रतिभूद्धत्व-प्रतिरक्षा और सी-व्याधिबलविरोधित्व-रोग से लड़ने की क्षमता, ये तीन अवधारणाएँ महर्षि चरक ने 'ओरस' का उल्लेख करते समय बताई थीं।

हजारों साल पहले भी हमें रोग प्रतिरोधक क्षमता का बहुत गहरा और व्यापक ज्ञान था और हम कई तरह की बीमारियों (महामारी आदि) से बहुत आसानी से लड़ पाते थे।

हम अलग-अलग बीमारियों के लिए अलग-अलग टीके लगाते हैं, लेकिन आयुर्वेद का मानना है कि एक ही प्रणाली बनाना बेहतर है जो बच्चे को सभी बीमारियों से बचाए और उसके विकास में भी मदद करें।

स्वर्णप्राशन-एक शक्तिशाली प्रतिरक्षण

हमारे शरीर को जीवन के विभिन्न चरणों, विभिन्न अवस्थाओं से सुरक्षित रखने के लिए हमारे पूर्वजों ने सहज, कालकृत और युक्तिकृतबल (शक्ति) के रूप में एक प्रणाली विकसित की है, जिसके द्वारा हम कुछ जड़ी-बूटियों और प्रक्रियाओं की मदद से जन्म से लेकर मृत्यु तक तदनुसार शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

इन प्रक्रियाओं को “संस्कार” के रूप में जाना जाता है। संस्कार वह है जो पदार्थ की गुणवत्ता को बदल सकता है।

जात कर्म संस्कार-स्वर्णप्राशन

यह संस्कार बच्चे के जन्म के दौरान और उसके बाद लगातार 12 दिनों तक किया जाता है। इसके बाद, इसे 12 वर्षों तक प्रत्येक महीने में एक बार पुष्य नक्षत्र के दौरान किया जाना चाहिए। प्राचीन ऋषियों ने इस विशेष प्रकार के औषधि मिश्रण में सोने का उपयोग किया है।

स्वर्णप्राशन संस्कार

आयुर्वेदिक में नवजात शिशु की देखभाल से संबंधित विवरण दिया गया है जैसे प्राणप्रत्यागमन, आचार्य जातकर्म संस्कार का भी वर्णन करते हैं। जातकर्म का अर्थ है एक जन्म समारोह। (उचित प्रार्थना के बाद एक नवजात शिशु की जीभ को घी और अन्य औषधियों से तीन बार स्पर्श करना) आचार्य जातकर्म संस्कार में लेहन योगों का उल्लेख करते हैं। लेहन कश्यप की विशेषता है, उन्होंने लेहनकर्म पर विशेष जोर दिया है। लेहन की तैयारी दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करती है, वे शरीर की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं और साथ ही उनका उपयोग पूरक खाद्य पदार्थों के रूप में किया जाता है।

सभी आचार्यों ने जड़ी-बूटियों के साथ या बिना सुवर्ण भस्म / चूर्ण का उल्लेख किया है, जो मुख्य रूप से सीएनएस पर कार्य करते हैं, चरक को छोड़कर केवल मधु और घृत संयोजन का उल्लेख किया है, इसका मुख्य प्रयोग वृष्य, आयुष्य, वर्ण्य, बल्य, दीपन, श्वास-कसार, अरुचि, विषमज्वरनाशक, बृह्मण, वाजिकरा, राजयक्ष्माहरा, ओजोवर्धन, पांडुनाशन, सर्वविशापहम, ग्राह्यादि दोषाशनम के रूप

में किया जाता है। सामान्य तौर पर सुवर्णप्राशन के लिए गो-घृत, मधु, वच और स्वर्ण चूर्ण या भस्म का प्रयोग किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह बच्चे में व्याधिक्षमत्व को बढ़ाता है। आधुनिक विज्ञान में टीकाकरण और प्रतिरक्षण की अवधारणा को आयुर्वेद की व्याधिक्षमत्व अवधारणा के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है। आयुर्वेद में व्याधिक्षमत्व शब्द का प्रयोग चरक काल से ही रोग प्रतिरोधक क्षमता के कार्यात्मक सिद्धांत को दर्शाने के लिए किया जाता रहा है। रोग प्रतिरोधक क्षमता शब्द सबसे निकटतम शब्द है जो इसके साथ सहसंबद्ध हो सकता है। एक अन्य शब्द, जिसका शाब्दिक अर्थ शक्ति या बल है। सुश्रुत और उनके टीकाकरण दल्हन ने ओजस के लिए बल शब्द का प्रयोग किया तथा कहा कि बल शरीर की वह शक्ति है जो रोगों का प्रतिरोध करने के लिए पर्याप्त है।

प्राशन परिभाषा

वह प्रक्रिया जिसमें स्वर्ण भस्म/मंथन (शुद्ध प्रसंस्कृत सोना) को हर्बल अर्क से तैयार किए गए दृढ़ घी और तरल या अर्धठोस रूप में शहद के साथ दिया जाता है।

किसको दिया जाना चाहिए

स्वर्णप्राशन 0-16 वर्ष की आयु के बच्चों को दिया जा सकता है।

स्वर्णप्राशन का समय

स्वर्णप्राशन प्रत्येक पुष्य नक्षत्र पर किया जा सकता है एक शुभ दिन जो हर 27 दिनों के बाद आता है, इस दिन दिया जाने वाला यह उत्कृष्ट लाभ प्रदान करता है।

स्वर्ण प्राशन के लाभ

(1) स्वर्ण प्राशन रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और आम संक्रमणों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित करता है जिससे बच्चे बार-बार बीमार नहीं पड़ते।

(2) यह बच्चों में शारीरिक शक्ति का निर्माण करता है और शारीरिक गतिविधियों को बढ़ाता है तथा इसके लिए सहनशक्ति भी बढ़ाता है।

(3) स्वर्ण प्राशन की नियमित खुराक से बच्चे की बुद्धि, ग्रहण शक्ति, कुशाग्रता, विश्लेषण शक्ति, स्मरण शक्ति में अनोखे तरीके से सुधार होता है।

(4) यह पाचन अग्नि को प्रज्वलित करता है। पाचन में सुधार करता है और संबंधित शिकायतों को कम करता है।

(5) स्वर्ण प्राशन बच्चे की भूख भी बढ़ाता है।

(6) यह प्रारंभिक शारीरिक और मानसिक विकास को पोषित करने में मदद करता है।

(7) यह बच्चों में एक अंतर्निहित मजबूत रक्षा तंत्र विकसित करता है जो मौसमी परिवर्तन और अन्य प्रचलित संक्रमणों के कारण होने वाली बीमारियों और शिकायतों के खिलाफ सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है।

(8) यह किसी भी बीमारी के मामले में शरीर को जल्दी ठीक होने में मदद करता है।

(9) यह बच्चों को विभिन्न एलर्जी से बचाता है।

(10) यह बच्चों को दाँत निकलने के दौरान होने वाली बीमारियों से बचाता है।

(11) त्वचा का रंग निखारता है। कुल मिलाकर यह बच्चे को स्वस्थ बनाता है। नियमित रूप से स्वर्ण प्राशन की खुराक लेने वाले बच्चों को उनकी उल्लेखनीय उत्कृष्ट शारीरिक और मानसिक क्षमता से आसानी से पहचाना जा सकता है।

आधुनिक युग में एक महान प्रयोग

आयुर्वेद व्यासपीठ और विद्या भारती जैसी संस्थाओं ने मिलकर गुजरात में एक महान प्रयोग शुरू किया है जो इस सदी में हमारे देश की सबसे बड़ी गैर-सरकारी परियोजना हो सकती है।

गुजरात के 30 जिलों के 70 स्थानों पर 3 से 5 वर्ष की आयु के 8000 विद्यार्थियों को 40 महीने से नियमित रूप से पुष्प नक्षत्र के दौरान एक ही समय पर सुवर्ण प्राशन कराया जा रहा है।

पूरी परियोजना का पालन लगभग 100 वैद्य करते हैं। मानक खुराक “पंचगव्य आयुर्वेद की नैदानिक अनुसंधान इकाई” (CRUPA) द्वारा तय की जाती है। भारत की पहली पंचगव्य महिला मंडली यानी कामधेनु दिव्य औषधि महिला सहकारी संस्था पूर्ण गुणवत्ता नियंत्रण मानदण्डों के तहत दवा तैयार करती है।

निष्कर्ष—विभिन्न सिंथेटिक एजेंट इम्यूनो उत्तेजक एजेंट के रूप में उपयोग किए जाते हैं लेकिन इनके शरीर की विभिन्न प्रणालियों पर विभिन्न दुष्प्रभाव होते हैं। संबंधित दुष्प्रभावों के कारण, सुरक्षित, सस्ते और अधिक प्रभावी पारंपरिक प्रतिरक्षा संशोधक पौधों की खोज की जाती है। हर्बल मूल की दवाओं द्वारा शरीर के शारीरिक कार्यों की एक साथ उत्तेजना के साथ मध्यस्थ और बाह्य प्रतिरक्षा में वृद्धि प्रतिरक्षा संबंधी विकारों को धीमा और रोक सकती है।

(1) वैक्सीन फण्ड के रूप में सरकार की सहायता से लागत प्रभावी बनाया गया।

(2) भस्मों के लाभों को प्राप्त करने के लिए उन्हें शास्त्रीय तरीकों के अनुसार तैयार करना और विषाक्तता परीक्षण के अधीन करना आवश्यक है ताकि सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

(3) इस प्रकार वह दिन जल्द ही आ रहा है। जब स्वर्ण प्राशन अनुसूची में 52 से अधिक टीकों का पूरक होगा।

(4) स्वर्ण प्राशन को ग्रामीण क्षेत्रों तक बढ़ाया जाना चाहिए।

(5) यह स्वर्ण प्राशन बिना किसी दुष्प्रभाव के अतिरिक्त लाभ प्रदान करके बच्चे के समग्र विकास में अधिक सुरक्षित तरीके से मदद करता है।

17. “पंचगव्य का महत्व”

यज्ञ अनुष्ठान से पूर्व प्रत्येक यजमान को देहशुद्धि के लिए पंचगव्य प्राशन का विधान है।

पंचगव्य में गाय से प्राप्त पांच पदार्थ होते हैं—गाय का दूध, दही, घी, गोमूत्र एवं गोबर।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी भारती तीर्थ जी के अनुसार शास्त्र पापों के उपशमन के लिए पंचगव्य पान का विधान बताते हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी के कथानुसार भूमि पूजन के योग्य तब मानी जाती है जब वह गोबर से लीपी गई हो।

आयुर्वेदिक दृष्टि से शरीर शोधन में उदर के विकारों को दूर करने के लिए पंचगव्य प्राशन का प्रयोग निरापद है।

आण्विक दुष्परिणामों को अवरुद्ध करने की शक्ति गाय के गोबर में होती है।

अग्नि और गौगव्य का समन्वय एवं गौमाता के सम्मान को ही यज्ञ कर्म कहा गया है। गाय के पीछे के भाग से प्राप्त पंचगव्य यज्ञ हवि कहलाता है। जो अग्निदेव का मुख्य भोजन है।

(1) यज्ञ के लिए स्थान शुद्धि—गाय के गोबर और गोमूत्र से। (2) यज्ञ अग्नि प्रज्वलन गाय के उपलों से। (3) आत्मशुद्धि—पंचगव्य से। (4) यज्ञ आहुति—गौ-घृत से इन्हीं विशेषताओं के कारण गौ माता अपने द्वारा यज्ञकर्म को सृष्टि सृजन शक्ति के रूप में धारण करती है। इसलिए वेद में गाय को यज्ञ धेनु कहा गया है।

यज्ञ आहुति में गाय का घी, गौदूध एवं इससे निर्मित पदार्थ डालने से विश्व ब्रह्माण्ड में सतोगुण शक्ति अर्थात् सृजन शक्ति का निर्माण होता है। जिसे कल्याणकारी शक्ति कहा गया है?

गौ माता से प्राप्त द्रव्य दूध छाछ मट्ठा मनुष्य का उत्तम भोजन है। गाय का गोबर और गौ मूत्र धरती माता का उत्तम भोजन है। गौ घृत अग्निदेव का उत्तम भोजन है।

“गौमाता और यज्ञ के द्वारा सृष्टि की रक्षा”

गौघृत वेद मंत्र उच्चारण के साथ जब अग्नि में डाला जाता है तो उससे उत्पन्न सात्विक यज्ञ ऊर्जा- मंत्र ध्वनि कम्पन के द्वारा विश्व ब्रह्माण्ड में विशेष रूप से प्रसारित होता है, जिसके प्रभाव से वायुमंडल में “ओजोन” परत का निर्माण होता है। अंतरिक्ष एवं भूमण्डल पर सभी ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव संतुलित होता है। सूर्य की प्रथम किरण जो सृष्टि को प्राण ऊर्जा और पोषण देती है उसमें बल एवं शक्ति प्राप्त होती है।

“यज्ञ से पृथ्वी पर जल वर्षा”

गौमाता के स्तन में चारों समुद्रों का वास है, आकाशगंगा, पृथ्वीगंगा, पातालगंगा इन तीनों गंगा का स्तोत्र गाय के स्तन से प्राप्त क्षीरसागर अर्थात् दूध की धारा है। गौ दूध से प्राप्त घृत जब यज्ञ अग्नि में डाला जाता है तो, उसमें उत्पन्न यज्ञ ऊर्जा विश्व ब्रह्माण्ड में प्रसारित होकर उपयुक्त तीनों गंगा को सागर

के रूप में शक्ति एवं बल प्रदान करता है। अर्थात् पृथ्वी पर जल वर्षा का पर्याय बनता है। इसलिए वेद में कहा गया है गाय के थन में चारों समुद्रों का वास है। गौघृत से यज्ञ करने पर यज्ञ से उत्पन्न ऊर्जा अंतरिक्ष में हाइड्रोजन और ऑक्सीजन गैस को संतुलित करती हैं।

पंचतत्व और पंचगव्य—मानव शरीर का निर्माण पंचतत्व से हुआ है। अर्थात् अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी। यह पंचतत्व असंतुलित होने से मानव शरीर के अन्दर अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

मानव शरीर को पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए शरीर के अन्दर पाँचों तत्वों को संतुलित बनाये रखना अनिवार्य होता है। जिसके लिए पंचगव्य का पान किया जाता है।

गाय का ताजा दूध, दही, घी, गोबर, रस और गोमूत्र के मिश्रण को पंचगव्य कहा जाता है। जिसके पान करने से मानव शरीर के अन्दर पंचतत्व की शक्ति संतुलित होती है। सात्विक शक्तियों की अभिवृद्धि होती है। पंचगव्य पान से व्यक्ति स्वच्छ स्वस्थ और पवित्र जीवन जीता है। शरीर के अंदर पंचतत्व शक्ति असंतुलित होने पर अनेक रोग उत्पन्न होते हैं जिसे संतुलित करने के लिए पंचगव्य का पान किया जाता है।

गौदूध के प्रभाव से—मानव शरीर के अंदर जल तत्व, गौ दही के प्रभाव से वायु तत्व, गौघृत के प्रभाव से अग्नितत्व, गौमय रस के प्रभाव से पृथ्वी तत्व, गौमूत्रके प्रभाव से आकाश तत्व संतुलित हो जाता है। तथा मानव शरीर के अंदर विद्यमान सातों धातु रस, रक्त,

मांस, मज्जा, मेघ, अस्थी, और वीर्य पुष्ट होता है। जिससे शरीर के अन्दर पंचकोष शक्ति का जागरण हो जाता है।

पंचकोष जागरण—

1. अन्नमय कोष जागरण से भूख प्यास और पाचन शक्ति बढ़ती है।

2. प्राणमय कोष के जागरण से—आयु बलकी वृद्धि होती है।

3. ज्ञानमय कोष के जागरण से— भावनात्मक एवं काल्पनिक शक्ति का विकास होता है।

4. मनोमय कोष जागरण से भावनात्मक एवं काल्पनिक शक्ति का विकास होता है।

5. आनंदमय कोष जागरण से - रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

पंचगव्य का महत्व— पंचगव्य का विशेष महत्व गौमाता के नाम से ही स्पष्ट होता है। गाय शब्द में दो वर्ण हैं। 'ग' और 'य'। 'गह' शब्द का अर्थ है - गंगा, और 'य' शब्द का अर्थ है यमुना। गौमाता के गोमूत्र में हिमालय की पुत्री माता गंगा ने वास किया है। और गोबर के रस में सूर्य भगवान की पुत्री एवं यमराज की बहन माता यमुना ने वास किया है। इन दोनों के सुप्रभाव से ही पंचगव्य का पान याजक को आत्मशुद्धि प्रदान करता है।

गौमाता का दूध, दही, घृत सेवन करने से मानव जीवन में प्रमुख रूप से तीन प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

आत्मबल- संघर्ष करने की क्षमता

ज्ञान बल- समझदारी

प्राणबल- निरोग जीवन।



18. “गौसेवा हमारा कर्तव्य”

गौसेवा के प्रमुख आयाम— गौसेवा के निम्नलिखित प्रमुख आयाम होते हैं—

1. गौपालन— गौपालन गौमाताओं की देखभाल, आहार और ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने का कार्य है। इसमें गौमाताओं के देखभाल संबंधित आहार प्रदान करना और उनकी स्वस्थता की जाँच करना शामिल होता है।

2. गौशाला प्रबंधन— गौशाला प्रबंधन गौशालाओं की संचालन और देखभाल का कार्य होता है। यह गौमाताओं के ठिकानों, पोषण, स्वच्छता और सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालता है।

3. गौसंगठन और जनसंचार— गौसंगठन और जनसंचार के माध्यम से गौसेवा के महत्व को लोगों तक पहुँचाया जाता है। इसके लिए अधिकारिक सभा, गौमाता के लिए यात्रा और समारोह और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

4. गौवंश उपयोग— गौवंश उपयोग एक औषधीय प्रयोग का आयाम है जहाँ गौमाताओं से प्राप्त होने वाले उत्पादों का उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा, औषधीय उत्पादों और औषधीय विज्ञान में किया जाता है।

गौसेवा की जरूरत— गौसेवा की आवश्यकता बहुत सारे कारणों से प्रामाणिक है। इसके महत्वपूर्ण कारणों में शामिल हैं—

1. धार्मिक आदर्श— धार्मिक और सांस्कृतिक आदर्शों के अनुसार, गौमाता की सेवा एक पवित्र कर्तव्य है। ऐसी मान्यता प्राप्त है कि गौमाता सभी देवी-देवताओं की निवासिनी हैं और उनकी सेवा से मनुष्य को आशीर्वाद मिलता है।

2. गौमाता की उपयोगिता— गौमाता की उपयोगिता विभिन्न रूपों में देखी जाती है। उनके दूध, गौमूत्र और गोबर का उपयोग खाद्य, आहारिक औषधीय, गृह निर्माण और गौसंगठन में होता है। इसके साथ ही, गौमाता की सेवा और देखभाल उनकी संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. गौमाता की संरक्षा— गौमाताओं की संख्या और प्रकार की विशेषता है और इसकी संरक्षा आवश्यक है। बढ़ती जनसंख्या, वनों का कटाव और उचित देखभाल की कमी के कारण गौमाताओं की संख्या में कमी हो रही है। इसलिए गौसेवा की आवश्यकता है ताकि गौमाताओं को संरक्षित रखा जा सके और उनकी नस्लें विकसित हो सकें।

गौसेवा की संभावनाएँ— गौसेवा के लिए भविष्य में कई संभावनाएँ हैं। यहाँ कुछ मुख्य संभावनाएँ हैं—

1. गौशाला और गौसंगठनों का विस्तार— गौशाला और गौसंगठनों के विस्तार की

संभावना है ताकि गौमाताओं की सेवा और संरक्षण बढ़ाया जा सके। इसके लिए और अधिक गौशालाएँ स्थापित की जा सकती हैं और गौसंगठनों की व्यापकता बढ़ाई जा सकती है।

2. गौसेवा केन्द्रों की स्थापना— गौसेवा केन्द्रों की स्थापना करने की संभावना है जहाँ गौमाताओं की सेवा, गोमय उत्पादन, आयुर्वेदिक चिकित्सा और गौसंगठन संबंधित गतिविधियाँ संचालित की जा सकें। ये केन्द्र लोगों को गौसेवा के महत्व को समझाने और गौमाताओं के संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ाने में मदद करेंगे।

3. गौसेवा विद्यालयों का उद्घाटन— गौसेवा विद्यालयों के उद्घाटन की संभावना है जहाँ गौमाताओं के संरक्षण, गौसेवा कार्यों और गौमाता संबंधित विषयों पर शिक्षा प्रदान की जाएगी। इससे नवाचारी और गौसेवा में रुचि रखने वाले युवाओं को तकनीकी ज्ञान और धार्मिक मूल्यों की संदेशाही दोनों मिलेगी।

गौसेवा का समर्थन करने के तरीके— गौसेवा का समर्थन करने के लिए यहाँ कुछ तरीके हैं—

1. गौमाताओं की सेवा करें— गौमाताओं की सेवा करना सबसे महत्वपूर्ण और सीधा तरीका है। आप अपने पास स्थानीय गौशाला में जाकर गौमाताओं की देखभाल कर सकते

हैं। उनके लिए आहार प्रदान कर सकते हैं और उनकी स्वच्छता बनाए रख सकते हैं।

2. गौमाता के उत्पादों का उपयोग करें— गौमाताओं से प्राप्त होने वाले उत्पादों का उपयोग करें। आप उनके दूध, गौमूत्र और गोबर का उपयोग खाद्य, आहारिक, गृह निर्माण और आयुर्वेदिक चिकित्सा में कर सकते हैं। इससे आप उनके प्रयोग को समर्थन करेंगे और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देंगे।

3. गौसेवा संगठनों का समर्थन करें— आप स्थानीय गौसेवा संगठनों का समर्थन कर सकते हैं जो गौसेवा कार्यों को संचालित कर रहे हैं। आप उनके सदस्य बन सकते हैं। उनके आयोजित कार्यक्रमों में हिस्सा ले सकते हैं और उनकी आपातकालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहायता कर सकते हैं।

4. जागरूकता फैलाएँ— गौसेवा के महत्व को लोगों तक पहुँचाने के लिए जागरूकता फैलाएँ। आप सोशल मीडिया, ब्लॉग और मीडिया के माध्यम से गौसेवा के बारे में जानकारी और जागरूकता प्रदान कर सकते हैं। इससे लोगों को गौसेवा के महत्व का अधिकारिक और व्यापक ज्ञान होगा।

5. आर्थिक सहायता प्रदान करें— गौसेवा संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान करें। आप दान या धनराशि के माध्यम से गौसेवा के लिए आर्थिक सहायता प्रदान कर सकते

हैं। इससे संगठन गौमाताओं की देखभाल और संरक्षण के लिए आवश्यक संसाधनों को प्राप्त कर सकेंगे।

गौसेवा भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। गौमाता की सेवा करना और गौसेवा को समर्थन करना हमारी जिम्मेदारी है और इससे हम समृद्धि, सामाजिक समरसता और

पर्यावरण संरक्षण के लिए सहयोग करते हैं। इसलिए, आइये हम सब मिलकर गौसेवा को आगे बढ़ाते हैं और गौमाताओं की संरक्षा करते हैं।

गौसेवा एक प्रकार की सेवा है जिसमें गौमाता की सुरक्षा, देखभाल और पालन-पोषण किया जाता है। यह भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण है और गौमाता को पवित्रता और सम्मान का प्रतीक माना जाता है।



19. छत पर बागवानी

एक रिपोर्ट के अनुसार, 2050 तक 6 अरब से अधिक लोग शहरी क्षेत्रों में निवास करेंगे, जो वर्तमान जनसंख्या 3.5 अरब से लगभग दोगुना है। विश्व की 55% जनसंख्या पहले से ही शहरी क्षेत्रों में रहती है, जहाँ उत्पादित 80% खाद्यान्न का उपभोग शहरी क्षेत्रों में ही किया जाएगा।

भारत में, एक रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2030 तक देश की 40.76% आबादी शहरी क्षेत्रों में रहेगी। ग्रामीण उत्पादन प्रणाली शहरी बाजारों में फलों और सब्जियों की बढ़ती माँग पर बोझ डालेगी। लेकिन एक उपाय है जो तेजी से बढ़ते शहरीकरण, खाद्यान्न की कमी और जलवायु परिवर्तन से एक साथ निपट सकता है शहरी बागवानी।

शहरी बागवानी शहरी इलाकों में और उसके आसपास खाद्य पदार्थों की खेती और प्रसंस्करण है। शहरी बागवानी में पशुपालन, जलीय कृषि, मधुमक्खी पालन और बागवानी भी शामिल है। अनिवार्य रूप से, यह शहर की सेटिंग में उगाई जाने वाली एक पारंपरिक फसल है। शहरीकरण और अधिक लोगों की अपनी खेती वहीं करने की इच्छा के साथ, शहरी बागवानी एक लोकप्रिय और प्रभावी विकल्प बन गई है—पारंपरिक धारणा से हटकर कि फसल उत्पादन केवल ग्रामीण क्षेत्रों में ही किया जा सकता है। विकासशील क्षेत्र

में शहरी आबादी की तेज वृद्धि खाद्य आपूर्ति प्रणालियों पर भारी माँग डाल रही है, जिससे संकट के दौरान खाद्य की कमी हो रही है। शहरी बागवानी इस संकट को हल करने में मदद कर सकती है। इस कांक्र्रीट के जंगल में उपलब्ध न्यूनतम भूमि का उपयोग बागवानी के लिए किया जा सकेगा। इस समस्या से निजात पाने का एक उपाय छत पर बागवानी करना और उसे बढ़ावा देना है।

छत पर बागवानी करने के लिए, इन बातों का ध्यान रखें—छत पर पर्याप्त धूप आनी चाहिए, छत मजबूत होनी चाहिए ताकि वजन सहन कर सके। छत पर जल निकासी का उचित प्रबंध होना चाहिए। पौधों को उनकी जरूरत के अनुसार धूप दें। पौधों को पानी दें मिट्टी को नम रखें लेकिन गीली न होने दें। नियमित रूप से पौधों को नियमित रूप से गोबर खाद दें, बढ़ते हुए पौधों को आकार देने और स्वस्थ रखने के लिए नियमित रूप से छँटाई करें। खाद व कीड़े-मकोड़ों से बचाव की तैयारी करें। वॉटरप्रूफ फ्लोर तैयार करें, ईंट से बेस बनाएँ। छत पर बागवानी करने के लिए, इन बातों का ध्यान रखें कि छत पर बागवानी करने के लिए, आपको वॉटरप्रूफिंग, उपकरण, कंटेनर, बीज आदि के लिए निवेश करना होगा। विभिन्न प्रकार के कंटेनरों का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि गमले,

गो बैग, आदि। गमलों में मृदा एवं थर्मोकॉल के बॉक्स में कोकोपिट एवं कम्पोस्ट का मिश्रण जरूरत के अनुसार भर लेते हैं।

छत पर बागवानी करने से, ताजे और पोषण से भरपूर खाद्य पदार्थ मिलते हैं, यह भूमि उपयोग का एक वैकल्पिक साधन है, साथ ही, छत पर बने बगीचे शोर से बचाव भी प्रदान करते हैं।

छत पर गार्डन के लिए भारी गमलों का प्रयोग न करें— वैसे तो इस गार्डनिंग के लिए बरसात कामौसम सबसे अच्छा माना जाता है, लेकिन किसी विशेषज्ञ की सलाह से इसमें मौसम के अनुरूप पौधे लगाएँ इसके अलावा छत पर गार्डन के लिए मिट्टी के भारी गमलों से बचें इससे खर्च कम होगा और आपकी छत पर भार ज्यादा नहीं पड़ेगा।

हैगिंग गमले

छत पर बगीचे के लिए हैगिंग गमलों का इस्तेमाल करना अच्छा रहता है इससे न सिर्फ छत ज्यादा हरा-भरा लगता है, बल्कि लटकते हुए फूलों वाले गमले गार्डन को सुंदर बना देते हैं।

करें पूरी देखभाल

छत के पौधों की देखभाल करें और कोशिश करें कि हर पौधे को उसकी जरूरत के मुताबिक धूप मिले साथ ही सुबह शाम पौधों को पानी जरूर दें, इसके अलावा अपनी छत के गार्डन में ऐसी सब्जियाँ या फल न लगाएँ जिन्हें ज्यादा पानी देने की जरूरत पड़ती है।

उगा सकते हैं ये सब्जियाँ

छत पर बगीचे में जरूरत के मुताबिक सब्जियाँ भी उगाई जा सकती है, छत पर आप टमाटर, भिंडी, बेंगन, पालक आदि सब्जियाँ आसानी से उगा सकते हैं इससे आपको घर की उगी सब्जियाँ मिलेगी, जो सेहत के लिए भी अच्छी होती है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी छत कितनी बड़ी या छोटी है, सही योजना और थोड़े से प्रयासों से आप अपनी छत को बगीचे में बदल सकते हैं। यह एक मिथक है कि छत पर बगीचा बनाने में बहुत खर्च आता है। अपनी छत को नया रूप देने के कई तरीके हैं, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितना समय और पैसा निवेश करना चाहते हैं।

अपने बगीचे से हर दिन घर पर उगाई गई ताजा सब्जियों और फलों की आपूर्ति से बेहतर क्या हो सकता है। जैविक सब्जियाँ और फल खाद्य बाजारों से खरीदे जाने वाले फलों और सब्जियों से ज्यादा पौष्टिक होते हैं और आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छे होते हैं।

हम बाजारों और किराने की दुकानों से जो खाद्य पदार्थ खरीदते हैं, वे आमतौर पर रासायनिक खादों की मदद से उगाए जाते हैं। यह रसायन आपके भोजन प्रणाली में रिस जाता है और अंततः स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकता है। अपना भोजन खुद उगाने से आपको रोजाना खाने वाले भोजन की अच्छी गुणवत्ता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

अपने स्थान को श्रेष्ठ बनाएँ

छत पर बगीचा बनाने से आपके घर को ठंडा रखने में मदद मिलती है, यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए बहुत बढ़िया है। आपकी छत पर उगने वाले सभी पौधे एक सूक्ष्म वातावरण बनाएँगे और जगह का तापमान कम करेंगे। इसलिए जब आप पौष्टिक घर में उगाए गए भोजन का आनंद लेते हैं तो आप ए.सी. के बड़े बिलों से भी बचत करते हैं।

आपके कार्बन पदचिह्न को कम करता है

अपने घर पर बगीचा बनाकर आप पर्यावरण की मदद करेंगे और अपने कार्बन पदचिह्न को कम करेंगे। आपके द्वारा उगाए जाने वाले पौधे वायु की गुणवत्ता में सुधार करेंगे। रासायनिक पदार्थों का उपयोग करके की गई खेती मिट्टी की गुणवत्ता को खराब करती है और हवा और पानी को प्रदूषित करती है।

प्रकृति से जुड़े रहें

अपना छत पर बगीचा होने से आप हमेशा प्रकृति के करीब रह सकते हैं। जैसा कि कहते हैं, “प्रकृति मनुष्य की सबसे अच्छी दोस्त है”। यह आपको दुनिया के सभी तनाव और अराजकता से अलग रखता है। अपना खुद का छत पर बगीचा होने का मतलब है हर समय अपने शांतिपूर्ण कोने तक पहुँच पाना।

आपको स्वस्थ रहने में मदद करता है

बागवानी हमेशा एक बेहतरीन व्यायाम है, अपने बगीचे को बनाए रखने में आप जितने प्रयास करेंगे, आपको स्वस्थ और

सक्रिय रहने में उतनी ही मदद मिलेगी। अपने पौधों की देखभाल करना, उन्हें पानी देना और अन्य गतिविधियाँ आपको शारीरिक रूप से सक्रिय रखेंगी और आपकी रोजमर्रा की उबाऊ व्यायाम दिनचर्या से दूर रखेंगी।

छत पर बागवानी की मूल बातें

एक बार जब आप अपने छत पर बगीचा बनाने के बारे में अपना मन बना लेते हैं, तो आपको एक सूची बनानी होगी और शुरुवात करने में मदद के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होगा।

स्केच/लेआउट तैयार करें—इससे पहले कि आप अपने बागवानी कौशल का उपयोग करना शुरू करें, अपने छत के बगीचे का एक मोटा स्केच बनाएँ। योजना बनाएँ कि आप अपने साग-सब्जियाँ को कैसे लगाएँगे। क्या आप उन्हें कंटेनरों, उभरी हुई क्यारियों में लगाएँगे, या अपनी छत पर खड़ी जगह का उपयोग करेंगे। आप अपने बगीचे के बीच में बैठकर प्रकृति का आनंद लेने के लिए एक बैठक व्यवस्था भी बना सकते हैं। यहाँ बताया गया है कि आप अपने स्थान का अधिकतम उपयोग कैसे कर सकते हैं।

छत पर बागवानी के लिए आवश्यक उपकरण या औजार—जब आप अपने छत पर बगीचा पर काम करना शुरू करेंगे तो ये बागवानी उपकरण आपके काम आएँगे। आप बागवानी उपकरणों की इस सूची का पालन कर सकते हैं और खुद को और अपने बटुए

को बागवानी की दुकान पर जाने से बच सकते हैं। ये पाँच उपकरण आपको एक मजबूत शुरूआत करने में मदद करेंगे। जैसे- करणी, नली पाइप या पानी का डिब्बा, बेलचा, बागवानी रेक, छँटाई कैंची।

मिट्टी की तैयारी

स्वस्थ मिट्टी से स्वस्थ पौधे पैदा होते हैं। उचित पोषण और कंडीशनिंग वाली मिट्टी ही उचित पौधे उगाने की कुंजी है। मिट्टी को गोबर खाद के साथ मिलाकर अपना पॉटिंग मिश्रण तैयार करें। आपके टेरेस गार्डन के लिए आदर्श मिट्टी न तो बहुत सघन होनी चाहिए और न ही बहुत हल्की। मिट्टी की बनावट संतुलित होनी चाहिए, मिट्टी में नमी बनाए रखने वाली भुरभुरी मिट्टी पौधों के लिए अच्छी होती है।

अपनी मिट्टी को समय-समय पर गोबर खाद दें। बारिश के साथ आपके छत के बगीचे की मिट्टी से महत्वपूर्ण पोषक तत्व बह सकते हैं।

इसलिए, अच्छी उपज के लिए उन्हें खाद देना आवश्यक है। रासायनिक खादों का उपयोग करने से बचें क्योंकि यह न केवल आपके सिस्टम में रिस जाएगा बल्कि यह आपकी मिट्टी में अच्छे बैक्टीरिया और सूक्ष्म जीवों को भी नुकसान पहुँचाएगा। अपनी मिट्टी को स्वस्थ रखने के लिए, आप इसे समय-समय पर खाद देते रह सकते हैं। इससे आपकी हरी सब्जियाँ स्वस्थ रहेंगी।

ऐसे समय में जब हम लगातार जलवायु परिवर्तन की हानिकारक घटनाओं से जूझ रहे हैं, छत पर बागवानी जैसी पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को अपनाना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह न केवल शहरी गर्मी के प्रभावों को कम करके कार्बन फुटप्रिंट को कम करता है, बल्कि यह आपके रहने की जगह को भी सुंदर बनाता है, कांक्रीट के जंगल के बीच एक शांत, प्राकृतिक विश्राम प्रदान करता है।

यह आपके मानसिक स्वास्थ्य में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। पौधों की देखभाल करना, उन्हें बढ़ते देखना और अपने परिश्रम का फल प्राप्त करना एक चिकित्सीय प्रक्रिया हो सकती है। यह तनाव को कम कर सकता है और उपलब्धि की भावना प्रदान कर सकता है। आपको धैर्य सिखा सकता है और प्रकृति के साथ आपके बंधन को पोषित कर सकता है।

इसके अलावा, यह दैविक जीवन जीने का प्रवेश द्वार हो सकता है। यह आपको हानिकारक रसायनों और कीटनाशकों से मुक्त फल, सब्जियाँ और जड़ी-बूटियाँ उगाने का प्रोत्साहन देता है। यह न केवल आपके परिवार के स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करता है बल्कि आपकी जीवनशैली के स्थायित्व को भी बढ़ाता है।

●●

20. गौ आधारित कृषि

गौ-आधारित कृषि, रासायनिक खेती का एक अच्छा विकल्प है इसमें देशी गाय के गोबर और गोमूत्र का इस्तेमाल करके खेती की जाती है। गौ-आधारित खेती के कुछ फायदे ये हैं- इससे जमीन की उर्वरता बढ़ती है, इससे रासायनिक खेती से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। इससे किसानों की आय में बढ़ोत्तरी होती है इसमें 70 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है। गौ-आधारित खेती करने से शुरुवात में लागत ज्यादा आ सकती है, लेकिन आमदनी बढ़ जाती है। देश भर में विभिन्न प्रांतों में खेती की विभिन्न परिस्थितियाँ हैं। छत्तीसगढ़ राज्य का कुल खेती योग्य क्षेत्र 4.78 मिलियन हेक्टेयर है जो इसके कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 35 प्रतिशत है। शुद्ध सिंचित क्षेत्र खेती योग्य क्षेत्र का 23 प्रतिशत है।

जिसमें लाल पीली मिट्टी प्रमुख प्रकार की मिट्टी है चावल राज्य की मुख्य फसल है। 70 प्रतिशत से अधिक खेती योग्य क्षेत्र में उगाया जाता है। छत्तीसगढ़ में कृषि को जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी, जलस्तर की गिरावट मिट्टी के क्षरण सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रामाणित जैविक खेती के तहत वास्तविक क्षेत्र कुल का केवल 1.5 प्रतिशत है।

छत्तीसगढ़ राज्य को भौगोलिक दृष्टि से तीन अलग-अलग कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

(1) छत्तीसगढ़ का मैदानी क्षेत्र (15 जिले)— इस क्षेत्र में विभिन्न जिले शामिल हैं जिनमें रायपुर, गरियाबंद, बलौदाबाजार, महासमुद, धमतरी, दुर्ग, बालोद, बेमेतरा, राजनांदगाँव, कबीरधाम, बिलासपुर, मुंगेली, कोरबा, जाँजगीर, रायगढ़ और कांकेर जिले सम्मिलित हैं।

(2) बस्तर का पठार (7 जिले)— दूसरा क्षेत्र जिसे बस्तर के पठार के रूप में जाना जाता है। इसमें जगदलपुर, नारायणपुर, बीजापुर, कोंडागाँव, दंतेवाड़ा सुकमा और कांकेर जिले का कुछ हिस्सा सम्मिलित है।

(3) उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र— तीसरे क्षेत्र उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र में विशेष रूप से सरगुजा, सुरजपुर, बलरामपुर, कोरिया, जशपुर, और धरमजयगढ़ तहसील सम्मिलित हैं।

छत्तीसगढ़ बागवानी— बागवानी उत्पादों के उच्च मूल्य के कारण छत्तीसगढ़ में बागवानी लोकप्रियता हासिल कर रही है। यहाँ सिचाई संसाधनों की भी उर्वराशक्ति का कमजोर होना जैसी चुनौतियों का सामना किसानों को करना पड़ रहा है। इन को दूर करने के लिए कई किसान गौआधारित खाद और गोबर

गौमूत्र के कीटनाशक का प्रयोग कर अच्छा उत्पादन ले रहे हैं।

संभावनाएँ— बागवानी के अंतर्गत आम, अमरुद, नींबू, चीनी, काजू, चीकू, सीताफल बेर, बेल, आँवला आदि राज्य में फल फसलों का कुल क्षेत्रफल 254754 हेक्टेयर है, जिससे वर्ष में 3458745 मीट्रिक टन उत्पादन होगा। काजू की पैदावार बस्तर और रायगढ़ जिलों के पठारी क्षेत्रों में अच्छी होती है।

सब्जियों की खेती जिसमें कद्दू, सेम पत्तागोभी और फूलगोभी सहित विभिन्न प्रकार की सब्जियों की फसलों की खेती किसान सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

यह कृषि मुख्य रूप से देशी गाय पर आधारित है। देशी गाय के एक ग्राम गोबर में 300 से 500 करोड़ तक सूक्ष्मजीवाणु होते हैं, जबकि विदेशी गाय के एक ग्राम गोबर में 78 लाख सूक्ष्म जीवाणु पाये जाते हैं।

इस खेती में गहरी जुताई नहीं की जाती है। भूमि अपनी जुताई स्वयं स्वाभाविक रूप से पौधों की जड़ों द्वारा प्रवेश तथा केंचुओं व छोटे प्राणियों तथा सूक्ष्म जीवाणुओं से कर लेती है।

इसमें फसल की बुआई उत्तर से दक्षिण दिशा में करते हैं। इससे पौधों को अधिक समय तक सूर्य का प्रकाश मिलता है। कीट एवं रोगों का प्रकोप भी कम होता है।

फसल अवशेष द्वारा मृदा को ढक दिया जाता है। इसका ह्रास रुक जाता है। मृदा में

सूक्ष्म पर्यावरण का निर्माण होता है। गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं। इससे मृदा में नमी से केंचुओं की गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं।

मुख्य फसल की पंक्तियों के बीच ऐसी फसल लगाना है, जो भूमि में नाइट्रोजन की आपूर्ति तथा खेती की लागत मूल्य की प्रतिपूर्ति करें। इससे वातावरण और जीवों के साथ तालमेल बना रहता है।

इस खेती में सिंचाई पौधों से कुछ दूरी पर की जाती है। पौधों को इस प्रकार जल देने से जड़ों की लम्बाई बढ़ जाती है। जड़ों की वृद्धि से पौधे के ऊपरी भाग की भी वृद्धि होती है।

रसायनों का उपयोग नहीं करना चाहिए। जुताई तथा उर्वरकों के उपयोग से रोगों तथा कीटों का प्रकोप अधिक होने लगा है। मृदा में कम से कम छेड़छाड़ करने से प्रकृति का संतुलन बना रहता है।

इस विधि के तहत कृषि में नमी बढ़ाने के लिए प्राकृतिक तरीकों का उपयोग किया जाता है। इसमें पौधे आवश्यक पोषण, मृदा में उपस्थित नमी एवं वायु में मौजूद अणुओं से प्राप्त करते हैं। इस तकनीक के इस्तेमाल से किसानों को किसी भी प्रकार के रसायन और कीटनाशक तथा बीजों को खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इस प्रकार की खेती में किसान रासायनिक खादों और कीटनाशकों के स्थान पर अपने घर पर बनाई गई सामग्रियों का प्रयोग करते हैं।

ऐसी खेती करने के दौरान लागत कम आती है। इस खेती से मृदा में उपस्थित जैव विविधता का विकास होता है। मृदा की उर्वराशक्ति बढ़ती है तथा फसलों की पैदावार अच्छी होती है।

उपज की अच्छी गुणवत्ता होने के कारण बाजार में दाम भी अच्छे मिलेंगे।

जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों को होने वाले नुकसान के प्रभावों को भी यह कम करती है।

पौधों को पानी की कम जरूरत होती है तथा भूमि की उर्वराशक्ति के साथ-साथ मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणवत्ता भी बढ़ जाती है।

वातावरण के सभी कारकों एवं जीवों के साथ तालमेल बनाकर पारिस्थितिक तंत्र को व्यवस्थित रखता है। जैसे—मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा, भूमि के कटाव से बचाव, भूमि में उच्च मान का संतुलन, सूक्ष्म पर्यावरण का जलन।

गौ-आधारित खेती-समय की माँग है— यह प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता और परंपराओं का अंग है। हमारे वेदों, पुराणों, उपनिषदों में गौ-आधारित खेती के ज्ञान का खजाना मिलता है। यह खेती हमारी जड़ों से जुड़ी है। हमारे पूर्वज सदियों पहले से यह खेती करते रहे हैं।

गौ-आधारित खेती को अपनाना है, धरती माता को सुरक्षित बनाना है— भारत तो स्वभाव और संस्कृति से कृषि आधारित देश रहा है।

इसीलिए जैसे-जैसे हमारा किसान आगे बढ़ेगा, वैसे-वैसे हमारा देश आगे बढ़ेगा। प्राकृतिक खेती समृद्धि का साधन होने के साथ ही साथ हमारी धरती माँ का सम्मान और सेवा भी है। आप प्राकृतिक खेती करते हैं तो आप धरती माता की सेवा करते हैं, मिट्टी की क्वालिटी उसकी उत्पादकता की रक्षा करते हैं, जब आप गौ-आधारित खेती करते हैं तो आप प्राकृतिक और पर्यावरण की सेवा करते हैं, जब आप गौ-आधारित खेती करते हैं तो आपको गौमाता की सेवा का भी सौभाग्य मिलता है।

गौ-आधारित खेती किसानों के लिए समृद्धि का मार्ग—यह खेती पद्धति किसानों के लिए समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। जिस तरह जंगलों में पौधे प्राकृतिक रूप से फलते-फूलते हैं, उसी तरह खेतों में किसान गौ-आधारित पद्धति खेती करके उत्पादन बढ़ाने के साथ ही अपनी जमीन की उर्वरा शक्ति भी बढ़ा सकते हैं।

यदि किसान इस खेती को अपनाएँगे तो इससे रासायनिक खेती से होने वाले नुकसान से भी बचा जा सकेगा। गौ-आधारित खेती से किसानों की आय में वृद्धि भी संभव है और इसमें 2% प्रतिशत तक जल की बचत भी होती है।

आवश्यकता है कि यह बात हर किसान तक पहुँचाई जाए और किसान हर प्रकार से इस खेती को न केवल अपनाएँ, बल्कि उसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार कर इसको जनांदोलन बनाएँ।

रासायनिक खाद-कीटनाशक के उपयोग से बढ़ रहे हैं कैंसर जैसे रोग—भूमि की उर्वरा शक्ति ऑर्गेनिक कार्बन पर निर्भर करती है। हरितक्रांति के सूत्र केंद्र पंतनगर की भूमि में वर्ष 1960 में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा 2.5% थी जो घटकर 0.6% रह गई है। इसकी मात्रा 0.5% से कम होने पर भूमि बंजर हो जाती है। रासायनिक खाद और कीटनाशक का अंधाधुंध उपयोग फसलों को जहरीला बना देता है। इसी कारण कैंसर जैसे गंभीर रोगों के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने और जहरीले तत्वों से मानव जाति को बचाने के लिए गौ-आधारित खेती ही सबसे प्रभावी समाधान है। गौ-आधारित खेती के लिए खाद और कीटनाशक देशी गाय के गोबर और मूत्र से बनते हैं। इनमें दाल का बेसन, मुट्ठी भर मिट्टी और 200 लीटर पानी मिलाना पड़ता है। किसान यह जीवामृत स्वयं तैयार कर सकते हैं। जीवामृत खेती की उर्वरा शक्ति को उसी तरह बढ़ाता है जैसे कि दही की अल्प मात्रा दूध को दही बना देती है। एक एकड़ भूमि के लिए जीवामृत, देशी गाय के एक दिन के गोमूत्र व गोबर से तैयार हो सकता है। जीवामृत से उत्पन्न होने वाले जीवाणु के किसान सबसे बड़े मित्र हैं। केंचुएँ की सक्रियता भूमि में गहरे तक जल रिसाव को बढ़ाती है, इससे जल संचयन क्षमता भी बढ़ती है।

गौ-आधारित कृषि पद्धति में अनेक समस्याओं का समाधान है—यह कृषि देश

की अर्थव्यवस्था के लिए प्रगति का माध्यम साबित हो सकती है। हिमाचल प्रदेश में 2 लाख किसानों और गुजरात में लगभग 3 लाख किसानों द्वारा गौ-आधारित खेती की जा रही है। छत्तीसगढ़ में भी गौ-आधारित खेती भूमि का विस्तार बढ़ा है। खेती से जहाँ पर्यावरण संरक्षण हो सकेगा, वहीं किसानों की आमदनी दोगुनी और वह सशक्त और खुशहाल बनेंगे।

अतः गाय केवल दूध के लिए ही नहीं पाली जाए उसके गोबर, गोमूत्र के महत्व को समझा जाए। यह महत्व समाज में स्थापित हो, सामान्य गोपालक गाय के गोबर व गोमूत्र से उसे पाल सके। सामान्य किसान गौ मूत्र गोबर से अनाज बीज फल सब्जी परिवहन आदि आवश्यकताएँ पूर्ण कर सके।

कृषि गाय पर आधारित हो और गाय खेत पर। वर्तमान में दुनिया भर में प्राकृतिक कृषि उत्पादों की माँग बढ़ रही है इसका अधिक से अधिक लाभ किसानों को मिले।

गौआधारित कृषि के लिए ध्यान देने योग्य बातें— इस कृषि में देशी बीज ही प्रयोग करें। हाइब्रिड से अच्छे परिणाम नहीं मिलेंगे।

इस कृषि में भारतीय नस्ल की देशी गोवंश का ही उपयोग करें। जर्सी या होलस्टीन आदि हानिकारक हैं।

पौधों व फसल की पंक्ति की दिशा उत्तर-दक्षिण हो। दलहन फसलों की सह फसलें करनी चाहिए।

जैविक व रासायनिक खाद का तुलनात्मक अध्ययन—

जैविक खाद

1. जैविक, खासकर गोबर से बनी की खाद / उर्वरक में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं। (16पोषक तत्व)
2. जैविक उर्वरकों के उपयोग वाली भूमि में पानी की तुलनात्मक रूप से कम जरूरत पड़ती है।
3. अगले वर्ष भी उतनी ही अच्छी फसल के लिए जैविक उर्वरकों की उतनी ही मात्रा चाहिये। कुछ कम मात्रा चाहिये। कुछ कम मात्रा में भी काम चल जाता है।
4. जैविक खाद उर्वरक के निरंतर उपयोग के बाद यदि किसी कारण अगले 2 वर्षों तक नहीं डाल पाये तो पहिले वर्ष 70-75 प्रतिशत व दूसरे वर्ष 50 प्रतिशत फसल होगी।
5. जैविक खाद से मिट्टी के सूक्ष्माणु सक्रिय नष्ट रहते हैं। मिट्टी की उत्पादकता इन्हीं पर निर्भर करती है। ये मिट्टी को भूरभूरी बनाये रखते हैं अतः उसमें वायु का संचार निरंतर बना रहता है। एक मुट्ठी मिट्टी में लाखों सूक्ष्माणु होते हैं।
6. जैविक खाद के प्रयोग से उपज की गुणवत्ता तो होगी ही, वह स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी नहीं डालेगी।
7. अपनी गुणवत्ता के कारण जैविक खाद से उत्पादित फसल का बाजार भाव भी ऊँचा होगा।
8. दुनिया के विकसित देशों में जैविक खाद का अधिक उपयोग होने लगा है।

रासायनिक खाद

1. रासायनिक उर्वरकों में प्रत्येक पोषक तत्व के लिए अलग-अलग उर्वरक डालना पड़ता है जैसे नाइट्रोजन के लिये यूरिया, फास्फेट के लिए डी ए सी, पोटेशियम के लिए मोरेटोपोटाश।
2. रासायनिक उर्वरकों से उपज लेने के लिए अधिक पानी जमीन में देना पड़ता है।
3. फसल उत्पादन की मात्रा की निरंतरता के लिए रासायनिक उर्वरकों की मात्रा प्रतिवर्ष बढ़ाना आवश्यक है।
4. प्रथम वर्ष में न देने पर 10-20 प्रतिशत फसल मुश्किल से होगी व दूसरे वर्ष बिल्कुल फसल नहीं होगी।
5. रासायनिक उर्वरकों से मिट्टी के सूक्ष्माणु हो जाते हैं। इसके निरंतर उपयोग से जमीन पूर्णतः बंजर व अनुपजाऊ हो जाती है।
6. रासायनिक खाद से उत्पाद फसल में गुणवत्ता का अभाव व कई प्रकार के शारीरिक विकार व रोग हो सकते हैं।
7. उपज का बाजार में भाव कम हो जाता है।
8. दुनिया के सभी देशों में हतोत्साहित किया जा रहा है।

गाय धर्म और विज्ञान

9. जैविक खाद प्राकृतिक स्रोतों जैसे पौधे और पशु पदार्थ से प्राप्त होते हैं और रासायनिक रूप में संश्लेषित होते हैं।
9. रासायनिक खाद को कृत्रिम रूप में निर्मित किया जाता है।
10. जैविक उर्वरक अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है।
10. रासायनिक उर्वरक पर्यावरण के अनुकूल नहीं होते प्रतिफल प्रभाव छोड़ते हैं।

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसर की रिसर्च में खुलासा आप रोजाना खा रहे 0.65 म्यू ग्राम केमिकल



पत्रिका
पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भिलाई, सेहत बनाने के लिए फलों को बेहतर विकल्प माना जाता है। डॉक्टर और डाइटिशियन भी हमेशा ताजा फल खाने की सलाह देते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं जाने-अनजाने रोजाना 0.65 म्यू ग्राम केमिकल फलों के जरिए खा रहे हैं। यह खुलासा इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान वैज्ञानिक डॉ. गजेंद्र चंदाकर की रिसर्च में हुआ है।

दरअसल, मौजूदा दौर में भी छत्तीसगढ़ में फलों को पकाने में बे केमिकल इस्तेमाल हो रहे हैं जिन पर सरकार ने पाबंदी लगाई हुई है। फलों को पकाने और उनकी सेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए डीडीटी, इथरेल और जिब्रलिक का उपयोग घड़ल्ले से जारी है। यह केमिकल इतने खतरनाक हैं कि इनसे त्वचा की गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। यही नहीं टाइप-2 डायबिटीज, पीसीओडी का खतरा भी बढ़ सकता है। कीट वैज्ञानिक का कहना है कि हाल ही में विभिन्न देशों ने महाराष्ट्र के अंगूर को केमिकल की बेहद अधिक मात्रा की वजह से एक्सपोर्ट क्वालिटी में रिजेक्ट कर दिया है। यह प्रश्न महाराष्ट्र की विधानसभा में पहुंचा है। यही रिजेक्ट अंगूर और इस जैसे कई फल देश के विभिन्न राज्यों में पहुंच रहे हैं।

फलों को पकाने और सेल्फ लाइफ बढ़ाने प्रतिबंध के बाद भी डीडीटी इथरेल और जिब्रलिक जैसे केमिकल का इस्तेमाल जारी



30 से अधिक पेस्टिसाइड

साइटिफिक रिपोर्ट के मुताबिक बाजार में बिकने वाले सैकड़ों फलों में तीस से अधिक पेस्टिसाइड पाए गए हैं। इनमें से दो दर्जन से ज्यादा किटनाशक बेहद खतरनाक हैं, जिनमें कई मुल्कों में बंद कर दिया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि एक सीमा के बाद यह पेस्टिसाइड का इस्तेमाल स्वास्थ्य के लिए बड़ी बीमारियों को न्योता देने जैसा होता है।

यह हो सकता है साइड इफेक्ट

- बच्चों में समय से पहले नजर के चरम लगना।
- कॉन्सन्ट्रेशन लेवल में कमी।
- स्ट्रेस और भागीपन
- भूख न लगना।
- आंखों के नीचे कालापन
- कैंसर का खतरा
- अस्थिमा की संभावना

रखें खुद का ख्याल

- फलों का इस्तेमाल करने से पहले उन्हें कम से कम तीन घंटे पानी में डूबा कर रखें। इससे केमिकल का असर कम हो जाएगा।
- छिलके वाली फलों का इस्तेमाल करने से पहले उनके छिलके उतार दें।
- मौसमी फलों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें।
- हार्डीड फलों का इस्तेमाल कम से कम करें।
- बाजार से फल को लाने के बाद पानी में नमक और बेकिंग सोड मिलाकर उसमें फल को 15 मिनट के लिए छोड़ दें, इससे केमिकल मुक्त फलों का स्वाद लें पाएंगे।

केमिकल युक्त फलों की पहचान

- वैक्स किए सेब (एप्पल) को यदि गैस चूल्हे के बर्नर के करीब ले जाया जाए तो सेब तुरंत सिकुड़ना शुरू कर देता है।
- अंगूर को नमक के पाने में थोड़ी देर डुबोकर रखने से अलग सा रंग छोड़ेगा, जो विभिन्न केमिकल हैं।
- यदि केले का डंडल हरा है और केले के छिलके पीले हैं तो यह पूरी तरह से केमिकल में डुबोकर निकाले हुए केले हैं। हालांकि केले में इस केमिकल का साइड इफेक्ट कम होता है, क्योंकि बाहरी परत में इस्तेमाल नहीं होती।

फलों को पकाने के लिए कई तरह के केमिकल इस्तेमाल किए जा रहे हैं। जो प्रतिबंधित है। इससे गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। हर रोज फल खाने वाले रोजाना 0.65 म्यू ग्राम तक केमिकल ग्रहण करते हैं। इससे बचाने के लिए सावधानियां जरूरी हैं। खासकर बच्चों को फलों को कई बार पानी में धोने के बाद ही खाने को दें।

डॉ. गजेंद्र चंदाकर
कृषि वैज्ञानिक, आईसीकेवी

डाइक्लोवास का अभी भी इस्तेमाल

सेब और अंगूर की फसल का यह मौसम नहीं है। फिर भी बाजार में इन फलों की उपलब्धता पर कोई असर नहीं दिखता। आखिर ये बेमौसम फल बाजार में कैसे आ जाते हैं। सेब को मंडी में लाकर कई महीनों तक कोल्ड स्टोर में रखा जाता है। इससे पहले बाकायदा इसकी बैक्टीरियेशन होती है ताकि ये अधिक समय तक टिके रहें। इसी तरह अंगूर को टिकाऊ बनाए रखने के लिए डाइक्लोवास 26 इसी नाम के केमिकल का इस्तेमाल किया जाता है। अंगूरों को तोड़ने के बाद इन्हें केमिकल के घोल में डूबोकर निकाला जाता है।

भारत में प्रतिबंधित कीटनाशकों की पूरी सूची-नवीनतम जानकारी

भारत सरकार ने कीटनाशकों के उपयोग को लेकर कई अहम कदम उठाए हैं, जिसमें कुछ कीटनाशकों पर पूरी तरह प्रतिबंध, कुछ पर आंशिक प्रतिबंध और कुछ को केवल निर्यात के लिए उपयोग करने की अनुमति दी गई है। यह सूची 31 मार्च 2024 को कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले पौधे संरक्षण, संगरोध और भंडारण निदेशालय द्वारा जारी की गई है। यह कदम कृषि के क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ाने के लिए उठाया गया है।

1. अलाक्लोर
2. एल्डिकार्ब
3. एल्ट्रिन
4. बेंजीन हेक्साक्लोराइड
5. बेनोमाइल
6. कैल्शियम साइनाइड
7. कार्बारिल
8. क्लोर्बेन्जिलेट
9. क्लोर्डेन
10. क्लोरोफेन्विनफोस
11. कॉपर एसेटोआर्सेनाइट
12. डायजिनोन
13. डिब्रोमोक्लोरोप्रोपेन
14. डायक्लोरोवोस
15. डाइकोफोल

16. डिनोकैप
17. एंडोसल्फान (कोर्ट आदेश के तहत प्रतिबंधित)
18. एंद्रिन
19. इथाइल मर्करी क्लोराइड
20. इथाइल पैराथियॉन
21. इथिलीन डिब्रोमाइड
22. फेनारिमोल
23. फेन्थिओन
24. हेप्टाक्लोर
25. लिंडेन
26. लिन्यूरॉन
27. मैलेइक हाइड्रजाइड
28. मेनाजोन
29. मेथोनिल
30. मिथॉक्सी एथाइल मर्करी क्लोराइड
31. मिथालड पैराथियॉन
32. मेटॉक्सुरॉन
33. नाइट्रोफेन
34. पैराक्वाट डाईमेथाइल सल्फेट
35. पेटाक्लोरो नाइट्रोबेंजीन
36. पेंटाक्लोरोफेनॉल
37. फेनाइल मर्करी एसिटेट
38. फॉरेट
39. फॉस्फामिडोन

40. सोडियम साइनाइड (कीटनाशक उद्देश्यों के लिए प्रतिबंधित)

41. सोडियम मीथेन आर्सेनेट
42. टेट्राडिफोन
43. थियोमेटोन
44. टॉक्साफेन
45. ट्रायजोफॉस
46. ट्राइडेमोर्फ
47. ट्राइक्लोरोएसिटिक एसिड
48. ट्राइक्लोर्फेन ।

केवल नियांत के लिए निर्माण की अनुमति इन कीटनाशकों का उपयोग भारत में प्रतिबंधित है लेकिन इनका निर्माण निर्यात उद्देश्यों के लिए जारी है ।

1. कैप्टाफोल 80 प्रतिशत पाउडर
2. डायक्लोरोवोस
3. निकोटिन सल्फेट
4. फॉरेट
5. ट्रायजोफॉस

पंजीकरण नकारा गया, इन कीटनाशकों को पंजीकरण से मना कर दिया है, जिससे इनका भारत में उपयोग नहीं किया जा सकता ।

1. 2,4,5-T
2. अमोनियम सल्फमेट
3. अजिनफॉस एथिल
4. अजिनफॉस मिथाइल
5. बिनापाक्रिल

6. कैल्शियम आर्सेनेट

7. कार्बोफेनोथियोन
8. चिनोमेथियोन
9. डाइक्लोरोफॉस
10. ईपीएन
11. फेंटिन एसिटेट
12. फेंटिन हाइड्रॉक्साइड
13. लीड आर्सेनेट
14. लेप्टोफॉस
15. मेफोस्फोलन
16. मेविनफॉस
17. थियोडेमेटोन
18. वामिडोथियोन

उपयोग के लिए प्रतिबंधित कीटनाशक ये कीटनाशक विशेष परिस्थितियों में ही उपयोग की अनुमति रखते हैं ताकि इनका स्वास्थ्य और पर्यावरण पर कम से कम नकारात्मक प्रभाव हो ।

1. एलुमिनियम फॉस्फाइड—केवल सरकार द्वारा अनुमोदित ऑपरेटरों द्वारा उपयोग ।

2. कैप्टाफोल— पत्तियों पर छिड़काव के लिए प्रतिबंधित, लेकिन बीज उपचार के लिए अनुमोदित ।

3. कार्बोफ्यूरेन— कुछ विशिष्ट संरचनाओं में ही उपयोग की अनुमति ।

4. क्लोरपाइरीफॉस— बेर, साइट्रस और तम्बाकू पर उपयोग के लिए प्रतिबंधित ।

5. साइपरमेथ्रिन— केवल पेशेवर पेस्ट कंट्रोल ऑपरेटरों द्वारा उपयोग।

6. डी.डी.टी.— केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में उपयोग की अनुमति।

7. मलाथियॉन— फसलें जैसे कि ज्वार, मटर, सोयाबिन आदि पर उपयोग के लिए प्रतिबंधित।

8. मिथाइल ब्रोमाइड— सरकार द्वारा अनुमोदित ऑपरेटरों द्वारा उपयोग।

9. मोनोक्रोटोफॉस— सब्जियों पर उपयोग के लिए प्रतिबंधित।

10. ट्राइफ्लुरालिन— केवल गेहूँ की खेती के लिए उपयोग की अनुमति।

ऐसे कीटनाशक भी शामिल हैं जिनका निर्माण और निर्यात तो जारी है, लेकिन देश के अंदर उनका उपयोग प्रतिबंधित है। भारत सरकार लगातार कीटनाशकों की निगरानी और नियंत्रण कर रही है ताकि किसानों और उपभोक्ताओं दोनों की सुरक्षा मिल सके।

●●

21. जैविक खाद, समाधि खाद एवं कीट नियंत्रक का निर्माण

मनुष्य ने हजारों वर्ष पूर्व कृषि संस्कृति अपनाई। कृषि शोधकर्ता ऋषभदेव कुशल कृषक थे। कृषि कार्य में सहायक बना वृषभ (बैल) तपस्वी गृत्समद ने कपास से रूई व रूई से सूत का धागा निकालना सिखाया। उपनिषद् रूपी गायों का दोहन करने वाले गोपाल कृष्ण ने हलधर (बलराम) की अगुआई में बिना कृषि गोपालन किए मौज मस्ती करने वाले शासकों का शासन पलटा। वराह मिहिर ने वृहद् संहिता में 4000 वर्ष पूर्व ही किस फसल के लिए कौन-सी खाद होनी चाहिये और वह खाद कैसे तैयार की जायेगी इसकी विधि बताई है। भारत में खेती का इतिहास 10 हजार वर्षों से भी पुराना है। गेहूँ, चावल, मक्का, फल सब्जियों का जैविक तरीके से खेती का विकास भारत में हुआ। वैद्य सुरपाल ने एक हजार वर्ष पूर्व वृक्षा युर्वेद में विविध प्रकार के जैविक खाद का वर्णन किया है। और कीट नियंत्रकों का वर्णन किया है।

जैविक खाद खास कर जो गोबर से बनी होती है उसमें सभी पोषक तत्व होते हैं इन तत्वों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है—

प्रमुख घटक माध्यमिक घटक निम्न घटक

- | | | |
|--------------|---------------|---------|
| 1. नाइट्रोजन | 1. कैल्शियम | 1. जिंक |
| 2. फास्फोरस | 2. मैग्नीशियम | 2. कॉपर |
| 3. पोटेशियम | 3. सल्फर | 3. लोहा |
| | 4. बोरॉन | |
| | 5. क्लोराइड | |

6. सिलिकान

7. मालिनिडेनम

जैविक खाद का उपयोग वाली भूमि में पानी की कम जरूरत पड़ती है। जैविक खाद की प्रतिवर्ष उतनी ही मात्रा पर्याप्त होती है जितनी पहिले डाली गई यदि एक वर्ष नहीं भी डाली जाये तो भी 75 प्रतिशत फसल हो जाती है।

जैविक खाद मिट्टी को भुरभुरी बनाये रखते हैं जिससे उसमें वायु का संचार निरन्तर बना रहता है।

पिछले कुछ वर्षों से पूरे विश्व में जैविक खेती एक महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बन गयी है। विशेष रूप से कई पश्चिमी देश रासायनिक विधि से खेती छोड़कर धीरे-धीरे जैविक खेती की ओर मुड़ते जा रहे हैं। मोटे तौर पर जहाँ रासायनिक खेती में यूरिया, अमोनिया, सल्फेट, एन.पी.के. इत्यादि रासायनिक खादों का तथा रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग होता है, जैविक खेती में गोबर की खाद, कम्पोस्ट तथा प्राकृतिक स्त्रोतों से प्राप्त कीटनाशक जैसे नीम इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की जैविक खेती से प्राप्त खाद्य पदार्थों को साधारणतः जैविक खाद्य पदार्थ अथवा आरगैनिक फूड कहा जाता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरे विश्व में खेती में रासायनिक खाद, जहरीले कीटनाशक

इत्यादि का प्रयोग तेजी से बढ़ा। 1943 में से हरित क्रांति के नाम पर पूरे विश्व में तेजी से कृषि का सत्यानाश प्रारंभ हुआ। जैविक खेती के माध्यम से ही मानवजाति को स्वस्थ समृद्ध और आनंदमय जीवन प्राप्त हो सकता है। मिट्टी में अनेक प्रकार के जीवाणु पहले से ही मौजूद हैं जो हवा पानी से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैश तथा कई खनिज जैसे आवश्यक पोषक तत्व बनाकर पेड़-पौधों को उपलब्ध कराते हैं। इन जीवाणुओं को मिट्टी में रहने वाले केंचुएँ अपने गति और पाचन कुशल प्रबंधन से और उर्वरकता प्रदान कर देते हैं। गाय का गोबर इन केंचुओं तथा मिट्टी के जीवाणुओं को अधिक पौष्टिक और क्षमता प्रदान करता है और जब पौध बढ़ते हैं पत्तियाँ फूल, फल की संख्या रस-गंध भी बढ़ जाते हैं। जिसके कारण पेड़-पौधों में कीट-पतंग का प्रकोप आ जाता है। लेकिन इससे डरने या घबराने की जरूरत नहीं बल्कि इन्हें नियंत्रित करने की जरूरत है। गौ मूत्र और उनके प्रकार के औषधीय पत्तियों जैसे—नीम बेल तुलसी करंज धतुरा मंदार, सीताफल लहसून मिर्च आदि के द्वारा भी कीट नियंत्रक बनाया जाता है। और यह बहुत प्रभावकारी भी है। इन कीट नियंत्रकों का अंश ज्यादा देर बचता नहीं है मानव शरीर में जाता भी है तो हानि नहीं होती है कारण सभी पदार्थ जैविक है। जैविक खेती में सिंचाई के लिए पानी कम लगता है। मिट्टी के जीवाणु जैविक है। जैविक

खेती में सिंचाई के लिए पानी कम लगता है। मिट्टी के जीवाणु मरते नहीं बल्कि जैविक खाद के कारण और पुष्ट हो जाते हैं। फसल में लगने वाले कीट पतंग को पौधों के ही रस से नियंत्रित करने से जीव समूह की हानि नहीं होती है और फसल भी सुरक्षित रहती है। इस प्रकार पर्यावरण में हो रहे व्यापक नुकसान को बचाने और मनुष्यों में हो रही अनेक प्रकार की बीमारियों की रोकथाम में जैविक खेती एक कारगर प्रयत्न होगा। लगभग 100 देशों में जैविक खेती का विकास पिछले दो-तीन वर्षों में 20 से 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ा है।

पचास वर्ष पूर्व जब रासायनिक खाद और कीटनाशकों को कोई नहीं जानता था तब तक, किसान जो खेती करते थे वह सैकड़ों वर्षों से चली आ रही परम्परागत खेती थी जिसमें न तो यूरिया की आवश्यकता होती थी और न ही जहरीले कीटनाशकों की। इन सैकड़ों वर्षों की पुरानी व्यवस्था को अवैज्ञानिक घोषित कर 1950 के दशक से 'अधिक अन्न उपजाओं' नामक कार्यक्रम शुरू हुआ और रासायनिक खाद जैसे यूरिया व सुपर फास्फेट के कारखाने लगे। किसानों को अनुदान पर ये उर्वरक उपलब्ध कराये जाने लगे।

विगत पचास वर्षों में उपज तो बढ़ी परन्तु पर्यावरण के दूषित हो जाने की कीमत पर कृत्रिम आनुवांशिक परिवर्तित अनाज (Genetically modified food, GMF) के बीज बनने लगे।

यदि ठीक पद्धति से जैविक खाद तैयार की जाये तो भारत के खाद की समस्या हल हो जायेगी। छत्तीसगढ़ के कुछ प्रतिशत किसान ग्रामीण कृषि पशुपालन और उनके उत्पाद तथा अपशिष्ट पदार्थ का उपयोग स्थानीय स्तर पर कृषि एवं उस पर आधारित कार्यों में कर रहे हैं। जैविक खेती के लिए गोबर का उपयोग वर्मी खाद बनाने तथा गौमूत्र का उपयोग कीटनाशक तथा जीवमृत बनाने में किया जा रहा है। वर्तमान में प्रचलित पद्धतियों में अनेक किसानों द्वारा गौमूत्र को पाँच प्रकार की पत्तियों जैसे—नीम, करंजी, पपीता, सीताफल और मदार के साथ उबालकर ढंडा किया जाता है और छिड़काव हेतु विक्रय किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ में जैविक खेती के माध्यम से तिल, अलसी, कोदो कुटकी की खेती वृहद स्तर पर की जाती है। कई औषधीय पौधों की फसलें ली जाती हैं। संभावनाएँ अपार हैं किन्तु मृदा सुधार की चुनौतियों का सामना कर रहे किसान को गौ आधारित खाद निर्माण के प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता है।

जैविक कृषि फसल—पशुपालन का संगठित स्वरूप कृषकों को वर्षभर आय उपलब्ध कराता है। गोबर जैविक फसल लेने के लिए संसाधन की उपलब्धता भी सुनिश्चित करता है।

रिसर्च इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्गेनिक एग्रीकल्चर के एफ आई बी एल सर्वे 2022 की रिपोर्ट में इस ट्रेंड का खुलासा हुआ है कि

भारत दुनिया के शीर्ष तीन ऐसे देशों में सम्मिलित है जहाँ जैविक कृषि क्षेत्र में सर्वाधिक विस्तार हुआ है। इनमें छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि ऐसे राज्य हैं जहाँ जैविक कृषि भूमि का विस्तार हो रहा है।

जैविक खाद

जैविक खाद बनाने के लिए मूलतः गोबर, कृषि कचरा जो पौधों के डंठल, केले के पत्ते-तने, गन्ने के भूसे, डंठल, पेड़ की पत्तियाँ, घरेलू-सब्जियों के छिलके, नारियल के भूसे-पत्ते, पशुओं के मल, मुर्गियों के बीट, सब्जी मण्डी के सड़े बचे सब्जियाँ आदि की आवश्यकता होती है इसके अलावा कोई भी सड़ने वाले कृषि पदार्थ खाद बन सकते हैं। पर इन सभी में गाय-बैल का गोबर सर्वोत्तम है। अपने देश में अनेक तरीके से जैविक खाद बनाये जाते हैं पर जो पद्धति हम सरलता से ग्रामीण परिवेश में सामान्य तरीके से बना सकें उन्हीं का यहाँ वर्णन किया गया है।

साधारण ग्रामीण किसान हेतु-ढेर पद्धति

सामग्री—1 टन कृषि कचरा (घास-फूस-पत्ता आदि), 1 टन पुराना गोबर, 20 किलो ताजा गोबर, 100 लीटर पानी इत्यादि।

नोट—उपलब्धता के अनुसार पुराना गोबर कम या ज्यादा हो चलेगा, ताजा गोबर ज्यादा उपलब्ध हो तो ज्यादा घोल तैयार करके छिड़कना उचित रहेगा।

पूर्व तैयारी—(1) पहले पुराने सूखे गोबर को 20 या 30 लीटर पानी से अच्छी तरह गिला कर लें।

(2) 20 किलो ताजा गोबर को 60 लीटर पानी में अच्छी तरह मिलाकर घोल बना लें।

बनाने की विधि— (क) (1) किसी बड़े पेड़ के नीचे जमीन को साफ और समतल करके 7 फीट लम्बा, 1 फीट चौड़ा तथा 1 फीट गहरा नाला खोद लें। नाले के ऊपर पौधों के मोटे डंठल को आपस में सटा के आड़ा करके पूल की तरह रख दें ताकि दो टन भार सह सके।

(2) नाले के दोनों तरफ एक-एक फीट छोड़कर 5 गुना 5 फीट की परिधि में जमीन पर 2 लीटर गोबर घोल का छिड़काव कर लें।

(3) अब इस 5 फीट की परिधि के ऊपर आठ इंच मोटी कृषि कचरे का परत ठीक तरह से डालें।

(4) इस कचरे के ऊपर 8 लीटर गोबर घोल का चारों तरफ छिड़काव करें।

(5) अब यह एक फीट का एक परत बन गया है इस प्रकार एक के ऊपर एक कुल सात या आठ बार कृषि कचरे की आठ इंच परत, फिर आठ लीटर गोबर घोल का छिड़काव फिर 4 इंच का गीला पुराना गोबर की परत डालने की क्रिया को दोहराते जाएँ।

(6) आठ परत डालने पर ढेर दबकर 5 फीट की ऊँचाई तक हो जाएगा।

(7) इस पाँच फीट की ढेर को मिट्टी और गोबर के मिश्रण से जमीन से लेकर ऊपर तक अच्छी तरह लिपाई कर दें। चार या पाँच दिनों के बाद यह ढेर सूखकर जगह-जगह टूट सकता है। अतः फिर से एक बार गोबर से लिपाई कर लें। तीन या चार दिनों के अंतराल पर 10 लीटर पानी का संभव हो तो

छिड़काव करते रहें। इससे नमी बनी रहेगी और सड़न प्रक्रिया ठीक तरह से होगी।

(ख) (1) अब फिर से 20 किलो ताजा गोबर और 60 लीटर पानी का घोल तैयार कर लें।

(2) 30 दिनों बाद इस ढेर को तोड़कर फावड़े से आपस में अच्छी तरह मिलाकर नाले के बगल में रख लें।

(3) 7 फीट लम्बे नाले को साफ करके ऊपर फिर से डंठल रखकर 5 फीट की परिधि में गोबर घोल को छिड़क लें।

(4) एक माह पुराने ढेर को एक-एक फीट की ऊँचाई में डालते जाएँ और प्रति परत 20 लीटर गोबर घोल का छिड़काव करते जाएँ।

(5) ढेर अब मात्र तीन फीट का हो जाएगा। गोबर और मिट्टी के मिश्रण से पूरे ढेर की फिर से लिपाई कर लें। पूर्व की ही तरह इस माह भी तीन या चार दिनों के अंतराल पर 10 लीटर पानी का छिड़काव करते रहें।

(ग) (1) अब फिर से 20 किलो ताजा गोबर और 60 लीटर पानी का घोल तैयार कर लें।

(2) 30 दिनों बाद इस ढेर को फिर से तोड़कर फावड़े से पदार्थ को आपस में अच्छी तरह मिलाकर एक तरफ रख लें।

(3) नाले को साफ करके ऊपर फिर से डंठल रखकर 5 फीट की परिधि में गोबर घोल को छिड़क लें। दो माह पुराने पदार्थ को एक-एक फीट की ऊँचाई में डालते जाएँ और प्रति परत या तह, 20 लीटर गोबर घोल का छिड़काव करते जाएँ।

(4) ढेर अब मात्र दो या ढाई फीट का हो जाएगा। गोबर और मिट्टी के मिश्रण से पूरे ढेर की फिर से लिपाई कर लें। पूर्व की ही तरह इस माह भी ढेर पर तीन या चार दिनों के अंतराल पर 10 लीटर पानी का छिड़काव करते रहें।

(घ) (1) फिर से 30 दिनों बाद उपरोक्त (ग) प्रक्रिया को पूरी तरह दोहराना है। पर तीसरे बार गोबर घोल को 6-6 इंच के परत या तह में छिड़काव करना है। बाकी सभी प्रक्रिया पूर्वानुसार ही होगा।

(2) 90 दिनों बाद पूरा ढेर उत्तम खाद बन जायेगा। अब इसे अपने खेत में उपयोग कर सकते हैं।

नोट—यह खाद अपने खेत में उपयोग के लिए तो ठीक है चूँकि इसमें मिट्टी मिला है। अतः बिक्री हेतु उचित नहीं है।

कीट नियंत्रक

सामग्री—(1) 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा, (2) 10 लीटर गौ मूत्र, (3) 2 किलो नीम पत्ता, (4) 1 किलो बेल पत्ता, (5) 1 किलो धतुरा पत्ता, (6) 1 किलो आँक का पत्ता, (7) 250 ग्राम तुलसी पत्ता, (8) 50 ग्राम लहसुन, (9) 50 ग्राम हरी मिर्च।

बनाने की विधि—(1) घड़े में 10 लीटर गौमूत्र को लें, 2 किलो नीम पत्ते को कूटकर घड़े में डालें, बारी-बारी से बेल, आँक, धतुरे और तुलसी के पत्तों को कूटकर घड़े में अच्छी तरह मिला दें। अब 50 ग्राम हरी मिर्च और

50 ग्राम लहसुन को कूटकर मिला दें। इसे 7 दिनों तक सड़ने दें।

अमृत जल

सामग्री—10 लीटर गौ मूत्र, 10 किलो ताजा गोबर, 500 ग्राम खाने वाला गुड़, 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा।

(1) घड़े में 10 लीटर गौ मूत्र लें, 500 ग्राम गुड़ को उसमें अच्छी तरह मिला लें, 10 किलो गोबर को भी उसमें डालकर ठीक तरह से मिला दें।

(2) इसे अब 7 दिनों तक सड़ने दें।

(3) 7 दिनों बाद इस घोल में 100 लीटर साफ पानी मिलाकर खेत के मिट्टी में छिड़कें।

नोट—इससे मिट्टी की उर्वरकता बढ़ जाती है और पौधों पर इसका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

रसायनिक खाद व कीटनाशक समाप्त हो तथा उसकी जगह पर गोबर, गोमूत्र आदि से बनी जैविक (सेन्द्रिय) खाद काम में आने लग जाये तो भारत के गावों के किसानों का प्रतिवर्ष 48 हजार करोड़ रुपया बचेगा। करोड़ों लोगों को अपने ही गाँव में रोजगार मिलेगा। भूमि की उर्वरा शक्ति बची रहेगी। मानव जीवन सुरक्षित रहेगा। पर्यावरण शुद्ध रहेगा।

जैविक खाद (सेन्द्रिय खाद) बनाते समय निम्न बातों को ध्यान में रखें—

1. जहाँ पर खेत हो या गौशालाएँ हो वहीं पर खाद बनायें।

2. बारिश का पानी बह कर खाद वाले स्थान पर न आये।

3. यथा संभव खाद छायादार स्थान पर बनावें।

4. कचरे का छोटा-छोटा टुकड़ा करके काम में लें।

5. कचरा विविध प्रजाति का होगा तो खाद में विविध तत्व आयेंगे।

6. कंकड़-टीन, रबड़ प्लास्टिक के टुकड़े अलग करें।

7. रवानुमा दाना, मिट्टी की सुगंध और सुनहरा सुहानी रंग खाद उक्ताम पकने के तीन लक्षण है।

8. अधपकी खाद को छान कर अलग करलें तो पुनः खाद बनाने में इस्तेमाल करें।

9. तैयार खाद को छाँव में रखे तथा नमी बनाये रखने के लिए थोड़ा पानी छिड़कते जायें।

भारत की पूरी खेती योग्य भूमि 60 करोड़ एकड़ है जिसके लिए 300 करोड़ टन खाद चाहिये। यदि प्रत्येक गाय से प्रतिवर्ष 30 टन खाद का निर्माण किया जा सके तो हमारे पास 10 करोड़ गायें कम से कम चाहिये परंतु दुर्भाग्य वश उतनी गायें हैं नहीं तथा प्रतिवर्ष घटती जा रही है।

जैव उर्वरकों की आवश्यकता निम्न कारणों से हुई है—

1. रासायनिक खादों के निरन्तर व अधिक उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होती जा रही है।

2. खेती में ट्रैक्टरों आदि के मशीनीकरण के कारण गोवंश व गोबर की खाद की दिनो-दिन कमी होती जा रही है।

3. लवणयुक्त पानी की कमी के कारण लाभकारी जीवाणुओं की संख्या में कमी होती जा रही है।

4. रासायनिक खाद के उपयोग के कारण अनाज के जहरीपन बढ़ता जा रहा है।

5. रासायनिक खाद के कारण लोगों में कैंसर, अस्थमा व श्वास संबंधी बीमारियाँ बढ़ती जा रही है।

जैसे दूध से दही बनाने के लिए जीवाणुओं की आवश्यकता रहती है वैसे ही जमीन में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए सूक्ष्म जीवाणुओं (जैविक उर्वरकों) की आवश्यकता रहती है।

रासायनिक खादें अप्राकृतिक हैं तथा इनके प्रयोग की अधिकता से कई तरह की बीमारियाँ तथा दुष्परिणाम होने लगे हैं। जबकि जैव उर्वरक पूर्ण रूप से प्राकृतिक हैं। इनकी अधिक मात्रा का भी कोई नुकसान नहीं है। गाय का गोबर मिट्टी में रहने वाले केंचुओं और जीवाणुओं को अधिक पौष्टिक और क्षमता प्रदान करता है। जैविक खाद की वजह से मिट्टी के जीवाणु और अधिक पुष्ट हो जाते हैं।

श्री वेणीशंकर एन वसु की पुस्तक “इंग इज गोल्ड माईन” में स्पष्ट किया है कि गोबर में हमें सस्ता और श्रेष्ठ जैविक खाद तथा इससे उत्पन्न पौष्टिक व स्वादिष्ट खाद्यान्न, सब्जियाँ और फल कम लागत पर मिल सकते हैं। प्रसिद्ध भू-रसायन विशेषज्ञ डॉ. एच एल

कोड़ ने कहा भी है कि आधुनिक कृषि से रोग तथा कीटाणु बढ़ते हैं, क्योंकि उर्वरकों का इस्तेमाल बढ़ा है। वही परम्परागत कृषि से जमीन की उर्वरा शक्ति कायम रहती है। एक गाय के वार्षिक गोबर से लगभग 80 टन खाद तैयार होती है। जिसकी कीमत रसायनिक खाद के भावों के अनुसार लगभग रुपये 40000 होती है अर्थात् एक गाय मात्र गोबर से प्रतिमाह रु. 3300 की आय कराती है। डॉ. बी. के. हांडा ने परीक्षण करके सिद्ध किया है कि रसायनिक उर्वरक के कारण भूमिगत जल धीरे-धीरे दुषित होता जा रहा है।

मुक्तसर भटिंडा तथा लुधियाना जिले के 50 गावों में व्यापक शोध अध्ययन किया गया जिसमें रासायनिक जहर की मात्रा पानी, मिट्टी में अत्यधिक पायी गई जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के मापदण्डों से बहुत ज्यादा थी लंदन के ही UCLA स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ रिसर्च ने पाया कि इन रासायनिक खाद कीटनाशकों के कारण पार्किन्सन नाम की बीमारी लोगों में तेजी से बढ़ रही है।

समाधि खाद

गाय हमें अपने जीवन काल में दूध, गोबर गोमूत्र और अनेक बछड़ा-बछड़ियाँ देती हैं। बैल को हल जोतने और माल ढोने के लिए उपयोग करते हैं। गाय का दूध प्रतिदिन हम पीते हैं और गोबर, गोमूत्र से खेती करके अनाज, सब्जी, फल-फूल खाते हैं। जब गाय दूध नहीं देती और बैल कार्य योग्य नहीं होता

है तब भी उसके गोबर तथा मूत्र से अनेक लाभ खेतों की उर्वरकता के लिए लेते हैं। पग-पग पर वह हमसे, खेत से और वनस्पतियों से जीवन भर जुड़ी हुई रहती है। वह हमारे परिवार का एक अभिन्न सदस्य है। इसलिए अपने परिवार के सदस्य की तरह ही उसकी अंतिम क्रिया करना आवश्यक है। इससे भी मनुष्य, खेत और वनस्पतियों को ही लाभ होगा।

अतः जब बूढ़ी गाय या बैल स्वतः मृत हो जायें तो अपने ही खेत में समाधिस्थ कर दें। यह हमारे लिए अत्यंत पुण्यकर होगा, क्योंकि गाय को पृथ्वी का प्रतिरूप कहा गया है। गाय के पेट में वही सारे सूक्ष्मजीव हैं जो पृथ्वी की मिट्टी में हैं, अतः जब गाय को अपने खेत में समाधिस्थ करते हैं तो धरती की मिट्टी में वही सूक्ष्म जीवाणु पनप जाते हैं। समाधिस्थ गाय के खाद को वापस खेत में ही डालने से केंचुएँ और जीवाणु की गुणात्मक तथा संख्यात्मक वृद्धि से भूमि की उर्वरकता में अत्यधिक वृद्धि होती है।

बनाने की विधि

स्वतः मृत गाय को चमड़े सहित समाधिस्थ करना चाहिए, आवश्यक हो तो मात्र सींग निकाल लें, जिससे सींग खाद बनाने में उपयोग हो सकेगा। देशभर में अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग आकार, प्रकार की गायें हैं। स्वतः मृत गाय के आकार, प्रकार के अनुसार अपने खेत में गड्ढे खुदवाएँ जैसे—

गाय छोटी हो, 200 से 250 किलो की हो तो 5 गुना, 3 गुना, 3 गुना लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनवाएँ। यदि गाय मध्यम हो, 400 से 600 किलो की हो तो 7 गुना, 4 गुना, 4 गुना लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनवाएँ और यदि गाय बड़ी हो 700 से 990 किलो की हो तो 8 गुना, 5 गुना, 5 गुना लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनवाएँ। गाय यदि गौशाला की हों तो सामूहिक समाधिस्थ करना उपयुक्त होगा, इसके लिए गायों की संख्या के अनुसार ही लंबाई-चौड़ाई, गहराई करें।

यहाँ मध्यम गाय के लिए एक प्रयोग दिया जा रहा है—

खेत में $7 \times 4 \times 4$ लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनाएँ। पहले गड्ढे में 6 इंच तक ताजा गोबर डालें फिर मृत गाय को उसके ऊपर सुला दें। 50 किलो समुद्री नमक गाय पर डालें और अंत में गाय के ऊपर गोबर डालकर ढँक दें। अंत में सारी मिट्टी डालकर समाधि बना दें। एक या डेढ़ वर्ष बाद वहाँ खोदकर खाद निकाल लें। इसमें हड्डियाँ, खुर, बाल आदि बचे होंगे इसे वापस गड्ढे में डालकर मिट्टी डाल दें।

यह उत्तम खाद होगा जिसमें फॉस्फोरस, पोटॅश, नाइट्रोजन आदि अनेक पौष्टिक तत्व खेत के पौधों, फसलों को सालभर प्राप्त होगा अगर खाद नहीं निकालना (श्रद्धा के कारण) है तो वहाँ कोई फलदार वृक्ष रोप दें इससे वह पेड़ जीवनभर भरपूर स्वादिष्ट फल देता रहेगा।

घनजीवामृत

यह भी एक प्रकार का जैविक खाद ही है।

सामग्री

1. देशी गाय का ताजा गोबर — 100 किलो
2. देशी गाय का ताजा गोमूत्र — 5 किलो
3. चने का आटा (बेसन) — 1 किलो
4. खाने वाला गुड़ — 1 किलो
5. तालाब या बरगद पेड़ की

जड़ या जंगल की मिट्टी — 1 किलो

बनाने की विधि

गोमूत्र में गुड़ तथा बेसन का अच्छी तरह घोल तैयार कर लें।

गाय के ताजे गोबर को किसी कमरे में एक प्लास्टिक की पन्नी में छः इंच मोटाई में फैला लें।

अब गोबर के ऊपर जंगल या तालाब या बरगद के पेड़ के नीचे की मिट्टी को ठीक तरह से छिड़क दें फिर इसके ऊपर बेसन-गुड़ के घोल को भी ठीक तरह से डालकर फावड़े से पूरे गोबर में मिला दें।

अच्छी तरह मिलाने के बाद बोरी से ढँककर दो दिनों के लिए छोड़ दें। दो दिनों के बाद इसका गोड़ठा या थापिया बनाकर छाँव में सुखा लें। ठीक तरह से सूखने के बाद इसका चूरा करके प्लास्टिक बोरी में भरकर रखें। खेत में हल चलाने के बाद एक एकड़ खेत के मिट्टी में छिड़काव करें। इससे मिट्टी की गुणवत्ता और उर्वरता दोनों बढ़ जाएगी। घनजीवामृत को छः माह तक संरक्षित रखकर प्रयोग किया जा सकता है।

जीवामृत प्रकार

देशी गाय के दूध का एक किलो घी बनाने के लिए 30 से 35 लीटर दूध की आवश्यकता होती है। दूध से दही बनाकर अच्छी तरह मथा जाता है। पानी डालते रहने पर मक्खन प्राप्त होता है जिसको गर्म करके घी प्राप्त किया जाता है। जब दही को पानी डाल-डालकर मथा जाता है तो मक्खन निकाल लेने पर छाछ बच जाता है। इस छाछ को ही जीवामृत बनाकर खेतों में प्रयोग करने से मिट्टी के गुण बढ़ जाते हैं। सूक्ष्मजीवियों की संख्या तथा क्रियाशीलता काफी बढ़ जाती है। जिससे फसलों को अच्छा पौष्टिक आहार मिलता है जिससे अधिक फूल, फिर अधिक उत्तम फल मिलता है। इससे न केवल खेत, पेड़-पौधों का बल्कि मनुष्य का भी स्वास्थ्य उत्तम होता है। छाछ में अत्यधिक जीवाणु की मात्रा पहले ही होती है अतः गुड़ मिलाने से उसकी वृद्धि हो जायेगी।

सामग्री

1. मिट्टी का घड़ा— 20 लीटर क्षमता
2. घी बनाने के बाद का छाछ— 10 लीटर
3. खाने वाला गुड़ — 1/2 किलो।

बनाने की विधि

गुड़ को एक लीटर छाछ में पहले ठीक तरह से घोल लें, फिर इस घोल को घड़े में डालकर बाकी छाछ को भी मिला दें। अच्छी तरह मिला देने के बाद कपड़े को घड़े से बाँध दें। सात दिनों तक इसको पकने के लिए छोड़ दें। आठवें दिन इसमें 100 लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ खेती की मिट्टी में डालें। खेत की उर्वरता अत्यधिक बढ़ जाएगी। मिट्टी के जीवाणु तथा केंचुओं में संख्यात्मक तथा गुणात्मक वृद्धि होगी, जिससे फसलों को अत्यधिक लाभ मिलेगा।



22. केचुआँ (किसानों का मित्र)

जैविक खेती का मूल आधार केंचुआ है। जिस खेत में जितना केंचुआ होगा उस भूमि की उर्वरकता उतनी ही ज्यादा होगी। वैज्ञानिकों का मत है कि एक घन मिट्टी में कम-से-कम 7 केंचुए होने ही चाहिए। केंचुओं के लगातार बिल बनाकर चलते रहने से जमीन भुरभुरी होकर हवा तथा पानी ग्रहण करती है। पौधों के लिए अपने मल से पोषण आहार तैयार करते हैं और सूक्ष्मजीवाणुओं का पोषण कर सक्रिय करते हैं। केंचुए भूमि के जैविक पदार्थों को पचाकर नयी मिट्टी बनाने का काम करते हैं।

केंचुआ की जानकारी

देशी केंचुए खेत में हमेशा पाये जाते हैं। खेतों में यदि रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल नहीं किया जाय तो केंचुओं की संख्या स्वतः ही बढ़ने लगेगी। ये केंचुएं स्वतः ही खाद बनाते रहते हैं। केंचुए की कुछ विशेष प्रजाति गोबर व अन्य कार्बनिक पदार्थों को खाकर खाद बना देती है।

केंचुओं की महत्ता व उपयोगिता

केंचुओं की उपयोगिता बहुत अधिक है। केंचुआ मानव जाति का विशेषतया किसान का मित्र है। इसे जमीन की आंत कहा जाता है क्योंकि यह भूमि को पलटने व उसे ऊर्वरा बनाने का कार्य करता है।

केंचुएं अपनी प्रजाति के अनुसार भूमि की ऊपरी सतह पर पड़े गल सड़ रहे कूड़ा करकट

की तह से लेकर भूमि की विभिन्न सतहों में रहते हैं। एक विशेषज्ञ के अनुसार केंचुए 2 से 250 टन मिट्टी प्रति हैक्टेयर प्रतिवर्ष उलट देते हैं। इसके अनुसार लगभग 1 से 5 मिली मीटर मिट्टी की सतह प्रतिवर्ष नीचे से ऊपर आ जाती है।

केंचुओं का पाचन तंत्र बड़ा ही व्यवस्थित रहता है। उसके द्वारा खाया गया आर्गेनिक वेस्ट उसकी आंतों में पूरी तरह चक्की जैसी पिसाई की प्रक्रिया से गुजरता है। अब जबकि जैविक खेती पर अधिकाधिक जोर दिया जा रहा है केंचुओं का उपयोग आर्गेनिक वेस्ट को आर्गेनिक मेन्योर में बदलने बायो-लोजिकल टूल्स के रूप में किया जा सकता है।

केंचुए प्रतिवर्ष प्रति एकड़ अनेक टन कास्ट (मल) पैदा करते हैं। ये मिट्टी के बनावट, जल के बहाव को बदल देते हैं। छत्तीसगढ़ में भी व्यवसायिक रूप में वर्मी कम्पोस्टिंग का कार्य प्रारंभ हुआ है परन्तु जन सामान्य में जागरुकता की आवश्यकता है।

यदि वर्मी कम्पोस्टिंग टेक्नोलॉजी को जन सामान्य तक पहुँचाकर लोकप्रिय बनाया जाये तो इससे न केवल कृषि को स्वावलम्बी, टिकाऊ व कम खर्चीली बनाया जा सकता है, बल्कि व्यावसायिक स्वरूप देकर कितने ही बेरोजगारों को स्वरोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है।

23. पंचगव्य चिकित्सा

आयुर्वेद अत्यंत प्राचीन शास्त्र है। यह अथर्ववेद में विस्तार से वर्णित है। आयुर्वेद के उत्थान के लिए गौ रक्षण अति आवश्यक है इससे पीड़ित रोगियों के रोग का निवारण होगा ताकि जनता स्वास्थ्य लाभ करेगी।

गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र का एक निश्चित अनुपात में मिश्रण पंचगव्य कहलाता है। प्रयोगशाला में किये गये परीक्षणों के अनुसार देशी गाय के गोमूत्र में 24 रसायन और गोबर में 16 खनिज तत्व होते हैं। इन तत्वों के कारण गौ-मूत्र व गोबर से विविध प्रकार की औषधियाँ बनती है और सौ से भी अधिक रोगों पर उनका अनुकूल प्रभाव पड़ा है। पंचगव्य में विशेष कर गोमूत्र में रोग निरोधक, रोग प्रतिरोधक एवं रोगोपचार की अद्भुत क्षमता है।

आयुर्वेद में पंचगव्य के विषद गुणों का वर्णन है। उसमें कहा गया है कि पंचगव्य परम पवित्र रसायन है, पथ्य है, हृदय को आनंद देने वाला, बल, बुद्धि प्रदान करने वाला है। रक्त के समस्त विकारों को दूर करने वाला, कफ, वात तथा पित्त जन्य तीनों दोषों, हृदय रोगों व तीक्ष्ण विष के प्रभाव को दूर करने वाला है। पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से अनुभवी आयुर्वेद विशेषज्ञ, वैद्यों व चिकित्सकों के निर्देशन में हजारों रोगियों की चिकित्सा की जा रही है। गुर्दा, मधुमेह, रक्तचाप, उदररोग, एसिडीटी, मेदवृद्धि, रक्त विकास,

सफेद दाग, श्वास, दमा, अस्थमा, बवासीर, दंतरोग, स्त्रीरोग, एक्जिमा, दाद, खाज, खुजली, नाक व कान की तकलीफ आदि बीमारियों का इलाज किया जा रहा है।

गायत्री मंत्र द्वारा गोमूत्र को, गौदुग्ध को, दधिकाणी मंत्र द्वारा गौदधि को, शुक्रमसि तथा ज्योतिरसी मंत्रों द्वारा गौघृत को तथा देवरस त्वा मंत्र द्वारा कुशोदक को अभिमंत्रित करके पंचगव्य में मिलाना चाहिए। इससे सात्विकता व प्रभावशीलता बढ़ जाती है। दो बातें विशेष ध्यान देने योग्य निम्नवत् है—

1. उपरोक्त देशी नस्ल की स्वस्थ गाय के होने चाहिए।

2. गोबर को ज्यों का त्यों मिश्रण में नहीं डालना चाहिए, बल्कि इसका रस प्रयोग में लाना चाहिए। (ताजे गोबर को सूती कपड़े में डालकर उसे निचोड़ने से गोबर का रस प्राप्त होता है।)

अनेक रोगों के काम आता है गोबर

गोबर चर्म रोगों में विशेष उपयोगी है। यह शरीर की दुर्गन्ध को दूर करता है। शरीर की कांति बढ़ाता है। सुश्रुत चिकित्सा अध्याय 5/18 में अपतानक रोग (धनुषवात टिटनेस) के रोग का उपचार गोबर से बताया है। सुश्रुत चिकित्सा अध्याय 16/22 में श्लैष्मिक विधि की चिकित्सा गोबर से करने का उल्लेख है। इसी ग्रंथ में मूषिक विषहर योग भी दिया है।

उदरशूल, रक्तपित्त, हिक्का रोग, कृमि रोग आदि में भी चिकित्सकों ने अनुभूत योग बनाकर रोगियों को लाभान्वित किया है।

- (1) गौ दुग्ध से उपचार
- (2) गौ दही से उपचार
- (3) गौ तक्र (छाछ) से उपचार
- (4) गौ घृत से उपचार
- (5) गौमूत्र से उपचार
- (6) गोबर से उपचार।

गोबर का चिकित्सा में उपयोग

(1) गाय के गोबर को सारे शरीर पर मलकर घूप में बैठने से खाज, खुजली आदि त्वचा रोग मिट जाते हैं।

(2) गोबर रोगों के कीटाणु और गंधों को दूर करता है।

(3) गोबर को उबालकर लेप करने से गठिया दूर हो जाता है।

(4) मृत गर्भ को बाहर निकालने के लिए गोबर का रस 7 तोला गाय के दूध में पिलाना चाहिए।

(5) गुदा भ्रंश के लिए गोबर गरम करके सेक करना चाहिए।

(6) पसीना बंद करने के लिए सुखाये हुए गोबर और नमक रखने के पुराने मिट्टी के बर्तन इन दोनों के चूर्ण को शरीर पर लेप करना चाहिए।

(7) शीतला के फूट निकले छालों पर गाय के गोबर को सुखाकर, जलाकर राख को कपड़े से छानकर उससे भर दें।

(8) पेट में छोटे-छोट कृमि हुए तो गोबर की सफेद राख, दो तोला लेकर 10 तोला पानी में मिलाकर पानी कपड़े से छान लें। तीन दिन सवेरे-शाम पिलायें।

(9) गोबर को जलाकर जब उसका धुआँ निकल जाये तब उसे पानी से बुझा लें, पीछे चूर्ण करके कपड़े से छानकर मंजन बनाये। प्रतिदिन इस मंजन से दाँत साफ करने पर दाँत की दुर्गन्ध, जंतु और मसूड़े के दर्द ठीक हो जाते हैं।

(10) पश्चिम के चिकित्सक गाय के सूखे गोबर के पाउडर से घुम्रपान करवा कर दमे का रोग दूर करते हैं।

(11) शुद्ध पानी में गोबर घोलकर छानकर पीने से हैजा से बचाव होता है।

(12) आग से जल जाने पर ताजे गोबर का बार-बार लेप करते रहे और ठण्डे पानी से धोते रहे।

(13) सर्प दंश, विषधर सांप, बिच्छु या अन्य जीव के काटने पर रोगों को गोबर पिलाने तथा शरीर पर लेप करने से विष नष्ट हो जाता है।

(14) गाय के ताजे गोबर की गन्ध से बुखार व मलेरिया के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

गोबर से चिकित्सा

(1) सब प्रकार के त्वचा रोग में—गाय के गोबर का लेप करके थोड़ी देर घूप में बैठें एक महिना करें लाभ होगा।

(2) साँप, पागल कुत्ता काटने पर जहर खाने पर—200 ग्राम गोबर + 400 ग्राम पानी

घोलकर 20 ग्राम हल्दी मिलाकर तुरन्त पिलाना, गोबर जहर को सोखकर उल्टी के माध्यम से बाहर निकाल देगा-लाभ होगा।

(3) जलने पर—आग से, बिजली से, साइलेंसर से जलने पर गोबर का घोल बनाकर उसमें मोटा कपड़ा भिगोकर ऊपर नीचे ओढ़ा दें, थोड़ा-थोड़ा गोबर रस डालते जायें गोबर रस छानकर पिलाते जायें बहुत शीघ्र लाभ होगा।

(4) कमर दर्द, रिलप डिस्क में—4-5 क्रमांक के छल्ले खिसकने पर गोबर में गोमूत्र मिलाकर लेपकर घंटे भर लेट जायें बाद में धो लें। कम-से-कम 15 दिन करें अवश्य लाभ होगा।

(5) गर्भवती बहनें सुखमय प्रसव—प्रसव होने से सात दिन पहले से 50 ग्राम गोबर का रस (देशी स्वस्थ गाय) 5 तुलसी के पत्ते पीसकर मिलाकर पीने से बिना शल्य क्रिया के आराम से प्रसव होगा। अनुभूत प्रयोग है। देशी गाय के गोबर से शरीर लचीला हो जाता है।

नोट—(1) गोबर उसी गाय का उत्तम है जो निरोगी हो तथा जिसका आहार उत्तम हो। जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है—

“अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।

तासा वृडाभपत्नी नाम पवित्रं काय शोधनम्
तन्मे रोगांश्चगे शोकांश्च नुद गोमय।।”

(2) आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह लेकर उपरोक्त उपचार करें।

गौ मूत्र द्वारा चिकित्सा

भारतीय गाय में अनेक प्रकार को दुर्लभ औषधीय गुण पाये जाते। डाक्टर **कीथ वूडफोर्ड** की स्पष्ट मान्यता है कि भारतीय नस्ल की गाय का दूध ही लाभकारी होता है। क्योंकि यह A-1 दूध में B CM 7 विषैला पदार्थ होता है जो बहुत ही हानिकारक होता है। भारतीय गाय का दूध जीवन रक्षक है।

(1) प्रतिदिन गौ मूत्रासव 10 से 15 मिली पानी के साथ सेवन करने से कफ व खाँसी दूर होती है।

(2) गो मूत्र में लोहे की भस्म (चूर्ण) गलाकर दूध के साथ सेवन करने से पीलिया रोग दूर हो जाता है।

(3) गो मूत्र से बने मेदोहर अर्क में थोड़ी शक्कर मिलाकर दिन में दो बार पीने से सुस्ती दूर होती है।

(4) कब्जी दूर करने के लिए गौमूत्र को कपड़े से छानकर उसके साथ त्रिफला चूर्ण लेने चाहिए।

(5) पेशाब के रुक जाने पर वर्षा के जल में 2 तोला गो मूत्र मिलाकर पिलाये।

(6) मलेरिया में गौमूत्र में सेंधा नमक मिलाकर पिलायें।

(7) सफेद दाग होने पर बावची के बीज को गौमूत्र में घिसकर शाम को दाग पर लगाए। सुबह गो मूत्र से धोएँ।

(8) चमड़ी के रोग में काली जीरी को गौमूत्र में पीसकर शरीर पर लगाये।

(9) गौमूत्र से बाल धोने से बालों में निखार आता है।

(10) गर्भवती को प्रतिदिन वगैर मुँह धोये खाली पेट 30 ग्राम गौमूत्र को आठ तह वाले सूती कपड़े में छानकर पिलाये स्वस्थ संतान पैदा होगी।

(11) कान बहने पर गरम गौ मूत्र से कान धोये।

(12) केन्सर व एड्स में गौ मूत्र संजीवनी की तरह काम करता है।

(13) गौ मूत्र के साथ पुराना गुड़ और हल्दी चूर्ण पौने से 'हाथी-पाव', दाद और कोढ़ आदि नष्ट हो जाते हैं।

(14) गौ मूत्र के साथ एरंड तेल का पान एक माह तक करने से सर्दि पीड़ा और वातव्याधि नष्ट होती है।

(15) बच्चे को सूखा रोग हो जाये तो गौ मूत्र में केसर मिलाकर कम-से-कम एक महिने तक पिलाये। यह औषधि दिन में दो बार आयु अनुसार दी जाये।

(16) गौ मुत्र में पुरुषों तथा गर्भवती स्त्रियों के गुप्त रोगों का निवारण करने की शक्ति है।

(17) मिर्गी, हिस्टीरिया तथा पागलपन में गौ मूत्र को अधिक उपयोगी माना गया है।

(18) जिगर व प्लीहा के बढ़ने से उदर रोग हो गया हो तो पुनर्नवा के काढ़े में आधा गो मूत्र मिलाकर पिलाये।

गोमूत्र से अन्य रोगों की चिकित्सा

(1) कैंसर (कर्क रोग) में— 20 ग्राम गोमूत्र अर्क 40 ग्राम पानी मिलाकर 20-25 तुलसी की पत्तियाँ पीसकर सुबह-शाम खाली पेट लगातार 3 महीने लेने से कैंसर (कर्क रोग) ठीक होता है। भोजन में देशी गाय का दूध लें।

(2) मधुमेह रोग में— 20 ग्राम गोमूत्र अर्क में 40 ग्राम पानी मिलाकर 6-7 बिल्व पत्र के पत्ते पीसकर मिलाकर सुबह शाम खाली पेट लें। भोजन के बाद एक ग्राम तुलसी का चूर्ण पानी के साथ लें।

(3) दमा, अस्थमा, स्वांस रोग में— 20 ग्राम गोमूत्र अर्क, 40 ग्राम पानी, 10 ग्राम अडूसे का रस के साथ सुबह शाम लें। तेल का प्रयोग कम करें लाभ होगा।

(4) हृदय रोग में— 20 ग्राम गोमूत्र अर्क, 40 ग्राम पानी आधा चम्मच अर्जुन की छाल के चूर्ण के साथ लें।

(5) गुर्दे की बीमारी में— 20 ग्राम गोमूत्र अर्क, 40 ग्राम पानी, 10 ग्राम गिलोय के रस के साथ लें।

(6) एक्जिमा होने पर—गोमूत्र में अजवायन पीसकर लेप करें लाभ होगा।

(7) गठिया रोग में—20 ग्राम गोमूत्र 40 ग्राम पानी सुबह-शाम पीना, गोमूत्र को हल्का गर्म करके सेंक करना लाभ होगा।

(8) कान—बछिया का गोमूत्र 100 ग्राम उसमें 10 ग्राम अजवायन डालकर उबालना, धुँआ देने पर उतारकर ठंडाकर छानना, शीशी में भरना, दो-दो बूँद सुबह-शाम कान में डालना इससे कान का दुखना, मवाद आना ठीक होगा।

(9) दाँत—सात दिन गोमूत्र के कुल्ले करने पर दाँत का दर्द ठीक हो जाता है। गोमय भस्म से बना गोमय दंत मंजन बहुत ही लाभकारी है।

नोट—(1) वैज्ञानिक दृष्टि से गो मूत्र में फॉस्फेट, पोटाश, लवण, नाइट्रोजन यूरिया, यूरिक एसिड तथा कार्बोलिक एसिड होने से उसकी स्वच्छता व पवित्रता बढ़ जाती है।

(2) गौ मूत्र का सेवन व विधि आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह के अनुसार ही करें।

गौ दुग्ध द्वारा चिकित्सा

(1) गाय के दूध में सोंठ मिलाकर सिर पर लेप करें। सिरदर्द दूर हो जायेगा।

(2) हिचकी आने पर औटाया हुआ दूध पिलायें।

(3) गर्म दूध में मिश्री व कालीमिर्च चूर्ण मिलाकर पिलाये कफ दूर हो जायेगा।

(4) छाती तथा हृदय रोग में दुध में शुद्ध मिला के तेल की 10 बूँद डालकर पिलायें।

(5) आँखों में जलन हो तो गाय के दूध में रुई भिगोकर उसके ऊपर फिटकरी का चूर्ण डालकर उसे आँख के ऊपर रखें।

(6) गन्धक के विष पर दूध में घी डालकर पिलायें।

(7) अन्न के साथ काँच का चूर्ण पेट में चला गया है तो ऊपर से दूध पिलायें।

(8) प्रसव से पीड़ित महिला को गाय का दूध गर्म करके उसमें गाय का घी मिलाकर पिलाने से प्रसव आसानी से हो जाता है।

(9) प्रथम बार की ब्यात का प्रथम बार निकले दूध को सेवन किया जाये तो पेट की समस्त बीमारियाँ दूर हो जाती है।

(10) मधुमेह में दूध में घी अथवा गुड़ मिलाकर पिलाएँ।

(11) दस्त लगने पर दूध के साथ खजूर खाने को दें।

(12) पहली ब्यात की गाय का प्रथम दिन का खीस में धनिया भिगोकर सुखा लिया जाये और उसका सेवन प्रतिदिन एक चम्मच किया जाये तो दमा का रोग जड़ से चला जाता है।

(13) गाय के दूध को नाक से पीने पर सिर दर्द मिट जाता है। याददाश्त बढ़ती है।

(14) जीर्ण ज्वर में दूध व उसमें गाय का घी, सोंठ, सुहारा और काली मिर्च डालकर उबालकर पिलाना चाहिए।

(15) गाय के दूध की मालिश में शरीर में कांति व स्फूर्ति आती है।

गौ-घृत से उपचार

(1) बालकों की छाती में कफ जमा हो गया तो गाय का पुराना घी छाती पर लगाकर मालिश करें।

(2) धतूरा के विष पर गाय का घी खूब पिलायें।

(3) नाक से खून गिरने पर गाय का घी नाक में डाले।

(4) शराब का नशा उतारने के लिए दो तोला घी ओर दो तोला शक्कर मिलाकर देवें।

(5) सर्प के विष पर पहले 250 ग्राम या 500 ग्राम घी मिलाये तथा 15 मिनट पश्चात् थोड़ा गर्म पाली पिलाये इससे उल्टी, दस्त होकर विष शमन हो जाता है। जरूरत समझें तो दुबारा भी पिलायें।

(6) हिचकी आने पर गाय का घी पिलावें।

(7) हाथ-पैर में जलन होने पर गाय के घी से चुपड़े।

(8) घी की सिर में मालिश करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

(9) घाव पर घी में हल्दी पकाकर उसका रुई को फोया घाव पर लगाने से घाव भर जाता है।

(10) मक्खन से निकाला हुआ घी तृप्ति कारक होता है।

(11) गरमी के ऊपर गाय के घी में सीप का भस्म डालकर उसे खरल करके लेप करें।

(12) तृष्ण रोग पर घी और दूध मिलाकर पिलावें।

(13) एक वर्ष का पुराना घी मूर्च्छा, उन्माद, कर्णशूल योनि दोष इत्यादि रोगों में विशेष हितकारी है।

त्रिदोष से मुक्ति—वात, पित्त और कफ को सम रखने से किसी भी प्रकार की कोई बीमारी

नहीं होती है। त्रिदोष को सम संतुलन में रखने के लिए गाय का घी दिन में 3 बार सुबह, दोपहर, रात में शयन काल में तीन-तीन बूँद नाक में डालने से त्रिदोष निकल जाता है तथा मानव अपने आपको स्वस्थ रख सकता है।

रतौंधी से छुट्टी—पीले रंग का कैरोटीन नामक द्रव्य केवल गाय के घी में है। कैरोटीन तत्व की कमी से ही मनुष्यों के मुँह, फेफड़ों, मूत्राशयों की झिल्ली में अन्य रंगों का कैंसर हो जाता है। कैरोटीन तत्व शरीर में पहुँचकर विटामिन-A तैयार करता है। यह त्वचा और आँखों के लिए आवश्यक है, इससे 'रतौंधी' रोग दूर होता है।

गौ-मक्खन से उपचार

(1) गाय का मक्खन, मिश्री, मधु और सोने का वर्क मिलाकर खाने से क्षय का नाश करता है।

(2) आँख में जलन होने से मक्खन आँखों के ऊपर चुपड़ देवें।

(3) शरीर में मन्द ज्वर हो तो मक्खन और मिश्री खिलावें।

(4) गाय का मक्खन और मिश्री घोलकर उसमें जीरे का चूर्ण डाले व छोटी गोली बनाकर खिलायें जिससे छोटी माता के कारण लड़कों के ज्वर को ठीककर देता है।

(5) कान में बहुत जलन होने पर गाय का मक्खन थोड़ा गरम करके कान में डाले।

(6) केर के विष पर गाय का मक्खन थोड़ा उष्ण करके खिलावें।

(7) रक्तातिसार होने पर मक्खन से मधु और मिश्री डालकर खिलावें।

हृदय रोग का अचूक निदान—धमनियाँ अवरुद्ध हो जाने पर मनुष्य को बाय-पास सर्जरी करवानी पड़ती है। ऐसे बीमारी के समय में—

- | | |
|-----------------------------|-----------|
| 1. साबुत उड़द काले छिलके का | 10 ग्राम |
| 2. गुग्गल | 10 ग्राम |
| 3. अरंडी का तेल | 10 ग्राम |
| 4. गाय का ताजा मक्खन | 10 ग्राम। |

इस तरह चार उक्त घटकों में उड़द को रात में भिगोकर सुबह गुग्गल के साथ पीस कर चटनी बनायें तत्पश्चात् उसमें अरंडी का तेल मिलाकर ताजा मक्खन मिलायें। इससे एक प्रकार का मलहम तैयार हो जायेगा यह लेप हृदय पर नियमित स्नान के बाद लगावें। यह प्रयोग 1 महीने तक चालू रखने से सब तरह की धमनियों का अवरोध निकल जाता है।

गाय की तक्र छाछ से उपचार

(1) छाछ कफ, वात व पित का नाश करती है।

(2) पेट में वायु हो तो पीपल और नमक डालकर, मीठी छाछ पीने से वायु का नाश होता है।

(3) जलन होने पर गाय की छाछ में कपड़ा भिगोकर उससे रोगी के शरीर से स्पर्श करते रहने से जलन कम हो जाती है।

गौ दही से उपचार

(1) अनाज के साथ काँच का चूर्ण पेट में चले जाने से गाय का दही पिलाये।

(2) कनेर के विष पर गाय का दही शक्कर डालकर पिलायें।

आज के युग में प्रदूषित आहार-विहार व जलवायु के कारण कई जटिल रोगों से मनुष्य ग्रस्त हो रहा है। तरह-तरह की चिकित्सा पद्धतियों की शरण में जाकर इलाज करवाता है फिर भी निराशा मिलती है। इस युग की आधुनिक चिकित्सा भी बहुत महँगी होती जा रही है।

कई स्थानों पर पंचगव्य चिकित्सा पद्धति पर ध्यान दिया जा रहा है और ये संस्थाएँ मानव सेवार्थ चिकित्सा सेवा कर ही है। जो गाय पर आधारित पंचगव्य (गो दुग्ध, दही, घृत, गो मय रस, गो मूत्र) द्वारा औषधियों को निर्माण एवं शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के मिश्रण से प्रशिक्षित एवं अनुभवी वैद्यों द्वारा करवाकर चिकित्सा कर रहे हैं। इस पद्धति से बहुत रोगियों के रोग ठीक होने में सफलता मिली है। इन स्थानों पर अनुभवी वैद्यों द्वारा रोगी को देखकर चिकित्सा की जाती है। अतः इससे मानव सेवा के साथ-साथ गो सेवा भी हो रही है। गाय से प्राप्त पंचगव्य मानव को दीर्घायु करने के साथ ही उनके समस्त रोगों का नाशक भी है।

अन्य उपयोगी चिकित्सा

टॉन्सिल—होने पर केले के छिलके का नरम वाला हिस्सा अन्दर रखकर रात को गले पर बाँध देना। सुबह हटा देना इससे टॉन्सिल से आराम मिलेगा।

खाँसी, जुकाम, सर्दी—

(1) अजवायन कूटकर तवे पर गर्म कर रुमाल में बाँध कर हल्के-हल्के सूँघना, इससे छींके आना, नाक से पानी गिरना कुछ ही समय में बंद हो जायेगा।

(2) पानी को अच्छी तरह एक भगोनी में उबालकर उसमें एक मुट्ठी बाजरा या विक्स थोड़ा डालकर ऊपर के कपड़े उतारकर चद्दर ओढ़कर भाप लेने से फेफड़ों में जमा सब कफ निकल जायेगा, रात में सोते समय करना बहुत उपयोगी है।

(3) आधी चम्मच हल्दी व जरा सा नमक की फक्की लेकर ऊपर से गुनगुना पानी पीने से, नमक कफ को गला देगा, हल्दी-कफ को फाड़ देगी कफ बाहर निकल जायेगा।

(4) एक चम्मच अदरक का रस, थोड़ा नींबू का रस व एक चम्मच शहद मिलाकर लेने से सर्दी जुकाम में काफी लाभ होगा।

गला—नमक डालकर पानी गुन गुनाकर गरारे करने से लाभ होता है।

दाँत—दाँत दर्द में फुलाई हुई फिटकरी के पानी से कुल्ला करने से मसूड़ों के बीच फँसा दूषित अन्न निकल जाता है, मसूड़ों के बीच की जगह सिकुड़ जाती है, लाभ होता है।

पेट दर्द—अपच, अजीर्ण (फुड पॉयजनिंग) दूषित भोजन करने से हुई परेशानी के लिए

अमृत धारा की एक-एक बूँद लेने से निश्चित लाभ होता है। उल्टी दस्त में भी लाभ होता है।

उल्टी होने पर—दो लौंग घीसकर थोड़ा पानी मिलाकर गर्म कर उसमें जरा सा नमक मिलाकर पिलाने से शीघ्र ही उल्टी होना बंद हो जाता है, पेट में जो गैस बनी है उसको लौंग सोख लेती है।

पेट में आफरा होने पर—जरा सा हींग घोलकर नाभी में भर दें, उसके बाहर भी लगा दें। आराम हो जायेगा। थोड़ी-सी अजवायन व काला नमक थोड़ा-सा मिलाकर फक्की लेने से भी आराम मिलता है।

कब्ज—पेट में कब्ज होने पर गोमूत्र हरडे चूर्ण रात को सोते समय एक चम्मच चूर्ण दूध या पानी से लेने पर निश्चित लाभ होता है। ज्यादा-कब्ज रहने पर एक चम्मच त्रिफला चूर्ण एक गिलास पानी में भिगो दें, सुबह उसे उबालकर एक कप कर लें उसे थोड़ा ठंडाकर पी लें, सुबह-सुबह दो-तीन दस्त लगेंगे कुछ दिन में बीमारी में बहुत लाभ होगा। नित्य प्रातः चार गिलास पानी ताँबे के जग में भर कर रखा हुआ नित्य लेने से बहुत लाभ होगा।

अम्ल पित्त—आधी कच्ची आधी पक्की सौंफ मिश्री के साथ नित्य भोजन के बाद लेने से बहुत लाभ होता है। दूध की लस्सी मिश्री मिलाकर लेने से लाभ होता है। धनिये की पंजीरी, धनिया पीसा हुआ, घी, मिश्री का चूर्ण लेना बहुत लाभकारी है। मावे से बनी चीजें, ओटाया हुआ दूध, अधिक चाय, काफी बहुत हानिकारक हैं।

एक गिलास देशी गाय के दूध में दो चम्मच देशी गाय का घी सुबह रात नित्य लेने पर अम्ल पित्त, अल्सर का रोग मिट जाता है।

पानी अधिक से अधिक पीना चाहिये, कुंजल क्रिया सप्ताह में एक बार या दो बार करना लाभकारी है।

पीलिया—फुलाई हुई फिटकरी का चूर्ण, जरा सी मात्रा नित्य लेने से बहुत लाभ होता है। चूना मूँग के बराबर केले में रखकर खिलाने से सात दिन में लाभ होता है। नित्य प्रातः एक पान का पत्ता जरा सा चूना, कत्था व 4 बूँद आकड़े की दूध की डालकर सूर्योदय से पहले पाँच दिन लेने से पीलिया में निश्चित लाभ होता है।

मलेरिया-वायरल में ढाई नीम के ताजा पत्ते व दो कालीमिर्च पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर लेने से तुरन्त लाभ होता है। बुखार होने पर सादा नमक (आयोडीन युक्त नहीं) को तवे पर सेक कर लाल कर लें, उसे शीशी में भर लें, बुखार आने से पूर्व आधा छोटा चम्मच नमक एक गिलास पानी में घोलकर पिला दें इकातरा बुखार हमेशा के लिये चला जायेगा।

पेट में कीड़े होने पर—एक आकड़े का पीला हुआ पत्ता 250 ग्राम पानी में उबालकर ठंडा कर छानकर पीने पर दो-तीन बार में सब कीड़े निकल जाते हैं। अजवायन कूटकर गुड़ में मिलाकर गोली बनाकर बच्चों को पानी से निगलवा दें, कीड़े गुड़ खाने आयेंगे अजवायन खाकर मर जायेंगे।

साइटिका में—(1) पारिजात, हर शृंगार के एक तोला पत्ते 250 ग्राम पानी में मिलाकर उबालें एक कप रहने पर पीसी हुई—मिश्री मिलाकर सुबह शाम एक महिना लेने से यह रोग ठीक हो सकता है।

(2) आकड़े का दूध हाथ पैर की बीसों अंगुलियों के नाखून में अन्दर लगातार तीन दिन रात को लगायें, हाथ में कपड़ा बाँध दें ताकि आँख में न लगे कुछ समय में साइटिका रोग में लाभ होगा।

संग्रहणी—12 हर शृंगार-पारिजात के पत्ते, 6 काली मिर्च पीसकर दही में मिलाकर 15 दिन नित्य सुबह शाम लेने से लाभ होता है।

हृदय की नलिकाओं में अवरोध—250 ग्राम देशी गाय का गोबर, 250 ग्राम गोमूत्र को मिट्टी के पात्र में मंदी आँच में डेढ़ घंटा उबालना बाद में उतारकर सहने लायक गर्म रहे तब सीने पर रात को लेप करना, भोजन 6 बजे कर लेना। 8 बजे लेप कर 2 घंटे रखना बाद में लेप पोंछ कर वहाँ देशी गाय का घी चुपड़ देना। एक से दो महीने में अवरोध हट जायेंगे।

शरीर में कहीं पर भी गाँठ होने पर—उपरोक्त लेप तैयार करके लगाना, 2 घंटे रखना, बाद में लेप हटाकर अरंडी (केस्ट्रॉयल) का तेल चुपड़ना एक से दो महीने करना। गाँठ समाप्त हो जायेगी।

घुटने के दर्द में—100 ग्राम सरसों के तेल में, दस लहसुन की कली, छीलकर काटकर

उबालना, लहसुन काला पड़ने पर उतारकर ठंडा करके छानना, फिर 50 ग्राम ग्वारपाटे का रस व 1/2 चम्मच (3 ग्राम) घर में कूटी हुई हल्दी मिलाना 24 घंटे रखना, बाद में 5-5 बूँद दिन में दो बार घुटने पर लगाना, मालिश नहीं करना, कम-से-कम एक महीने करना लाभ होगा।

गठिया वात जोड़ों का दर्द—100 ग्राम हल्दी का चूर्ण 100 ग्राम सोंठ, 100 ग्राम मेथी अलग-अलग कूटकर, छानकर मिलाना, 1/2 चम्मच (3 ग्राम) दिन में दो बार दूध के साथ लेना। लाभ होगा।

सब प्रकार के संधि वात में—100 ग्राम रासना की पत्ती का चूर्ण, 100 ग्राम पुनर्नवा चूर्ण, 100 ग्राम सोंठ का चूर्ण सबको कूट कर पीसकर छानना, 1/2 चम्मच (3 ग्राम) सुबह-शाम शहद से लेना। अवश्य लाभ होगा।

बुखार होने पर—1 चम्मच (5 ग्राम) धनिया का चूर्ण दो लौंग कूटकर एक गिलास

पानी में उबालना। आधा रहने पर, गुनगुना, गुड़ डालकर पीकर सो जाना थोड़ी देर में बुखार उतर जायेगा।

खाँसी, सर्दी, जुकाम में—11 काली मिर्च कूटकर, 1 ग्राम हल्दी का चूर्ण मिलाकर एक गिलास पानी में उबालना, आधा रहने पर, गुनगुना, गुड़ डालकर दिन में दो बार, तीन दिन पीना अवश्य लाभ होगा।

चिकनगुनिया, डेंगू, स्वाईन फ्लू बुखार में—एक ग्राम काली मिर्च, एक ग्राम हल्दी चूर्ण, एक ग्राम सोंठ का चूर्ण, तुलसी के पाँच पत्ते, गिलोय (अमृता) का एक 6 इंच का टुकड़ा कूटकर एक गिलास पानी में उबालना, आधा गिलास रहने पर गुनगुना, मिश्री डालकर पीना, दिन में तीन बार तीन दिन पीना। डेंगू में पपीते या मरवा के पत्ते का रस 10-10 ग्राम दिन में दो बार पीना प्लेटलेट्स रेट ठीक होगा। बाद में कोई कष्ट नहीं रहेगा।



24. गौ पालन से आर्थिक समृद्धि

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में गोमाता का विशेष महत्व है। भारत के स्वतंत्र होने तक गौ तथा वृषभ को प्रायः अधिकांश शासकों द्वारा सिक्कों पर स्थान मिला है।

वैदिक काल से आज तक गाय पर श्रद्धाभाव वैसी ही बना हुआ है जैसा आरंभ में ऋषि मुनियों की परम्परा में था। किन्तु आज आर्थिक समृद्धि के लिए भी गोमाता मानव के लिए श्रेयस्कर सिद्ध हो रही है।

अर्थव्यवस्था का मूल आधार जलाशय व जंगल है और इन तीनों का रक्षण एवं पोषण गाय के द्वारा ही संभव है। गोविज्ञान को प्रकाश में लाना और गौ-आधारित आर्थिक समृद्धि के पहलुओं को समझना आवश्यक हो गया है।

भारत में फिर से वैभव लाना है तो एक मात्र रास्ता गौ-आधारित कृषि तथा गौ-आधारित कुटीर उद्योग है। मोक्ष की प्राप्ति में सात्विक बुद्धि से अर्जित अर्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सात्विक पुरुषार्थ करने से चारों ओर सुख-समृद्धि और शांति होगी। जिससे भारत फिर से परम वैभव प्राप्त कर सकता है। इसी को सूत्र के रूप में देख सकते हैं—

गौ आधारित कृषि



कृषि आधारित कुटीर उद्योग



अल्प लागत, लघु प्रकल्प



व्यक्तिगत उत्पादन, सामूहिक विपणन



समृद्ध शाश्वत अर्थतंत्र



वैभवशाली भारत

गौ सेवा उद्यमिता को बढ़ावा देती हैं और गौवंश के उत्पादों का प्रयोग करके व्यापार का अवसर प्रदान करती है।

गाय से हमें गोबर, गोमूत्र तथा दूध प्राप्त होता है। इसी से खेती और कुटीर उद्योग की एक बहुत बड़ी दुनिया खड़ी की जा सकती है। गाय दूध-दही-घी और गौरब-गैस हम उपयोग करेंगे फिर गोबर-गोमूत्र को जैविक खाद, कीट नियंत्रक बनाकर जमीन और फसलों को देंगे। जमीन की उर्वरकता बढ़ेगी जिससे फसल साग-सब्जी, फल-फूल अच्छे होंगे। चारा गौवंश को देंगे। इस प्रकार मनुष्य जमीन गौवंश तीनों को परस्पर लाभ होगा।

इसी जीवन दर्शन के आधार पर गौ पालक अपने सामान्य ज्ञान और परिश्रम से सुख सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है। उसके पास दो गाय-बैल हो, कम-से-कम एक एकड़ जमीन हो, तथा पाँच सात लोगों का एक परिवार प्रतिदिन पाँच-सात घंटे परिश्रम करे तो गोबर-गैस जैविक खाद, कीट नियंत्रक, फलदार वृक्ष बांस, धान, गेहूँ, तिलहन, सब्जी, फल-फूल, दूध-दही, घी प्राप्त कर करता है। कुटीर उद्योगों में कई कृषि आधारित एवं गौ

आधारित उत्पाद बनाएँ। बस उसे थोड़ा प्रशिक्षण लेना होगा।

विकास वाटिका मॉडल अपनाकर एक एकड़ जमीन में एक परिवार सभी प्रकार के उत्पादन से आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

एक एकड़ जमीन दो गाय तथा वर्षा जल संचयन के माध्यम से पूर्ण स्वावलम्बन के साथ कार्य कर सकते हैं। गोबर से पहले गैस उत्पादन करें, गोबर घोल (स्लरी) से खाद बना ले, गौ मूत्र से विविध कीट नियंत्रक अर्क बनाए, खेत के मेड़ पर फलदार औषधि वृक्ष लगाएँ, खेत के एक तरफ बाँस उगाए, आवश्यकता के अनुसार खेत में छोटे पोखरी बनवाएँ बैल हैं तो योजना बनाकर धान तिलहन दलहन आदि की फसल लें दो फसलों के बीच सब्जी उत्पादन को उसमें सिंचित वर्षा जल का उपयोग करें, बाँस से विविध वस्तु मधुमक्की पालन, मशरूम दंत मंजन, धूप अगरबत्ती साबुन मॉलिश तेल, खाद्य प्रसंस्करण, पंचगव्य उत्पादन आदि का कुटीर उद्योग प्रशिक्षण लेकर आरंभ करना चाहिए।

सहकारिता के माध्यम से गाँव के उत्पादन को शहर के उपभोक्ता परिवार तक पहुँचाना चाहिए।

उपभोक्ता से प्राप्त धन गाँव के उत्पादकों को वापस दिया जाए। गौपालन को कृषि से जोड़ना होगा। उत्तम फसल से गोवंश और मनुष्य दोनों को आहार मिलेगा। गौ-आधारित कुटीर उद्योगों के माध्यम से रोजगार भी उपलब्ध होगा।

गौआधारित कुटीर उद्योग—गोमय साबुन निर्माण, गोमय मरहम, एक्जिमा साबुन, कामधेनु शैम्पू, कामधेनु तेल (मालिश के लिए) धूप बत्ती, गौ धूप, गौमूत्र द्वारा गौनायल, गोबर-गैस संयंत्र इत्यादि के माध्यम से आर्थिक लाभ प्राप्त कर गौ पालक गौमाता की सेवा कर सकता है।

गौ आधारित पर्यटन—गाय आधारित पर्यटन के माध्यम से पर्यावरण प्रेमी पर्यटकों को गौ संस्कृति का परिचय प्राप्त होता है। आगंतुक गाय पालन प्रथाओं, गौ आधारित खेती के साथ गोमय उत्पादों के निर्माण की प्रक्रिया सीखते हैं। गौ आधारित पारंपरिक तरीकों के बारे में सीखते हैं और सांस्कृतिक जीवन शैली में डूब सकते हैं। इस व्यवसाय के माध्यम से गौ पालक उद्यमिता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।



25. क्यों बन रहा है छत्तीसगढ़ कैंसर राज्य ?

छत्तीसगढ़ में पिछले चार वर्षों के दौरान कैंसर रोगियों की संख्या में 15 फीसदी से अधिक की वृद्धि हुई है। आईसीएमआर के नेशनल रजिस्ट्री प्रोग्राम के अनुसार वर्ष 2018 में छत्तीसगढ़ में कैंसर के 26443 मरीज दर्ज हुए थे जो कि वर्ष 2021 में बढ़कर 30981 हो गए हैं। इन चार वर्षों में 4538 मरीजों की वृद्धि हुई है। एनसीडीआईआर के अनुसार राज्य में कैंसर से हुई मौतों का आँकड़ा भी डराने वाला है। वर्ष 2021 में मौत का आँकड़ा 20071 पहुँच गया है जो कि गत वर्ष के मुकाबले 1083 अधिक है।

तेजी से कैंसर वाले टॉप टेन राज्यों में शामिल हुआ छत्तीसगढ़

नेशनल सेंटर फॉर डिजीज इंफॉर्मेटिक्स एंड रिसर्च की हाल ही जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि कोरोना काल में कैंसर के मरीजों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। देश में इस समय 13.9 लाख मरीज हैं, जिनमें से 7.1 लाख महिला तथा 6.8 लाख पुरुष हैं। यदि यही रफ्तार जारी रही तो वर्ष 2025 तक देश में कैंसर मरीजों की संख्या बढ़कर 15.7 लाख तक पहुँच सकती है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री द्वारा संसद में जारी आँकड़े के मुताबिक वर्ष 2020 में उत्तर प्रदेश में कैंसर का आँकड़ा 2 लाख को पार कर गया है जो कि देश में सर्वाधिक है इसके बाद महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और बिहार का नम्बर है जिन राज्यों

में कैंसर मरीजों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है छ.ग. उन राज्यों की टॉप टेन सूची में शामिल है।

आदिवासी इलाकों में बढ़ रहे मरीज

बस्तर-सरगुजा में कैंसर के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है पर इलाज की कोई बेहतर व्यवस्था मौजूद नहीं है। बस्तर संभाग के 7 जिलों में से मात्र जगदलपुर के मेकॉज और महारानी अस्पताल में ही एक-एक डॉक्टर पदस्थ हैं। शेष जिलों में कोई भी डॉक्टर नहीं है। बस्तर में पिछले एक वर्ष में 1988 मरीजों की स्क्रीनिंग की गई है। इनमें से 546 लोगों की कीमोथेरेपी शुरू की जा चुकी है। सरगुजा क्षेत्र में भी कमोबेश यही स्थिति है। सिर्फ बिलासपुर सिम्स में कैंसर मरीजों का इलाज हो पा रहा है। जगदलपुर के महारानी अस्पताल के कैंसर विशेषज्ञ डॉ. भंवर शर्मा कहते हैं कि बस्तर में जो कैंसर के मरीज आ रहे हैं उनमें 65 फीसदी महिलाएँ हैं। यहाँ तम्बाकू और शराब के ज्यादा प्रयोग के कारण पुरुषों व महिलाओं में मुँह का कैंसर अधिक पाया जा रहा है। इसके अलावा महिलाओं में ब्रेस्ट व गर्भाशय के भी काफी मरीज सामने आ रहे हैं।

कैंसर से हो रही मौत के संबंध में एनसीडीआईआर द्वारा देश भर के आँकड़े जारी किए गए हैं, उनके मुताबिक वर्ष 2018 में देश भर में कैंसर से 7,33,139 वर्ष 2019 में

751517 मौत तथा वर्ष 2020 में 770230 लोगों की मौत हुई है। राज्यवार आँकड़ों में छत्तीसगढ़ के आँकड़े भी काफी चौकाने वाले हैं। वर्ष 2014 में जहाँ राज्य में कैंसर से 14472 लोगों की मौत हुई 2015 में 15221, 2016 में 16030 मौतें हुई हैं वर्ष 2021 में मौत का आँकड़ा बढ़कर 20071 पहुँच गया है। इस प्रकार कैंसर से राज्य में प्रतिदिन औसतन 3 लोगों की मौत हो रही है।

कैंसर का इलाज कराने में कंगाल हो रहे लोग

छत्तीसगढ़ में कैंसर का इलाज सिर्फ रायपुर और बिलासपुर में ही संभव है बाकी जगहों पर इलाज की कोई व्यवस्था नहीं है। राज्य के दूरस्थ अंचल से जब लोग इलाज कराने राजधानी जाते हैं तो उन्हें काफी पैसे खर्च करने पड़ते हैं। सुकमा निवासी देवीसिंह के पिता दुकालू को मुँह का कैंसर है। वह रायपुर के अस्पताल में इलाज करवा रहा है। उसका आयुष्मान कार्ड नहीं है। अब तक 2 लाख से अधिक खर्च हो चुके हैं। अब पैसे खत्म हो गए हैं तो पिता के इलाज के लिए खेत गिरवी रखने पर मजबूर हो गया है। रीजनल कैंसर सेंटर रायपुर के प्रभारी ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. प्रदीप चंद्राकर कहते हैं कि जागरूकता के अभाव में समय पर डायग्नोसिस न हो पाने के कारण पचास फीसदी से अधिक मरीजों को तीसरे या चौथे चरण में कैंसर का पता चलता है लेकिन तब तक देर हो चुकी होती है। उन्होंने बताया कि यदि प्रारंभिक अवस्था

में कैंसर का पता चल जाए तो इसका इलाज संभव है।

कई रिसर्च में यह साबित हो चुका है कि क्रुसीफेरस सब्जियों में कैंसर कोशिकाओं को मारने वाले कंपाउंड होते हैं। इसलिए यदि अपने डाइट में आप कैबेज, फूलगोभी, केला, स्प्राउट, जैसी सब्जियों, जैविक भोज्यपदार्थ को शामिल करेंगे तो कैंसर होने का खतरा बहुत कम हो जाएगा।

कैंसर तब होता है जब कोशिकाएँ अनियंत्रित दर से बढ़ने और गुणा करने लगती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ज्यादा इलाज योग्य कैंसर थायरॉयड, स्तन, प्रोस्टेट, वृषण और त्वचा के कैंसर हैं। इन प्रकार के कैंसर को शुरुआती चरणों में निदान किए जाने पर सबसे ज्यादा इलाज योग्य माना जाता है।

छत्तीसगढ़ के डॉक्टर बता रहे हैं कि बच्चों में आनुवंशिक नहीं बल्कि लाइफ स्टाइल व केमिकल फूड के कारण कैंसर फैल रहा है। राज्य के डॉ. प्रदीप चंद्राकर के अनुसार राज्य में चार तरह के कैंसर देखने में आ रहे हैं, जिनका शुरु में इलाज संभव है।

राजधानी और छत्तीसगढ़ में पिछले दो-तीन साल में बच्चों में कैंसर के केस इसलिए बढ़े हैं क्योंकि माता-पिता पहचान नहीं पाते और इलाज देर से शुरू होता है। शून्य से 14 साल के बच्चों में यह बढ़ रहा है। लेकिन छत्तीसगढ़ के लोगों को परेशान होने की जरूरत नहीं है क्योंकि यहाँ इलाज से बच्चों

का कैंसर ठीक होने का अनुपात देश के अनुपात से दोगुना से ज्यादा है। हेल्थ रिपोर्ट के अनुसार देश में कैंसर पीड़ित बच्चों के ठीक होने के अनुपात 30-35 फीसदी ही हैं। जबकि राजधानी के इंदिरा गाँधी रीजनल कैंसर सेंटर में 60-70 प्रतिशत बच्चे ठीक हो रहे हैं। यह आँकड़े विकसित देशों के 80 प्रतिशत के करीब हैं। राजधानी रायपुर के कैंसर सेंटर में पिछले साल कैंसर पीड़ित 255 बच्चों को इलाज के लिए लाया गया।

इस सेंटर के डॉक्टरों ने इलाज के साथ-साथ पिछले 5 साल में कैंसर पीड़ित बच्चों को लेकर कई तरह के आँकड़ों को निकाले हैं। कैंसर सेंटर के डायरेक्टर डॉ. विवेक चौधरी के अनुसार इन आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि बच्चों में कैंसर की वजह आनुवंशिक तो है ही, मौजूदा लाइफ स्टाइल और जंक फूड वगैरह ने 14-15 साल के बच्चों में यह बीमारी ज्यादा लगाई है।

पाँच साल के रिसर्च का सबसे चौंकाने वाला आँकड़ा यही है कि इलाज के लिए आने वाले अधिकतर पीड़ित बच्चों में जब कैंसर बढ़ जाता है, या तकलीफ बढ़ने लगती है, तब पैरेंट्स को पता चलता है और कैंसर का इलाज शुरू हो पाता है। कैंसर सेंटर आने वाले 90 फीसदी मामले ऐसे ही हैं। पिछले साल अंबेडकर अस्पताल परिसर में स्थित इस कैंसर सेंटर में जितने बच्चे आए, उनकी उम्र 13 दिन से 14-15 साल के बीच है। डॉ. चौधरी ने बताया कि इस सेंटर में बच्चों के कैंसर का सभी

तरह के इलाज निःशुल्क है। इसलिए 70 फीसदी तक बच्चे पूरी तरह ठीक होकर जा रहे हैं। 65 से 70 फीसदी बच्चे पूरा इलाज कराकर ठीक हो रहे हैं।

बच्चों में चार तरह के कैंसर

सेंटर के डॉ. प्रदीप चंद्राकर के अनुसार यहाँ चार तरह के कैंसर देखने में आ रहे हैं, जिनका शुरू में इलाज संभव है। अधिकतर ल्यूकीमिया या ब्लड कैंसर के मामले हैं। बच्चों में कमजोरी, पीलापन, दर्द से रोना व ब्लड निकलना इसका लक्षण है। दूसरा ब्रेन ट्यूमर है। शरीर में झटके, सिर दर्द, उल्टी, बेहोशी और कमजोरी इसके लक्षण हैं। तीसरा सारकोमा है, जिसे हड्डी या मांसपेशी का कैंसर भी कहते हैं। इसका लक्षण सूजन तेजी से बढ़ना है। चौथा न्यूरोब्लास्टोमा या पेट का कैंसर है। नहलाते समय कहीं गठान महसूस हो, पेशाब में खून आए तो यह हो सकता है।

शोध में कैंसर का प्रमुख कारण रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाएँ एवं जर्सी गाय का दूध है।

पंचगव्य उपचार कैंसर का प्रभावी उपचार है और देश भर में इसके अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। आधुनिक रिसर्च में गोमूत्र, हल्दी एवं तुलसी में कैंसर कोशिकाओं से लड़ने की अद्भुत क्षमता की जानकारी मिली है। इसलिए कैंसर रोगी के लिए गोमूत्र पान सर्वश्रेष्ठ औषधि है। कोई भी चिकित्सा किसी योग्य आयुर्वेदाचार्य के मार्गदर्शन में ही लेना चाहिए।



26. ग्लोबल वार्मिंग रोकने में गाय की भूमिका

ग्लोबल वार्मिंग शब्द का अर्थ है पृथ्वी की जलवायु प्रणाली का समय के साथ गर्म होना जो मानव गतिविधियों के कारण पूर्व-औद्योगिक समय से देखा जा रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग शायद हमारे समय की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है और भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए भी। पर्यावरण वैज्ञानिक हमें बताते हैं कि अगर वैश्विक स्तर पर बढ़ते तापमान में हर साल सिर्फ 1°C की वृद्धि होती है, तो ग्रह पृथ्वी और उसके निवासी, जिसमें लोग, पौधे, जानवर और अन्य सभी जीवन रूप शामिल हैं। खत्म होने के गंभीर खतरे में होंगे। वर्तमान समय में, ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव हमारे चारों ओर दिखाई दे रहे हैं। इस स्थिति को देखते हुए हमें जल, जंगल, जमीन और जीव को बचाने के सार्थक उपाय करने होंगे। आज जल जहरीला हो रहा है। कारण हमने अपनी कृषि में अत्यधिक रासायनिक खाद कीट नाशक का प्रयोग किया है। नदियों के जल में 60% प्रदूषण है। वह जल हमें पीने को मिलता है। अतः गोबर, गौमूत्र के द्वारा भूमि को शुद्धकर जल प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। जहाँ कुँ सूख गए हैं उनमें अनेकबार गोबर, गौमूत्र डालने से वहाँ जल आ जाता है। बंजर होती भूमि को बचाने और पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु गौ आधारित कृषि को बढ़ावा देना होगा। वह भी देशी गोवंश पर आधारित। जर्सी होलस्टन/गाय नहीं। उसका गोबर, गौमूत्र, दूध मनुष्य के लिए हानिकारक है।

पिछली कुछ शताब्दियों में, जब से मनुष्य ने शक्ति की खोज की है, सचमुच हमने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कोयले की खदानों से आने वाली बिजली और इस बिजली से चलने वाली ट्रेनें, जीवाश्म ईंधन का उपयोग करके बनाए गए वाहन आदि सभी ग्लोबल वार्मिंग के योगदानकर्ता हैं।

औद्योगीकरण, वनों की कटाई, विनिर्माण या उत्पादन विधियाँ, बढ़ती जनसंख्या आदि।

जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के गैर-नवीकरणीय स्रोतों जैसे—तेल, पेट्रोलियम, कोयला आदि को संदर्भित करता है जिन्हें बनने में लाखों साल लगे हैं और उनके उपयोग से पर्यावरण बहुत प्रदूषित होता है। पेड़ और पौधे कार्बन-डाइऑक्साइड लेते हैं और उसकी जगह ऑक्सीजन छोड़ते हैं यही कारण है कि वनों की कटाई अविश्वसनीय रूप से खतरनाक है और ग्लोबल वार्मिंग के लिए एक बड़ा कारण है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

ग्लोबल वार्मिंग के सबसे स्पष्ट प्रभावों में से एक यह है कि ग्रह दिन-प्रतिदिन गर्म होता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप गंभीर तापमान की स्थिति पैदा हो जाती है। जहाँ जैव विविधता वाले पारिस्थितिकी तंत्र पनप नहीं पाते या जीवित भी नहीं रह पाते और यहाँ तक कि मौसम की स्थिति की गंभीरता के कारण मानव आबादी भी खत्म हो सकती है।

प्राकृतिक आपदाओं का बढ़ता प्रचलन

पिछले कुछ दशकों में, हमने ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के रूप में पहले की तुलना

में बहुत अधिक बवण्डर, तूफान, जंगल की आग आदि देखी है।

पिघलते ग्लेशियर और बढ़ता समुद्री स्तर

जैसे-जैसे ग्रह गर्म होता जा रहा है दुनिया भी में ग्लेशियर और बर्फ की परतें पिघलती जा रही है, जिससे समुद्र का स्तर बढ़ता जा रहा है। बढ़ते समुद्री स्तर का परिणाम पृथ्वी की भूमि की सतह पर जगह का कम होना है, जिससे कई द्वीप राष्ट्रों के पूरी तरह से डूब जाने का खतरा है। साथ ही ग्लोबल वार्मिंग के कई अन्य प्रभाव भी हैं।

जैव विविधता का नुकसान

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव बर्फ पिघलने, जंगल की आग, बाढ़ आदि के रूप में जारी रहने के कारण इन प्रभावित क्षेत्रों के जैव विविधता वाले पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप हम पहले ही वन्यजीवों और जैव विविधता की कई प्रजातियों को खो चुके हैं।

मनुष्य को यदि शाश्वत जीवन जीना है तो उसे प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर ही चलना होगा। प्रकृति को ही आधार बनाकर मनुष्य को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी। प्रकृति अर्थात् जल, जमीन, जंगल तथा जीव इन चार के माध्यम से ही मनुष्य हजारों वर्षों तक सुखी सम्पन्न जीवन यापन कर सकता है।

अंतरिक्ष में सूर्य का तापमान बढ़ जाना, ओजोन परत में छिद्र होना, पृथ्वी का तापमान अधिक बढ़ना, हिमखण्ड पिघलना, समुद्र जल स्तर में वृद्धि होना, पृथ्वी पर भूकंप,

ज्वालामुखी, सुनामी लहर जैसे प्रकृति प्रकोप प्रतिदिन बढ़ते जाना, पेड़-पौधों की कटाई से पर्यावरण संतुलन बिगड़ना, कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होना, खाद्यान्न उत्पादन—अनाज, फल-फूल, साग-सब्जी आदि में कमी होना, गौ हत्या, जीव हत्या से रोग एवं पर्यावरण प्रदूषण बढ़ना, पृथ्वी पर अग्नि के बढ़ते तापमान को नियंत्रित करना आवश्यक है। यज्ञ विज्ञान के द्वारा उत्पन्न सात्विक ऊर्जा पृथ्वी में ग्लोबल वार्मिंग को रोकती है। अतः गौ घृत से हवन, बड़े परिमाण में बार-बार किया जाए तो कार्बन डाई-ऑक्साइड के खतरों से बचाया जा सकता है।

हम लाखों वर्षों से खेती करते आ रहे हैं। उसका आधार गोमाता ही थी। गोबर, गोमूत्र भूमि को उर्वरा व सुगंधित बनाता है। आज जंगल नष्ट हो रहे हैं। हमें 33% जंगल शुद्ध पर्यावरण के लिए चाहिए पर आज 7% बचे हैं। उन्हें भी नष्ट किया जा रहा है। आज गोवंश को जंगल में चरने नहीं जाने दिया जाता तर्क यह देते हैं कि गाय जंगल नष्ट करती है। जबकि गोवंश से जंगल को कोई नुकसान नहीं है। वास्तविकता यह है कि गाय खाती नहीं, चरती है। उसके करण अनेक प्रकार के बीज उसके पेट में जाते हैं वे गोबर में उपचारित होकर जब जंगल में गिरते हैं उससे नये पौधे उगते हैं। अतः गोमाता के कारण जंगल की वृद्धि होती है। अतः जंगल को बढ़ाने के लिए भी गोमाता का जंगल में घूमना जरूरी है।

ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव से बचने जल, जंगल, जमीन, जीव समूह, पर्यावरण,

मनुष्य, संस्कारों को बचाये रखने का आधार गौमाता है। अतः गौमाता का संरक्षण संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। गाय का गोबर मिट्टी में रहने वाले जीवाणु के लिए सर्वश्रेष्ठ भोजन है इसमें मिट्टी के जीवाणुओं में संख्यात्मक व गुणात्मक वृद्धि होती है। इस वृद्धि के कारण हवा व पानी से मिट्टी के जीवाणु नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश तथा अनेक खनिज पदार्थ पेड़-पौधों की जड़ों को उपलब्ध कराते हैं जिससे पेड़-पौधों में पत्ती-डालियाँ अधिक जगती है। घने पेड़ में रस-गंध अधिक होने के कारण अनेक कीट पतंगे, कीड़े-मकोड़े आकर्षित होकर आते हैं। इन कीट पतंगों को खाने के लिए अनेक प्रकार के पक्षी फिर इनको खाने के लिए बड़े पक्षी आते हैं। वनस्पति अधिक होने के कारण वनस्पति को खाने वाले जीव-जंतु की संख्या बढ़ती है जैसे—हिरण, खरगोश आदि। शाकाहारी जीवों की संख्या ज्यादा होने से उन जानवरों को खाने के लिए माँसाहारी जानवरों का विकास हो जाता है। इस प्रकार एक पूरे जीव समूह का चक्र बनता है और इस जीव समूह चक्र के कारण मनुष्य जीवन सुखमय शांतिमय तथा समृद्ध होता है। वनस्पति जीव-जंतु के कारण पर्यावरण संतुलन बना रहता है जिससे समय पर वर्षा प्रचुर मात्रा में होती है और सबको जल प्राप्त होता है। मिट्टी के जीवाणुओं को, पेड़-पौधों को, उनमें पलने वाले जीव-पक्षियों को जंगल में रहने वाले शाकाहारी, माँसाहारी जीवों तथा मानव को पीने व दैनिक उपयोग के लिए आवश्यक जल प्राप्त होता रहता है। इस प्रकार

सम्पूर्ण जीव समूह का पालन गोमाता करती है। हमारे यहाँ 84 लाख प्रजातियाँ मानी गई हैं, उनमें 20 लाख प्रजाति वनस्पति रूप में है। बाकी प्रजातियाँ चर हैं जो चलकर भोजन प्राप्त कर लेते हैं। पर्यावरण का उत्तम संरक्षण हमारी गोमाता करती है। वनस्पति को भोजन गाय अपने गोबर, गौमूत्र से देती है। सूर्य उनको प्रकाश देता है। धरती माता उन्हें गंध देती है। वायु देवता उनको श्वास लेने के लिए वायु देते हैं। इन्द्र देवता उनको वर्षा के द्वारा जल देते हैं। अतः हमारे यहाँ कहा है ‘जीव जीवस्य जीवनम्’। अतः परिस्थितकीय पर्यावरणीय संतुलन बनाये रखने और ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते कुप्रभावों से बचने के लिए गौ संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। ‘पृथ्वी सूक्त’ में विवरण मिलता है कि किस तरह यज्ञ पर्यावरण की रक्षा करते हैं। हमारी संस्कृति ‘यज्ञमयी’ संस्कृति है। गाय के 100 ग्राम घी से यज्ञ करने पर दस टन ऑक्सीजन निर्माण होती है। गौ घृत वेद मंत्र उच्चारण के साथ जब अग्नि में डाला जाता है तो उससे उत्पन्न सात्विक यज्ञ ऊर्जा मंत्र ध्वनि कम्पन के द्वारा विश्व ब्रह्माण में विशेष रूप से प्रसारित होती है जिसके प्रभाव से वायुमण्डल में ‘ओजोन परत’ का निर्माण होता है। अंतरिक्ष एवं भू-मण्डल पर सभी ग्रहों नक्षत्रों का तापमान, प्रभाव संतुलित होता है। सूर्य की प्रथम किरणें जो सृष्टि को प्राण ऊर्जा और पोषण देती है। उससे बल एवं शक्ति प्राप्त होती है। गौमाता यज्ञ ऊर्जा के माध्यम से प्राण शक्ति का सृजन करती है।

●●

27. भूजल स्तर गिरावट—कारण, इसे रोकने में गाय की भूमिका

भूजल गिरावट से जुड़ी कुछ खास बातें समझना अति आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन से तापमान में वृद्धि और बारिश के पैटर्न में बदलाव होता है जिससे भूजल प्रणालियाँ सीधे प्रभावित होती हैं। भूजल स्तर में गिरावट के कई कारण हैं जैसे—कृषि के लिए भूजल की बढ़ती माँग, सिंचाई के लिए भूजल पंपिंग और प्रदूषण, भूजल स्तर में गिरावट से फसलों की पैदावार पर असर पड़ता है। वर्षा जल संचयन, जल उपचार प्रणालियों में निवेश, सिंचाई तकनीकों में सुधार, भूजल संसाधन दुनिया का सबसे मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन हैं।

दोषपूर्ण सिंचाई प्रणाली व खेती में बढ़ते कृषि रसायनों के प्रयोग से भूजल की गुणवत्ता, भूमि के उपजाऊपन एवं फसल उत्पादों की गुणवत्ता में कमी और उत्पादकता में कमी जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं जिसका अंततः मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

जल संकट का प्रमुख कारण दुनिया की आबादी में वृद्धि, लोगों के जीवन स्तर में सुधार, खपत के बदलते पैटर्न पानी की बढ़ती वैश्विक माँग जैसे कुछ कारण हैं। जलवायु परिवर्तन जैसे—मौसम के बदलते पैटर्न, बड़े पैमाने पर

पेड़ों की कटाई, प्रदूषण में वृद्धि, ग्रीनहाउस गैसों और पानी का बेकार इस्तेमाल पानी की अपर्याप्त आपूर्ति का कारण बनता है।

भूजल रिक्तीकरण का सबसे अच्छा समाधान सतही जल की आपूर्ति बढ़ाने और भूजल की माँग को कम करने से भूजल की कमी को कम किया जा सकता है जिससे स्थिरता को बढ़ाया जा सकता है। भारत में घटते जलस्तर का मुख्य कारण देश में पानी के परम्परागत स्रोत कम वर्षा व बेतरतीब दोहन के चलते खत्म होते जा रहे हैं। भूजल की समस्या का समाधान फसल चक्र के निर्धारण से भूजल को संरक्षित किया जा सकता है। कम जल वाले क्षेत्रों में कम जल खपत वाली फसलें उगाई जानी चाहिए तथा जहाँ जल की अधिक खपत है। वहाँ अधिक जल खपत वाली फसलें उगाई जानी चाहिए। हर क्षेत्र में जल की उपलब्धता के अनुसार फसल उगाने की अनुमति दी जानी चाहिए।

जल संरक्षण के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं ? यह जाँच करना चाहिए कि आपके घर में पानी का रिसाव न हो। जितनी आवश्यकता हो उतने ही जल का उपयोग होना चाहिए। पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद बंद करना चाहिए। मंजन करते

समय जल को बंद रखें तथा आवश्यकता होने पर ही खोलें। नहाने के लिए अधिक जल को व्यर्थ न करें। जल संकट को रोकने के लिए जल को सिंचाई के लिए उपयोग करना चाहिए। बाढ़ नियंत्रण तथा हाइड्रोलॉजिकल सर्वे और बाँध निर्माण करना चाहिए। भूमिगत जल क रीचार्जिंग तथा व्यय को रोकना चाहिए। अधिक जल तथा कम जल वाले स्थानों को स्थानांतरण करना चाहिए। मृदा अपरदन को रोकने के लिए बाह्य मृदा को बनाए रखना चाहिए।

भू-जल की कमी को रोकने के लिए वैकल्पिक तरीकों में पेड़ लगाने से अनगिनत लाभ होते हैं, जिसमें भू-जल की बहाली भी शामिल है। हमें अपने आस-पास जितना संभव हो सके उतने पेड़ लगाने चाहिए और अपने समाज में बगीचों के सावधानीपूर्वक रख-रखाव को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। जागरुकता बदलाव की दिशा में पहला कदम है।

भारत विश्व स्तर पर भूजल का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है जो अकेले उससे ज्यादा पानी का दोहन करता है जितना अमेरिका और चीन मिलाकर करते हैं। आज भारत के अधिकांश लोगों के लिए भू-जल ही पानी का एकमात्र स्रोत है, जो खेती और घरेलू उपयोग के लिए भारी मात्रा में पानी उपलब्ध कराता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का पैटर्न

तेजी से अप्रत्याशित होते जाने से भू-जल और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा।

भारत के लगभग दो तिहाई, 63% जिले भूजल स्तर गिरने से पहले ही खतरे में हैं। कई मामलों में, भू-जल दूषित हो रहा है। चिंताजनक बात यह है कि जिन जिलों में भू-जल स्तर 8 मीटर से नीचे चला गया है। वहाँ गरीबी दर 9-10% अधिक है जिससे छोटे किसान विशेष रूप से कमजोर हो गए हैं। यदि मौजूदा रुझान जारी रहता है तो भारत की कम-से-कम 25% कृषि जोखिम में होगी।

भारत का दो तिहाई हिस्सा सूखा जोखिम से ग्रस्त है। सूखा मुख्य रूप से वर्षा आधारित कृषि को प्रभावित करता है जो भारत के बोए गए क्षेत्र का लगभग 60% है।

“यज्ञ से पृथ्वी पर जल वर्षा का पर्याय”

गौमाता के स्तन में चारों समुद्र का वास है, आकाशगंगा, पृथ्वीगंगा, पातालगंगा इन तीनों गंगा का स्रोत गाय के स्तन से प्राप्त क्षीरसागर अर्थात् दूध की धारा है। गौ दुग्ध से प्राप्त घृत जब अग्नि में डाला जाता है तो उससे उत्पन्न यज्ञ ऊर्जा विश्व ब्रह्माण में प्रसारित होकर उपर्युक्त तीनों गंगा को सागर के रूप में शक्ति एवं बल प्रदान करता है। अर्थात् पृथ्वी पर जल वर्षा का पर्याय बनता है। इसलिए वेद में कहा गया है गाय के थन में चारों समुद्रों का वास है।

आज विज्ञान भी कहता है कि पानी का वैज्ञानिक फार्मुला H_2O है अर्थात् हाईड्रोजन गैस दो भाग और ऑक्सीजन गैस एक भाग, अंतरिक्ष में हाईड्रोजन और ऑक्सीजन गैस संतुलित मात्रा में होने से पृथ्वी पर जल वर्षा का योग बनाता है। इसलिए गौ घृत से यज्ञ करने पर यज्ञ से उत्पन्न ऊर्जा अंतरिक्ष में हाईड्रोजन और ऑक्सीजन गैस संतुलित करती है। एक चम्मच गाय का घी अग्नि में

डालने से लगभग 50 किलो ऑक्सीजन उत्पन्न होता है। हमारे द्वादश ज्योतिर्लिंग वर्षा के आकर्षण के केन्द्र हैं, यहाँ क्रमशः विधि विधान से यज्ञ किया जाय तो सारे भारत में पर्याप्त वर्षा हो सकती है। इनमें आठ ज्योतिर्लिंग अरब सागर के मानसून को प्रभावित करते हैं। चार ज्योतिर्लिंग बंगाल की खाड़ी गंगा सागर की हवाओं को प्रभावित करते हैं।

●●

28. संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यांकों की पूर्ति के लिए गौ-संस्कृति को आत्मसात करना होगा—इससे आदर्श निर्माण होगा

हम सभी बातचीत में आदर्श समाज व्यवस्था का वर्णन 'राम राज्य' के रूप में करते हैं। सब कुछ अच्छा हो, ऐसे में हम सहजता से बोलते हैं 'बोलते हैं 'भाई, राम राज्य है !' यह राम राज्य का अर्थ क्या है ?

सामान्य परिभाषा में राम राज्य का अर्थ कल्याण राज्य यानि की सुराज्य। सच्चा स्वराज ! जहाँ राजा-प्रजा समेत समग्र जीव सृष्टि सुखी हो, जहाँ जल, जमीन, जंगल, जानवर और जन समुदाय समेत सभी की समान सुरक्षा हो, जहाँ जन-जन के बीच अच्छा तालमेल हो, आदि इस प्रकार की श्रेष्ठ समाज व्यवस्था को यदि एक वाक्य में कहा जाए तो 'सुखी, संपन्न, समृद्ध, शिक्षित, सुरक्षित, स्वस्थ, स्वावलंबी, स्वाभिमानी, स्वदेशी, समरस, संस्कारी समाज'। इस संदर्भ में गौमाता को जब 'मातरः सर्व भूतानाम् गावः सर्व सुखप्रदा' कहा गया है, तभी 'राम राज्य की उपरोक्त कल्पना को साकार करने में गौमाता का विशेष महत्व है।

वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 17 सतत विकास लक्ष्यांकों के माध्यम से संपूर्ण विश्व को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2023 तक कल्याणकारी विश्व की कल्पना साकार करने का लक्ष्य है। भारतीय समाज व्यवस्था

जो वसुधैव कुटुम्बकम्, भवतु सर्व मंगलम् और सर्व जीव हितावह की विभावना के पोषक हैं, इसमें सभी उपरोक्त लक्ष्य शामिल हैं। भारत वर्षे गौ, गंगा, गीता, गायत्री और गोविंद की संस्कृति की भूमि है। उपरोक्त लक्ष्यों की पूर्ति के लिए गौसंस्कृति की विशेष भूमिका को समझने का प्रयास करते हैं।

लक्ष्य 1. गरीबी को पूर्ण रूप से समाप्त करना—गौपालन और गाय के पंचगव्य उत्पादों द्वारा आर्थिक उपार्जन के माध्यम से गरीबी समाप्त की जा सकती है। ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ कई विधवा बहन और आदिवासी परिवार गायों के माध्यम से समृद्ध हुए हैं।

लक्ष्य 2. भूखमरी की समाप्ति—गाय का दूध, दही, घी श्रेष्ठ आहार है। गौर आधारित कृषि उत्पादों में श्रेष्ठ पोषक तत्व होते हैं। गौ कृषि शाश्वत कृषि है। इसका पर्याप्त मात्रा में उत्पादन भूखमरी में सहायक होगा।

लक्ष्य 4. गुणवत्ता युक्त शिक्षा—पंचगव्य मेधावर्धक, स्वास्थ्यप्रद और शक्तिवर्धक है। इसलिए श्रेष्ठ, बुद्धि जीवी, निरोगी संतान के निर्माण में सहायक है। गौ पालन से परिवार आर्थिक रूप से सक्षम और स्वस्थ होने से बच्चों को समान रूप से उत्तम शिक्षण दिलाई जा सकती है।

लक्ष्य 5. लैंगिक समानता—गौ मात के प्रति पूज्य भाव और महिलाओं द्वारा विशेष गौपालन और गौर उद्यमिता के कारण महिला सशक्तिकरण में गति आएगी, इससे महिलाओं के प्रति समानता की भावना में बढ़ोत्तरी होगी।

लक्ष्य 6. शुद्ध जल और स्वच्छता—गाय का पंचगव्य गुणकारी और श्रेष्ठ औषधी है। यह जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ता है। इससे जल संचयन को बढ़ावा मिलता है। जल की शुद्धता बढ़ती है। गाय का पंचगव्य वायु, जल, जमीन, जंगल और जीव सृष्टि—सभी को शुद्ध और स्वच्छ रखता है।

लक्ष्य 7. सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा—गाय के गोबर-गौमूत्र द्वारा निर्मित बायोगैस, सी.एन.जी., बिजली, बायोफर्टिलाइजर सहित घरेलू, सरल और पोषणक्षम ऊर्जा पर्यावरण के पूरक हैं। पृथ्वी के तल में स्थित जीवाश्म ईंधन खत्म होने पर ऊर्जा का समाधान गौमाता ही है।

लक्ष्य 8. शुभ कार्यों द्वारा सर्व समावेशी आर्थिक विकास और उद्यमिता—गौपालन एक पवित्र और पुण्य कार्य है। साथ ही, उत्तम और श्रेष्ठ व्यवसाय है, पर्यावरण का पूरक है। गौधन आर्थिक विकास का प्रमुख हिस्सा है। गौर आधारित उद्यमिता महिला और युवा रोजगार के श्रेष्ठ माध्यम हैं, आर्थिक संपन्नता की सीढ़ी हैं।

लक्ष्य 9. टिकाऊ उद्योगों, स्टार्ट अप और आधारभूत ढांचे का विकास—गौर आधारित कृषि, अन्न, फल, फूल, सब्जी का उत्पादन, दूध और दूध के उत्पाद, गौमूत्र से दवाईयाँ और बायो-कीटनाशक, गोबर से बायोफर्टिलाइजर और उसे सहायक मशीनरी, मार्केटिंग आदि से टिकाऊ सर्वसमावेशी बनाते हुए, विकेन्द्रित उद्यमिता द्वारा स्टार्टअप सहित औद्योगिक विकास आर्थिक संपन्न समाज रचना में सहायक साबित होगा।

लक्ष्य 10. वैश्विक असमानता दूर होगी—‘गावो विश्वस्थ मातर-गार्व सर्व सुखप्रदार्थः’ गौमाता धर्म, जाति, संप्रदाय, रंग या भौगोलिक भेदभाव के बगैर उसके पंचगव्य द्वारा सभी का समान रूप में हित और कल्याण करती है।

इससे मानसिकता बदली जा सकती है और विविध समाज को जोड़ा जा सकता है। गौमाता सार्वजनीन, सार्वदेशिक, सार्वभौतिक और सार्वलौकिक है, समन्वयकारी है। सभी के प्रति करुणा और स्नेह बरसाती है। भेदभाव दूर करती है। मानव मात्र को संस्कारी और सद्गुणी बनाने की शक्ति रखती है।

लक्ष्य 11. शहरी और सामुदायिक विकास—गौपालन, गौआधारित कृषि द्वारा ग्राम्य समूहों का आर्थिक विकास संभव होगा। गौआधारित सहायक उद्योग, मशीनरी मार्केटिंग द्वारा शहरों की समृद्धि में वृद्धि होगी। इस प्रकार

सर्व समावेशी और टिकाऊ सर्वत्र विकास में भागीदार होगी।

लक्ष्य 12. जवाबदेह उत्पादन और उपभोग से गौ उत्पादनों और गौर आधारित उद्योग प्रमाणिक, पवित्र और उमदा व्यवस्था के पूरक हैं। गाय आध्यात्मिकता और सुचिता का प्रतीक है। पंचगव्य संवेदनशील, जिम्मेवार और समाजसेवी व्यक्तियों के निर्माण में सहायक होता है। इससे ऐसा समझदार और जिम्मेवार समाज उपभोग में और उत्पादन में भी संयमित बनकर सादा जीवन, उच्च विचार के साथ पवित्र जीवन जीता है।

लक्ष्य 13. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव—गाय और गाय के पंचगव्य श्रेष्ठ पर्यावरण रक्षक हैं। गाय का घी वातावरण शुद्धिकरण के लिए श्रेष्ठ है। गौमूत्र भी बैक्टीरिया और वाइरस मुक्त वातावरण के निर्माण में सहायक होते हैं। गाय का गोबर हवर, यज्ञ और जैविक खाद द्वारा जल, जमीन और वायु की रक्षा करता है। गाय का सान्निध्य दूषित तरंगों को दूर करने में मददगार होता है।

लक्ष्य 14. सामूहिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग—गौ संस्कृति आधारित सक्षम, समर्थ, व्यक्ति और समाज उन्हें उपलब्ध संसाधनों और टेक्नोलॉजी का विवेकपूर्ण उपयोग करेंगे। पर्यावरण की रक्षा करेंगे। प्रत्येक जीव के प्रति करुणाशील होंगे। संवेदनशील बनेंगे। जीव सृष्टि के सहायक होंगे।

लक्ष्य 15. भूमि पर जीव सृष्टि—पृथ्वी, मानव, प्राणी और वनस्पति का निर्माण सृष्टि से हुआ है। इनकी सहजीविता और सहाय्य एक-दूसरे के पूरक हैं। गाय श्रेष्ठ जीवात्मा है। गौ आधारित कृषि, गौपालन और पंचगव्य से जमीन बंजर होने से बचती है और उसकी उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है। इससे जंगलों और वृक्षों की रक्षा होगी। जैविक विविधता बनी रहेगी। पर्यावरण रक्षा होगी। पृथ्वी पर जीवन बना रहेगा।

लक्ष्य 16. शांति और न्यायप्रिय समाज—गौमाता करुणा की मूर्ति है। दयावान है। कल्याणकारी है। शांति प्रदायिनी है। गाय का सान्निध्य जीवन में शांति लाता है। सुख देता है। स्वस्थ रखता है। सुरक्षित रखता है। झगड़े से दूर रखता है। इससे न्यायपूर्ण, शांतिप्रिय, समरस और संस्कारी समाज के निर्माण में सहभागी बन सकेंगे। गौमाता का जीवन ही परोपकारी है।

लक्ष्य 17. वैश्विक सामूहिक भागीदारी—गौमाता सर्वहितकारी है। सर्व कल्याणकारी है, सर्व सुखप्रदा है। वह मानव जीवन में श्रद्धापूर्वक केन्द्र स्थान पर बनी रहेगी तो 'वसुधैव कुटुंबकम्' की विभावना को साकार करने में सहायक होगी।

इस प्रकार वैश्विक भागीदारी द्वारा सबका साथ, सबका प्रयास, सबका विश्वास और

सबका विकास से सर्व समावेशक समरस-एकात्मभाव से युक्त वैश्विक कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

आदर्श समाज व्यवस्था के लिए सभी 'स' का समावेशी प्रदान करने वाली गाय माता का महात्म्य अमूल्य और अतूल्य है। प्रत्येक धर्म और संप्रदाय इस संबंध में एकमत हैं, जो गौमाता को विश्व वंदनीय बनाता है।

सर्वगुण संपन्नता से युक्त गौवंश की सुगंध, दिव्य विश्व के निर्माण में उपकारक होगी। 21 वीं शताब्दि में गौ संस्कृति आधारित समाज की व्यवस्था ही व्यक्ति, समष्टि और परमेष्टि तक कल्याण का मार्ग करने वाला कारक होगा।

विज्ञान और टेक्नोलॉजी द्वारा विकास के मार्ग को विनाशकारी न बनाकर और यथायोग्य उपयोग द्वारा गौ आधारित समाज व्यवस्था का स्वीकार कर, विश्व कल्याण प्राप्त किया जा सकता है। 'राम राज्य' की स्थापना चरितार्थ हो सकती है। नई पीढ़ी के सुंदर विश्व के लिए गौ विज्ञान को जितना जल्दी समझकर स्थापित करें, वही सभी के हित में है। मानवीय और प्राकृतिक आपदाएँ समग्र सृष्टि को संपूर्ण प्रलय की ओर ले जाएं इससे पहले हम जाए जाएं तो अच्छा होगा ! 'वंदे मातरम्'।

●●

मॉडल-प्रश्नोत्तरी

सही विकल्प चुनिए—

1. गाय संपत्ति का भंडार है किसमें कहा गया है—
(a) यजुर्वेद में (b) ऋग्वेद में
(c) अथर्ववेद (d) अग्निपुराण में।
2. “जो वस्तुएँ देवता समान पूज्यनीय हैं उनमें अग्नि सूर्य जल और गाय हैं” किसने कहा है—
(a) ऋषि वामदेव गौतम (b) वेदव्यास
(c) हरिप्रभु (d) ऋषि आप स्तम्भ।
3. गौ माता समस्त देवों की जननी है किसमें वर्णन है—
(a) स्कन्ध पुराण (b) ब्रह्माण्ड पुराण
(c) भविष्य पुराण (d) अग्नि पुराण।
4. गौ रक्षा के लिए गौत्र की सृष्टि हुई। किसमें वर्णन मिलता है—
(a) ऋग्वेद में (b) सामवेद में
(c) यजुर्वेद में (d) अग्निपुराण में।
5. अपने माता-पिता की भाँति श्रद्धापूर्वक गायों का पालन करना चाहिए। किसमें वर्णन मिलता है—
(a) ब्रह्म पुराण (b) पद्म पुराण
(c) स्कन्द पुराण (d) गीता।
6. गायों की एक मात्र परिक्रमा करने से मनुष्य सारे पापों से छूटकर अक्षय स्वर्ग को प्राप्त करता है। यह वर्णन किसमें है—
(a) विष्णु स्मृति (b) पद्म पुराण
(c) विष्णु धर्मोत्तर पुराण (d) ब्रह्म पुराण।
7. आत्मा से भी अधिक गाय की रक्षा का ध्यान रखना चाहिए किसमें कहा गया है—
(a) विष्णु स्मृति (b) विष्णु धर्मोत्तर पुराण
(c) विष्णु पुराण (d) इनमें से कोई नहीं।
8. गौमाता के गोबर में साक्षात् लक्ष्मी का वास होता है। वर्णन किसमें है—
(a) विष्णु पुराण (b) ब्रह्म पुराण
(c) पद्म पुराण (d) इनमें से कोई नहीं।

9. पाण्डु पुत्रों में कौन गौ वैज्ञानिक था—
 (a) युधिष्ठिर (b) सहदेव
 (c) अर्जुन (d) भीम।
10. जो प्रतिदिन गौ का स्पर्श करता है वह प्रतिदिन तीर्थ जल में स्नान करने का फल पाता है। वर्णन कहाँ मिलता है—
 (a) महाभारत (b) रामायण
 (c) भगवद् गीता (d) अग्निपुराण।
11. सृष्टि के आदि में मनुष्य और गाय दोनों आये थे। दोनों मौन थे। पहले गाय ने बोलना शुरू किया तथा उसके सहारे से मनुष्य ने मुँह खोला अतः गायों से मनुष्य को बोली मिली। किसने अपने मास्य में यह व्याख्या की है—
 (a) महात्मा रवीष्ट (b) सायणाचार्य
 (c) महर्षि वशिष्ठ (d) इनमें से कोई नहीं।
12. महाराज विराट के पास उत्तम जाति की कितनी गाय थी—
 (a) चार लाख (b) एक लाख
 (c) तीन लाख (d) दो लाख।
13. महाराज नन्द के पास कितनी गाय थी—
 (a) नौ लाख (b) पाँच लाख
 (c) दो लाख (d) एक लाख।
14. महाराज मृग द्वारा कितनी गाय ब्राह्मणों को दी गई थी—
 (a) पचास लाख (b) पचीस लाख
 (c) एक करोड़ (d) एक लाख।
15. महर्षि वशिष्ठ की कामधेनु का नाम क्या था—
 (a) नंदनी (b) शबला
 (c) कपिला (d) इनमें से कोई नहीं।
16. महाराज जनक ने एक हजार गायों का दान किसे किया था—
 (a) इक्ष्वाकु (b) बाणासुर
 (c) याज्ञवल्क्य (d) इनमें से कोई नहीं।
17. राक्षसराज रावण प्रतिदिन किसकी प्रदक्षिणा करता था—
 (a) गौमाता की (b) यज्ञ कुण्ड
 (c) वट वृक्ष (d) इनमें से कोई नहीं।

18. धन की देवी लक्ष्मी पहले पहल पृथ्वी पर गायों के रूप में आयी, उन्होंने जो गोबर त्यागा उससे किसकी उत्पत्ति हुई—
 (a) बिल्व वृक्ष (b) तुलसी
 (c) अशोक वृक्ष (d) इनमें से कोई नहीं।
19. यज्ञों का फल गौ माता किसमें बताया गया है—
 (a) महाभारत (b) रामायण
 (c) पद्म पुराण (d) इनमें से कोई नहीं।
20. गाय के दस हजार वर्ग किसके पास थे—
 (a) युधिष्ठिर (b) नकुल
 (c) सहदेव (d) अर्जुन।
21. जिस स्थान पर गाय सुखपूर्वक रह सके वहाँ की रजत पवित्र हो जाती है। वह स्थान तीर्थ बन जाता है। यह किसमें कहा गया है—
 (a) ऋग्वेद में (b) अथर्ववेद
 (c) महाभारत (d) इनमें से कोई नहीं।
22. महाभारत में 18 लाख अक्षेहिणी सेना के विनाश का पाप नष्ट करने के लिए भगवान कृष्ण ने महाराज युधिष्ठिर को कौन-सा व्रत रखने की सलाह दी थी—
 (a) कार्तिक पूर्णिमा (b) गोवत्स द्वादशी
 (c) देवप्रबोधिनी (d) इनमें से कोई नहीं।
23. शातवाहन काल में यज्ञों के समय गौओं के दान करने का उल्लेख नाणे घाट में मिले शिलालेखों में मिलता है यह किस राज्य में है—
 (a) गुजरात (b) राजस्थान
 (c) महाराष्ट्र (d) गोवा।
24. तीर्थ स्थानों पर प्राणी हत्या न होने देने के आदेश जारी करवाने वाले हीर विजय सूरी किस मत के थे—
 (a) बौद्ध मत (b) जैन मत
 (c) पारसी मत (d) इनमें से कोई नहीं।
25. सम्राट अशोक के शिलालेखों में गाय-बैल आदि प्राणियों की हत्या रोकने की आज्ञाएँ जारी की हैं। सम्राट अशोक किस मत से संबंधित है—
 (a) जैन मत (b) बौद्ध मत
 (c) पारसी मत (d) इनमें से कोई नहीं।

26. प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभ देव ने कृषि का उत्थान जन-जन में किया। इसलिए उनका चिन्ह है—
 (a) गौमाता (b) बैल
 (c) भैंस (d) इसमें से कोई नहीं।
27. महावीर स्वामी के समय द्वादशांक सूत्र में कितने श्रावकों का वर्णन है—
 (a) बारह श्रावक (b) तेरह श्रावक
 (c) ग्यारह श्रावक (d) चौदह श्रावक।
28. पृथ्वी की आत्मा उन लोगों को श्राप देती है जो गोचर भूमि और खेतों को कब्रिस्तान बना देते हैं ? किस मत में कहा गया है—
 (a) जरप्रसू मत (b) बौद्ध मत
 (c) जैन मत (d) इनमें से कोई नहीं।
29. गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था कि यह खालसा पंथ धर्म, गौ-ब्राह्मण, साधु-गरीब तथा दीन-दुखियों की रक्षा के लिए है। किस पंथ से संबंधित है—
 (a) सिक्ख पंथ (b) बौद्ध मत
 (c) जैन मत (d) इनमें से कोई नहीं।
30. यज्ञों की प्रायः समस्त वस्तु किससे प्राप्त होती है—
 (a) गौ माता से (b) जल से
 (c) पर्वत से (d) इनमें से कोई नहीं।
31. समुद्र मंथन से चौदह रत्न निकले जिसमें प्रथम उत्पत्ति हुई—
 (a) कामधेनु (b) सुभद्रा
 (c) सुशीला (d) इनमें से कोई नहीं।
32. गुरु वशिष्ठ ने जिनकी आँख में नंदिनी गाय का गौमूत्र आज दिया जिससे उनको दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई कौन थे—
 (a) राजा रामचंद्र जी (b) राजा रघु
 (c) राजा विराट (d) इनमें से कोई नहीं।
33. संतान हीनता से दुःखी महाराजा दिलीप को किस गुरु ने संतान प्राप्ति की याचना हेतु नंदनी गाय दी और उसका भली प्रकार पूजन और सेवा करने कहा—
 (a) गुरु वशिष्ठ (b) महर्षि गौतम
 (c) ब्रह्मा जी (d) इनमें से कोई नहीं।

34. देवताओं ने किसका मूल्य एक गाय रावा और दही अश्विनी कुमार को देकर संतुष्ट किया गया—
 (a) गणेश जी (b) महादेव जी
 (c) कार्तिकेय जी (d) इनमें से कोई नहीं।
35. अग्नि पुराण में भगवान धनवंतरी किससे कहते हैं कि गौएँ पवित्र एवं मंगलमयी हैं—
 (a) आचार्य सुश्रुत (b) आचार्य पाणिनी
 (c) आचार्य गौतम (d) इनमें से कोई नहीं।
36. वैदिक युग धर्म सिद्धांत के अनुसार किसकी सेवा साधना का विशेष महत्व था—
 (a) वेद, यज्ञ (b) अग्नि
 (c) गौमाता (d) सभी।
37. किसने राष्ट्र में गौ हत्या के विरुद्ध आन्दोलन चलाया ? कई संत शहीद हुए—
 (a) करपात्री जी महाराज (b) विनोबा भावे
 (c) विवेकानंद (d) लाल बहादुर शास्त्री।
38. पूर्वकाल में किस कारण से भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था—
 (a) गौधन सम्मान (b) धन धान्य
 (c) रत्न (d) इनमें से कोई नहीं।
39. गाय का दूध बेचकर शिक्षा ग्रहण करने वाले देश के पूर्व प्रधानमंत्री का नाम क्या है—
 (a) लाल बहादुर शास्त्री (b) सरदार पटेल
 (c) नरेन्द्र मोदी (d) इनमें से कोई नहीं।
40. किसने महादेव जी को कई गौएँ और एक वृषभ दिया था—
 (a) प्रजापति जी (b) ब्रह्माजी
 (c) नारद जी (d) इनमें से कोई नहीं।
41. किसने वृषभ को अपना वाहन बनाया—
 (a) शिव जी ने (b) गणेश जी ने
 (c) कार्तिकेय जी ने (d) इन्द्र ने।
42. हरे वृक्षों के जंगल में रहकर गौओं की सेवा करने वाले आचार्य थे—
 (a) आचार्य हरिद्रमत (b) आचार्य गौतम
 (c) गुरु वशिष्ठ (d) इनमें से कोई नहीं।

43. गौ सेवा से सत्यकाम जाबाल क्या बन गया—
 (a) वैज्ञानिक (b) शिक्षक
 (c) ब्रह्मज्ञानी (d) इनमें से कोई नहीं।
44. पाँच पांडवों में गायों की देखभाल करने वाला कौन था—
 (a) सहदेव (b) युधिष्ठिर
 (c) भीम (d) अर्जुन।
45. कौरव मत्स्य देश पर आक्रमण कर वही की कितनी गौओं का अपहरण कर ले जाते हैं जिन्हें अर्जुन मुक्त करवाते हैं—
 (a) साठ हजार (b) आठ हजार
 (c) बीस हजार (d) एक हजार।
46. गाय और ब्राह्मणों की रक्षा करने से महाराष्ट्र के किस राजा को गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक कहा जाता है—
 (a) शिवाजी महाराज को (b) महाराणा प्रताप को
 (c) शाहजी भोसले (d) इनमें से कोई नहीं।
47. ब्रह्मजीन योगिराज श्री देवरहा बाबा ने भारतीय संस्कृति की वृद्धि से किसका महत्व गायत्री और गंगा से बढ़कर बताया है—
 (a) पृथ्वी (b) जल
 (c) गौमाता (d) पर्यावरण।
48. प्रत्येक यजमान को यज्ञ अनुष्ठान के पूर्व किससे देह शुद्धि का विधान है—
 (a) गौदुग्ध (b) गौधृत
 (c) गौमूत्र (d) पंचगव्य-प्राशन।
49. पुत्र कामेष्ठी यज्ञ के समय दस लाख गौएँ दान किसने की थी—
 (a) राजा जनक ने (b) वृषमान जी ने
 (c) महाराज दशरथ ने (d) नंदबाबा ने।
50. किसके अनुरोध पर महाराज दशरथ ने श्री राम लक्ष्मण के हाथों स्वर्ण मंडित सींगों वाली चार लाख गायें कांसे के दोहन पाडा के साथ ब्राह्मणों को दान करवाई—
 (a) राजा जनक ने (b) ऋषि वशिष्ठ ने
 (c) ऋषि गौतम ने (d) इनमें से कोई नहीं।

51. भगवान राम प्रातःकाल सोकर उठते ही किसका स्मरण करते थे—
 (a) सुरभि गाय (b) अग्नि देव
 (c) कामधेनु (d) कपिला ।
52. मानस के अनुसार किसने विप्र, धेनु, सुर, संत हितार्थ अवतार लिया था—
 (a) भगवान श्री राम ने (b) स्वामी विवेकानंद
 (c) रामकृष्ण परमहंस (d) इनमें से कोई नहीं ।
53. भगवान श्री राम के वनवास के समय चौदह वर्ष तक किसने अक्ष के साथ गौमूत्र का सेवन किया था—
 (a) लक्ष्मण जी (b) भरत जी
 (c) शत्रुघ्न जी (d) माता सीता ।
54. भगवान श्री कृष्ण ने यदु कुल में जन्म लिया क्योंकि किसकी रक्षा करनी थी—
 (a) गौवंश (b) वृक्ष और लताओं की
 (c) मोर व पक्षियों की (d) इनमें से कोई नहीं ।
55. भगवान श्रीकृष्ण ने गायों की रक्षा के लिए किसका वध किया—
 (a) कंस का (b) रावण का
 (c) पूतना का (d) इनमें से कोई नहीं ।
56. गौ तत्व वेत्ताओं के आद्य आचार्य कौन हैं—
 (a) महर्षि वेदव्यास (b) महर्षि वशिष्ठ
 (c) महर्षि वाणिनी (d) इनमें से कोई नहीं ।
57. कृष्ण गौओं के पालक थे इसलिए क्या कहलाए—
 (a) गोपाल (b) नटवर
 (c) नंदकिशोर (d) श्याम सुंदर ।
58. नन्दराज के पास कितनी गायें थीं—
 (a) एक करोड़ (b) पाँच लाख
 (c) पचीस लाख (d) दस लाख ।
59. कौन-सी गाय का दूध पीने से सतोगुण की वृद्धि होती है, बुद्धि का विकास होता है, मनुष्य दीर्घ आयु को प्राप्त करता है—
 (a) देशी गाय (b) नील गाय
 (c) जर्सी गाय (d) इनमें से कोई नहीं ।

60. गौ माता के दूध को जीवनी शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ रसायन किसने कहा है—
 (a) महर्षि चरक (b) महर्षि सुश्रुत (c) कपिल मुनि (d) इनमें से कोई नहीं।
61. किसे वेदों में औषधि की महा औषधि कहा जाता है—
 (a) गौदधि (b) गौमूत्र (c) गोमय (d) गोघृत।
62. किससे लीपा पोता स्थल पवित्र माना जाता है—
 (a) देशी गाय के गोबर से (b) काली मिट्टी से
 (c) सीमेंट से (d) इनमें से कोई नहीं।
63. गौमूत्र को किससे आठ बार छानकर प्रयोग करना चाहिए—
 (a) बारीक सूती साफ वस्त्र से (b) प्लास्टिक छलनी से
 (c) टेरीकोट वस्त्र से (d) इनमें से कोई नहीं।
64. गौमूत्र का खाली पेट सेवन ज्यादा लाभकारी होता है, इसके सेवन के कितने घंटे तक कुछ भी खाद्य पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए—
 (a) एक घंटे तक (b) दो घंटे तक
 (c) तीन घंटे तक (d) चार घंटे तक।
65. किससे प्रज्ञा शक्ति, प्राण शक्ति का पोषण होता है। यह सभी आयु के व्यक्तियों के लिए लाभकारी औषधी है। यह पाचन शक्ति को ठीक रखता है—
 (a) हरी सब्जियाँ (b) जल
 (c) प्रोटीन (d) पंचगव्य।
66. किसमें गाय की बड़ी महिमा गायी गई, गाय को अह्वया कहा है—
 (a) वेदों में (b) गुरु ग्रंथ साहिब में
 (c) रामचरित मानस में (d) इनमें से कोई नहीं।
67. सृष्टि निर्माण में सर्वप्रथम गाय उत्पन्न हुई गाय के पश्चात् मनुष्य आये इसलिए वेद इसको क्या कहते हैं—
 (a) अग्रजा (b) द्विज
 (c) दुहिता (d) इनमें से कोई नहीं।
68. मनुष्य को गाय से बोली मिली 'म्हाँ' शब्द के सहारे मनुष्य बोल सके वेदों की टिप्पणी में किसने लिखा है—
 (a) श्री सायवाचार्य (b) विध्वामित्र जी
 (c) वशिष्ठ जी (d) इनमें से कोई नहीं।

69. गीर गाय का संबंध विशेष रूप से किस राज्य से है—
 (a) गुजरात (b) पंजाब
 (c) हिमाचल (d) मेघालय।
70. कोसली गाय का संबंध किस राज्य से है—
 (a) छत्तीसगढ़ (b) राजस्थान
 (c) गुजरात (d) आंध्रप्रदेश।
71. देशी गाय के गोबर और गौमूत्र का इस्तेमाल कर जो खेती की जाती है उसे क्या कहते हैं—
 (a) गौ आधारित खेती (b) सीढ़ीदार खेती
 (c) रासायनिक खेती (d) इनमें से कोई नहीं।
72. रासायनिक खाद और कीटनाशक का अंधाधुंध उपयोग फसलों को जहरीला बना देता है। इस कारण किस रोग के मरीजों की संख्या बढ़ते जा रही है—
 (a) हृदय रोग (b) एनिमिया
 (c) कैंसर (d) आँखों के रोग।
73. जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का प्रभावी समाधान है—
 (a) गौ आधारित खेती (b) रासायनिक खेती
 (c) हरित क्रांति (d) इसमें से कोई नहीं।
74. गौ आधारित कृषि की सर्वांगीण सफलता किस नस्ल को गोवंश के गोबर व गौमूत्र पर केन्द्रित है—
 (a) देशी नस्ल की गोवंश (b) विदेशी नस्ल की गाय
 (c) भैंस (d) इनमें से कोई नहीं।
75. गौ आधारित खेती के संबंध में क्या सत्य है—
 (a) रासायनिक खेती से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है
 (b) यह एक अच्छा विकल्प है
 (c) भूमि की उपजाऊ क्षमता बढ़ती है
 (d) उपरोक्त सभी।
76. छत पर बागवानी के लिए क्या आवश्यक है—
 (a) छत पर पर्याप्त धूप आनी चाहिए
 (b) छत मजबूत होनी चाहिए
 (c) जल निकासी का उचित प्रबंध होना चाहिए
 (d) उपरोक्त सभी।

77. स्वर्ण प्राशन के लाभ हैं—

- (a) बुद्धि को बढ़ाता है
- (b) पाचन शक्ति बढ़ाता है, रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है
- (c) वायरल संक्रमण से बचाता है
- (d) उपरोक्त सभी।

78. क्या सही है स्वर्ण प्राशन के संबंध में—

- (a) स्वर्ण प्राशन सोना, आयुर्वेदिक जड़ी बुटियाँ, देशी गाय का घी और शहद का मिश्रण है।
- (b) इसे पुष्य नक्षत्र में विशेष समय पर दिया जाता है
- (c) नवजात से लेकर सोलह वर्ष की आयु के बच्चों को स्वर्ण प्राशन दिया जाता है
- (d) उपरोक्त सभी।

79. ग्लोबल वार्मिंग का एक बड़ा कारण है—

- (a) वनों की कटाई
- (b) तालबों का गहरीकरण
- (c) तालाबों का सूखना
- (d) इनमें से कोई नहीं।

80. भूजल स्तर में गिरावट के कारण हैं—

- (a) जलवायु परिवर्तन से तापमान में वृद्धि
- (b) बारिश के पैटर्न में बदलाव
- (c) कृषि के लिए भूजल की बढ़ती माँग
- (d) उपरोक्त सभी।

81. ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को देखते हुए हमें संरक्षण करना होगा—

- (a) जल
- (b) जंगल
- (c) जमीन और जीव
- (d) उपरोक्त सभी का।

82. नदियों के जल में 60% के लगभग प्रदूषण है। वह जल हमें पीने को मिलता है। अतः गोबर गोमूत्र के द्वारा भूमि को शुद्ध कर जल प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है—

- (a) यह सत्य है
- (b) यह ऊर्जा सत्य है
- (c) यह सत्य असत्य दोनों हैं
- (d) यह पूर्णतः असत्य है।

83. बंजर होती भूमि को बचाने और पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु किसे बढ़ावा देना होगा—

- (a) गौ आधारित खेती
- (b) जल का अधिक प्रयोग
- (c) रासायनिक खाद
- (d) कीटनाशकों का अधिक प्रयोग।

84. ग्लोबल वार्मिंग से—

- (a) गंभीर तापमान वृद्धि की स्थिति पैदा होती है
- (b) जैव विविधता वाले पारिस्थितिकी तंत्र पनप नहीं पाते
- (c) मानव आबादी भी खत्म हो सकती है
- (d) उपरोक्त सभी।

85. ग्लोबल वार्मिंग से संबंधित क्या सही है—

- (a) प्राकृतिक आपदाओं का प्रचलन बढ़ा है
- (b) अधिक बवंडर, तूफान जंगल की आग आदि देखी है
- (c) जैसे-जैसे ग्रह गर्म होता जा रहा है दुनिया में ग्लेशियर और बर्फ की परतें पिघलती जा रही हैं, जिससे समुद्र का स्तर बढ़ता जा रहा है परिणामस्वरूप पृथ्वी की भूमि की सतह पर जगह कम हो रही है
- (d) उपरोक्त सभी सही हैं।

86. ग्लोबल वार्मिंग से कुप्रभाव—

- (a) बर्फ पिघलना
- (b) बाढ़ आना
- (c) जंगल में आग
- (d) उपरोक्त सभी कारणों से जैवविविधता वाले पारिस्थितिकीय तंत्र नष्ट हो रहे हैं।

87. मनुष्य को यदि शाश्वत जीवन जीना है—

- (a) प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर ही चलना होगा
- (b) प्रकृति को आधार बनाकर अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी
- (c) जल, जंगल, जमीन तथा जीव इन चारों का संरक्षण करना होगा
- (d) उपरोक्त सभी।

88. ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव से बचने के लिए—

- (a) भूमि की उर्वरा शक्ति को गौमूत्र, गोबर से बढ़ाना
- (b) वृक्षों की कटाई रोकना होगा
- (c) गौ हत्या, जीव हत्या रोकना होगा
- (d) उपरोक्त सभी आवश्यक।

89. यज्ञ विज्ञान के द्वारा उत्पन्न सात्विक ऊर्जा पृथ्वी में ग्लोबल वार्मिंग को रोकती है—

- (a) सत्य है
- (b) आंशिक सत्य है
- (c) ऊर्जा सत्य है
- (d) असत्य है।

90. देशी गाय के घी से हवन बड़े परिमाण में बार-बार किया जाए तो कार्बन डाई ऑक्साइड के बढ़ते खतरे से बचा जा सकता है—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) ऊर्जा सत्य है (d) आंशिक सत्य है।
91. जल संरक्षण के लिए उपाय किये जा सकते हैं—
 (a) पानी का रिसाव न हो
 (b) पानी के नल को इस्तेमाल करने के बाद बंद करना चाहिए
 (c) मंजन करते समय, नहाते समय, कपड़े धोते समय जल को व्यर्थ न करें
 (d) उपरोक्त सभी।
92. ग्लोबल वार्मिंग से तात्पर्य मानवीय गतिविधियों, मुख्य रूप से कार्बन डाईऑक्साइड CO_2 और मीथेन CH_4 जैसी ग्रीनहाउस गैसों (GHG) के उत्सर्जन के कारण पृथ्वी की सतह के औसत तापमान में दीर्घकालिक वृद्धि से है—
 (a) सही है (b) पूर्ण सही नहीं है
 (c) आंशिक सही है (d) इनमें से कोई नहीं।
93. ग्रीन हाउस गैसों और तापमान—
 (a) पृथ्वी की ग्रीनहाउस गैसों वायुमंडल की ऊष्मा को रोक लेती है
 (b) उसे अंतरिक्ष में जाने से रोकती है
 (c) इन गैसों की बढ़ी हुई सांद्रता से गर्मी स्थिर रहती है और वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है
 (d) उपरोक्त सभी।
94. वैश्विक तापमान की प्रवृत्तियों के संबंध में भारत की तापमान वृद्धि वैश्विक औसत से—
 (a) अधिक है (b) न अधिक है न कम
 (c) कम है (d) इनमें से कोई नहीं।
95. भारत में हीटवेव आमतौर पर मार्च से जून तक आती है और कुछ असाधारण परिस्थितियों में जुलाई तक भी जारी रहती है—
 (a) कथन सत्य नहीं है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) उपरोक्त कोई नहीं।
96. देश के किस भाग में प्रतिवर्ष औसतन पाँच-छह बार 'हीटवेव' आती है—
 (a) उत्तरी भागों में (b) दक्षिणी भाग में
 (c) पश्चिम में (d) इनमें से कोई नहीं।

97. जलवायु परिवर्तन के कुप्रभाव—
 (a) खाद्य उत्पादन प्रभावित होता है
 (b) मूल्य में वृद्धि होती है
 (c) वायु की गुणवत्ता खराब होती है रोग संक्रामकता में वृद्धि होती है
 (d) उपरोक्त सभी।
98. परिस्थितिकीय पर्यावरणीय संतुलन बनाये रखने और ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते कुप्रभावों से बचने के लिए गौ संवर्धन अत्यंत आवश्यक है—
 (a) सही नहीं है (b) सही है
 (c) आंशिक सही है (d) इनमें से कोई नहीं।
99. किस तरह यज्ञ पर्यावरण की रक्षा करते हैं, वर्णन मिलता है—
 (a) श्री सूक्त में (b) शिव पुराण में
 (c) पृथ्वी सूक्त में (d) इनमें से कोई नहीं।
100. गौमाता यज्ञ ऊर्जा के माध्यम से प्राण शक्ति का सृजन करती है—
 (a) सत्य नहीं है (b) सत्य-असत्य है
 (c) सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
101. मनुष्य ने हजारों वर्ष पूर्व कृषि संस्कृति अपनाई। कृषि शोधकर्ता ऋषभदेव कुशल कृषक थे—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
102. कृषि कार्य में सहयोगी बना वृषभ बैल—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
103. तपस्वी गृत्समद ने कपास से रुई व रुई से सूत का धागा निकालना सिखाया—
 (a) पूर्णतः असत्य है (b) पूर्णतः सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
104. उपनिषद् रूपी गायों का दोहन करने वाले गोपाल कृष्ण ने हल धर बलराम की अगुआई में बिना कृषि, गौपालन किए मौज मस्ती करने वाले शासकों का शासन पलटा—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।

105. वराह मिहीर ने 400 वर्ष पूर्व किस फसल के लिए कौन सी खाद होनी चाहिए और वह खाद कैसे तैयार की जायेगी इसकी विधि बताई है किसमें—
 (a) वृहद् संहिता में (b) शिव पुराण में
 (c) महाभारत में (d) इनमें से कोई नहीं।
106. गेहूँ, चावल, मक्का, फल सब्जियों का जैविक तरीके से खेती का विकास भारत में हुआ। किसने एक हजार वर्ष पूर्व वृक्षायुर्वेद में विविध प्रकार के जैविक खाद का वर्णन किया है—
 (a) पाणिनी ने (b) गुरु वशिष्ठ ने
 (c) वैद्य सुरपाल ने (d) इनमें से कोई नहीं।
107. पूरे विश्व में खेती में रासायनिक खाद जहरीले कीटनाशक इत्यादि का प्रयोग कब तेजी से बढ़ा—
 (a) प्रथम विश्व युद्ध के बाद (b) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद
 (c) मालूम नहीं (d) इनमें से कोई नहीं।
108. 1943 में किस क्रांति के बाद विश्व में तेजी से कृषि को नुकसान पहुँचा—
 (a) हरित क्रांति (b) श्वेत क्रांति
 (c) नील क्रांति (d) इनमें से कोई नहीं।
109. जैविक खेती के माध्यम से ही मानवजाति को स्वस्थ, समृद्ध और आनन्दमय जीवन प्राप्त हो सकता है—
 (a) गलत है (b) सही है
 (c) आंशिक सही है (d) इनमें से कोई नहीं।
110. मिट्टी में रहने वाले केंचुओं को और जीवाणुओं को अधिक पौष्टिक और क्षमता प्रदान करता है—
 (a) गाय का गोबर (b) रासायनिक खाद
 (c) वर्षा जल (d) इनमें से कोई नहीं।
111. गौमूत्र और अनेक प्रकार की औषधीय पत्तियों जैसे—नीम, बेल, तुलसी, करंज, धतूरा, मंदार, सीताफल, लहसून, मिर्च आदि के द्वारा कीट नियंत्रक बनाया जाता है—
 (a) सत्य नहीं है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।

112. जैविक कीट नियंत्रक का प्रभाव मानव शरीर पर बुरा नहीं पड़ता है—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
113. जैविक खेती में सिंचाई के लिए पानी कम लगता है—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य (d) इनमें से कोई नहीं।
114. पर्यावरण में हो रहे व्यापक नुकसान को बचाने और मनुष्यों में हो रही अनेक प्रकार की बीमारियों की रोकथाम में जैविक खेती एक कारगर प्रयत्न है—
 (a) आंशिक सत्य (b) असत्य
 (c) सत्य (d) इनमें से कोई नहीं।
115. सैकड़ों वर्षों पुरानी जैविक खेती की व्यवस्था को अवैज्ञानिक घोषित करते हुए अधिक “अन्न उपजाओ” नामक कार्यक्रम शुरू हुआ और रासायनिक खाद जैसे यूरिया व सुपर फास्फेट के कारखाने लगे, कब—
 (a) 1950 के दशक से (b) 1910 के दशक से
 (c) 2000 से (d) इनमें से कोई नहीं।
116. सुपर फास्फेट यूरिया इत्यादि रासायनिक खाद के कारखाने खुलने के बाद किसानों को अनुदान पर ये उर्वरक उपलब्ध कराये जाने लगे—
 (a) सत्य है (b) सत्य नहीं है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
117. विगत 50 वर्षों में उपज तो बढ़ी परन्तु पर्यावरण के दूषित हो जाने की कीमत पर कृत्रिम आनुवंशिक परिवर्तित अनाज (Genetically Modified Food, GMF) के बीज बनने लगे—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
118. यदि ठीक पद्धति से जैविक खाद तैयार की जाये तो भारत में खाद की समस्या हल हो जाएगी—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।

119. छत्तीसगढ़ के कुछ प्रतिशत किसान, ग्रामीण कृषि पशुपालन और उनके उत्पाद तथा अपशिष्ट पदार्थ का उपयोग स्थानीय स्तर पर कृषि एवं उस पर आधारित कार्यों में कर रहे हैं—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
120. जैविक खेती में गोबर का उपयोग खाद बनाने और गौमूत्र का उपयोग कीटनाशक जीवामृत बनाने में किया जाता है—
 (a) सत्य नहीं है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
121. वर्तमान प्रचलित पद्धतियों में अनेक किसानों द्वारा गोमूत्र को पाँच प्रकार की पत्तियों जैसे—नीम, करंज, पतीता, सीताफल और अमरुद के साथ उबालकर ठंडा किया जाता है और छिड़काव हेतु विक्रय किया जा रहा है—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
122. भारत दुनिया के शीर्ष तीन ऐसे देशों में सम्मिलित है जहाँ जैविक कृषि क्षेत्र में सर्वाधिक विस्तार हुआ है—
 (a) सत्य है (b) सत्य नहीं है
 (c) आंशिक असत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
123. जहाँ जैविक कृषि भूमि का विस्तार हो रहा है उनमें छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान ऐसे राज्य हैं—
 (a) सत्य नहीं (b) सत्य
 (c) आंशिक सत्य (d) इनमें से कोई नहीं।
124. जैविक खाद बनाने की विधियाँ हैं—अमृत जल, झटपट खाद, गौमूत्र छिड़काव, नवधन्या हरी खाद—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
125. एक एकड़ जमीन के लिए देशी गाय का गोबर पर्याप्त है जैविक खाद बनाने हेतु—
 (a) सत्य है (b) असत्य है
 (c) आंशिक सत्य (d) इनमें से कोई नहीं।

126. गौमूत्र में छिड़काव हेतु कितना गुना पानी मिलाना चाहिए—
 (a) 4 गुना (b) 5 गुना
 (c) 6 गुना (d) 10 गुना।
127. गौमूत्र एक अच्छा कीट नियंत्रक है। गौ मूत्र गाय, बैल नंदी किसी का भी हो सकता है—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं
128. 10 से 40 दिन पुराना किसी बर्तन में मुँह बाँधकर रख दें बाद में कितना गुना पानी मिलाकर छिड़काव करना उपयोगी रहेगा—
 (a) 20 गुना (b) 10 गुना
 (c) 30 गुना (d) 40 गुना।
129. नीम की निम्बोली बीज एक किलो कूटकर कितने पानी में अच्छी तरह उबालकर छानकर पौधों में छिड़काव करते हैं—
 (a) 20 लीटर (b) 10 लीटर
 (c) 30 लीटर (d) 40 लीटर।
130. रासायनिक व रासायनिक कीटनाशक समाप्त हो तथा गोबर व गौमूत्र आदि से जैविक खाद कीट नियंत्रक काम में आने लग जाये तो भारत में किसानों का प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये बचेगा, करोड़ों लोगों को अपने ही गाँव में रोजगार मिलेगा, भूमि की उर्वरा शक्ति बची रहेगी, मानव जीवन सुरक्षित रहेगा, पर्यावरण शुद्ध रहेगा—
 (a) पूर्णतः सत्य है (b) पूर्णतः असत्य है
 (c) आंशिक असत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
131. जैविक खाद बनाते वक्त निम्न बातें ध्यान में रखना चाहिए—
 (a) जहाँ खेत हो या गौ शाला हो वहीं खाद बनाना अच्छा होगा
 (b) बारिश का पानी बहकर खाद वाले स्थान न आये
 (c) यथा संभव खाद छायादार स्थान पर बनाये
 (d) उपरोक्त सभी।
132. कौन-सा वाक्य सही है—
 (a) रासायनिक खादों के निरन्तर व अधिक उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होती जा रही है
 (b) खेती में ट्रैक्टरों एवं मशीनों के उपयोग के कारण गौवंश व गोबर की दिनोंदिन कमी होती जा रही है

- (c) लवण युक्त पानी की कमी के कारण भूमि के लिए लाभकारी जीवाणुओं की संख्या में कमी होती जा रही है।
 (d) उपरोक्त सभी सही हैं।
133. रासायनिक खाद के उपयोग के कारण अनाज में जहर की मात्रा बढ़ गई है—
 (a) सत्य है (b) सत्य नहीं है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
134. रासायनिक खाद के उपयोग से लोगों में कैंसर, अस्थमा व श्वास संबंधी बीमारियाँ बढ़ती जा रही है—
 (a) सत्य है (b) सत्य नहीं है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
135. जैसे दूध से दही बनाने के लिए जीवाणुओं की आवश्यकता रहती है वैसे ही जमीन में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए सूक्ष्म जीवाणुओं की आवश्यकता रहती है—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
136. हेल्थ रिसर्च में पाया गया है कि रासायनिक खाद कीटनाशकों के कारण पार्किन्सन नाम की बीमारी लोगों में तेजी से बढ़ रही है—
 (a) सत्य है (b) सत्य नहीं है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
137. जैविक खेती का मूल आधार केंचुआ है जिस खेत में जितना केंचुआ होगा उस भूमि की उर्वरता उतनी ही ज्यादा होगी—
 (a) सत्य है (b) सत्य नहीं है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
138. केंचुए पौधों के लिए अपने मल से पोषण आहार तैयार करते हैं और सूक्ष्म जीवाणुओं का पोषण कर सक्रिय करते हैं। केंचुए भूमि के जैविक पदार्थों को पचाकर नयी मिट्टी बनाने का काम करते हैं—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
139. देशी केंचुए खेत में हमेशा पाये जाते हैं। खेती में यदि रासायनिक उर्वरक का प्रयोग नहीं किया जाय तो केंचुओं की संख्या स्वतः ही—
 (a) बढ़ने लगेगी (b) घटने लगेगी
 (c) स्थिर रहेगी (d) इनमें से कोई नहीं।

140. एक टन वर्मी कम्पोस्ट के लिए लगभग कितने किलोग्राम केंचुओं की आवश्यकता है—
 (a) 2 किलोग्राम (b) 1 किलोग्राम
 (c) 3 किलोग्राम (d) 5 किलोग्राम।
141. औसतन साइज भर में पाँच लाख की संख्या में बढ़ जाते हैं—
 (a) 500 ग्राम (b) 1 किलोग्राम
 (c) 2 किलोग्राम (d) 3 किलोग्राम।
142. ढाई सौ केंचुए साल भर में पाँच लाख की संख्या में बढ़ जाते हैं—
 (a) आंशिक सत्य है (b) असत्य है
 (c) सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
143. एक एकड़ जमीन में कितना टन पर्याप्त होती है—
 (a) दो टन (b) तीन टन
 (c) चार टन (d) पाँच टन।
144. गोबर से बनी खाद में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं संख्या कितनी होती है—
 (a) 16 (b) 20
 (c) 10 (d) 8.
145. जैविक उर्वरकों के उपयोग वाली भूमि में पानी की तुलनात्मक रूप से जरूरत पड़ती है—
 (a) कम (b) अधिक
 (c) बराबर (d) इनमें से कोई नहीं।
146. रासायनिक उर्वरक तत्काल पोषक तत्व प्रदान करने में प्रभावी होते हैं लेकिन विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग न किया जाए तो पर्यावरण और जैव विविधता पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है—
 (a) सत्य नहीं है (b) आंशिक सत्य है
 (c) सत्य है (d) आंशिक असत्य है।
147. आयुर्वेद का विस्तार से वर्णन किसमें मिलता है—
 (a) अथर्ववेद (b) सामवेद (c) ऋग्वेद (d) यजुर्वेद।
148. आयुर्वेद के उत्थान के लिए गौ रक्षण अति आवश्यक है—
 (a) असत्य है (b) सत्य है
 (c) आंशिक सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।

149. गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गौमूत्र का एक निश्चित अनुपात में मिश्रण कहलाता है—
 (a) पंचगव्य (b) पंच महाकोष
 (c) पंचतत्व (d) इनमें से कोई नहीं।
150. पंचगव्य में क्षमता होती है—
 (a) रोग निरोधक (b) रोग प्रतिरोधक
 (c) रोगोपचार (d) उपरोक्त सभी।
151. पंचगव्य में गोबर को किस तरह प्रयोग में लाना चाहिए—
 (a) ज्यों का त्यों (b) गोबर का रस निकालकर
 (c) आधा गोबर व आधा गोबर रस (d) गोबर का रस निकालकर।
152. गाय से हमें गोबर, गौमूत्र तथा दूध प्राप्त होता है और इसी से खेती व कुटीर उद्योग कर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है—
 (a) सत्य नहीं है (b) आंशिक सत्य है
 (c) सत्य है (d) इनमें से कोई नहीं।
153. गोबर में लक्ष्मी का वास होता है। वर्णन किसमें आता है—
 (a) स्कन्द पुराण में (b) शिव पुराण में
 (c) महाभारत में (d) इनमें से कोई नहीं।
154. गोबर खाद से कृषि के साथ अन्य लाभ होते हैं—
 (a) अनुपयोगी गौ वंश को खुला छोड़ने की प्रवृत्ति बंद होने से उनके कत्लखाने में जाने की स्थिति पर रोक लगती है
 (b) गांव का धन व संसाधन गांव में ही रहता है
 (c) ग्रामीणों को रोजगार मिलता है, देश सम्पन्नता की ओर बढ़ता है
 (d) उपरोक्त सभी।
155. कौन-सा कथन सही है—
 (a) गौ सेवा भारतीय संस्कृति और परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है
 (b) यह धार्मिक आर्थिक और सामाजिक वृद्धि से महत्वपूर्ण है
 (c) गौ सेवा का समर्थन करना हमारी जिम्मेदारी है
 (d) उपरोक्त सभी।

156. कौन-सा कथन सही है—

- (a) गौ सेवा से हम समृद्ध होते हैं
- (b) गौ सेवा से सामाजिक समर सत्ता बढ़ती है
- (c) गौ सेवा से पर्यावरण संरक्षण से सहयोग होता है
- (d) उपरोक्त सभी।

157. गौ सेवा के अंतर्गत आता है—

- (a) गौमाता की सुरक्षा
- (b) गौमाता की देखभाल
- (c) गौमाता का पालन पोषण
- (d) उपरोक्त सभी।

158. सत्यकाम की सेवा से संबंधित कौन-सा कथन सत्य है—

- (a) एक सदाचारिणी ब्राह्मणी थी, उसका नाम जबाला था
- (b) जबाला के पुत्र का नाम सत्यकाम था
- (c) जबाला गुरुकुल में हरिद्रुमत गौतम ऋषि के यहाँ गया
- (d) उपरोक्त सभी।

159. सत्यकाम की गौसेवा से उसे क्या प्राप्त हुआ—

- (a) सत्यकाम की गौसेवा से उसे ब्रह्म तत्व के संबंध में ज्ञान प्राप्त हुआ
- (b) सत्यकाम को ज्ञान हुआ कि ब्रह्म “प्रकाश स्वरूप” है, ब्रह्म अनन्त लक्षणात्मक है, ब्रह्म ज्योतिष्मान है, ब्रह्म आयतन स्वरूप है
- (c) सच्चिदानंद घन लक्षण परमात्मा का बोध प्राप्त हुआ
- (d) उपरोक्त सभी।

160. गौ भक्तों की परिगणना में महाराज दिलीप का नाम बड़े ही श्रद्धाभाव से लिया जाता है किस कारण से—

- (a) क्योंकि सिंह के समक्ष छटपटाती नंदिनी गाय का मातृत्व उन्हें अपने जीवन से कहीं ज्यादा मूल्यवान लगा।
- (b) राजा दिलीप ने सिंह के समक्ष अपने शरीर को भक्षण हेतु रखा ताकि नंदिनी गाय की रक्षा हो सके।
- (c) राजा ने गौमाता से निवेदन किया माँ, बछड़े के पीने तथा होमादि अनुष्ठान के बाद बचे हुए तुम्हारे दूध को मैं पी सकता हूँ
- (d) उपरोक्त सभी।

161. कौन-सा कथन सही है—

- (a) गौ भारत की राष्ट्रीय समृद्धि और सम्पदा की विशिष्ट प्रतीक है
- (b) तपोवन संस्कृति की यह महत्वपूर्ण अंग है
- (c) गृहस्थों की ही नहीं आश्रम में रहने वाले ऋषियों की समृद्धि का परिचय भी उनके यहाँ रहने वाली गौओं की संख्या से मिलता है
- (d) उपरोक्त सभी।

162. राजा विराट की गो सम्पदा के संबंध में क्या सही है—

- (a) राजा विराट का मत्स्य देश अपनी विशाल गो सम्पदा के लिए प्रसिद्ध था
- (b) यह गो सम्पदा इतनी विशाल थी कि दूसरे शब्दों और शासकों की आँख इस पर लगी रहती थी
- (c) द्रोपदी सहित पाँचों पाण्डव अपने वनवास के 13 वें वर्ष में छद्म वेष में राजा विराट के यहाँ रह रहे थे
- (d) उपरोक्त सभी।

163. सहदेव ने राजा विराट के समक्ष अपने परिचय में कहा—

- (a) वे पाण्डवों के यहाँ गो संरक्षक थे
- (b) पाण्डवों की गौओं की विशाल संख्या, उनका वर्गीकरण गणना और देखभाल करना उनका काम था
- (c) गौओं के संबंध में उनकी भूत, भविष्य और वर्तमान की जानकारी अच्छी थी
- (d) उपरोक्त सभी।

164. कौन-सा कथन सत्य है—

- (a) गोपाल गो पालन में ही नहीं युद्ध कला में भी निपुण होते थे
- (b) कौरव मत्स्य देश पर आक्रमण कर 60 हजार गौओं का अपहरण कर लेते हैं अर्जुन भीषण युद्ध द्वारा विजय प्राप्त कर गौओं को मुक्त कराते हैं
- (c) गौ रक्षा हेतु पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास समाप्त किया
- (d) उपरोक्त सभी।

165. महाभारत गोहरण आख्यान क्या संदेश देता है—

- (a) महाभारत कालीन गौ सम्पदा के महत्व को दर्शाता है
- (b) यह गोरक्षण-व्यवस्था का ऐतिहासिक प्रमाण है
- (c) गौ-राष्ट्र की महत्वपूर्ण सम्पत्ति समझी जाती थी और उसकी अस्मिता और गरिमा का प्रश्न इससे जुड़ा हुआ था
- (d) उपरोक्त सभी।

166. च्यवन ऋषि की गौ भक्ति के संबंध में क्या सही है—

- (a) ऋषि च्यवन गंगा गर्भ में बैठकर तपस्या कर रहे थे, मछली पकड़ने वाला के जाल में आ गये
- (b) वे मछलियों के साथ बिकते हुए 'नहुष' के दरबार में पहुँचे
- (c) राजा मुनि जी के बदले एक थैली सोना देने लगा अंत में अपना समूचा राज्य तक देने लगा परंतु मुनि जी ने उसे एक गौ देने कहा
- (d) उपरोक्त सभी।

167. राजा ऋतम्भर के संबंध में कौन-सा वाक्य सत्य है—

- (a) जाबालि मुनि की आज्ञानुसार राजा ऋतम्भर राजा ऋतुपर्ण के पास गये
- (b) ऋतुपर्ण ने उन्हें कहा अब आप कपट छोड़कर तन, मन, वचन से सर्वलोकेश्वर भगवान श्री राम को संतुष्ट कीजिये वे संतुष्ट होकर आपकी समस्त कामनायें पूर्ण करेंगे और वे गौसेवा में लग गए
- (c) उनकी सेवा से संतुष्ट होकर कृपामयी देवी कामधेनु ने प्रकट होकर उन्हें अभीष्ट वर दिया, फलस्वरूप राजा ऋतम्भर के घर सत्यवान नामक पुत्र का जन्म हुआ
- (d) उपरोक्त सभी कथन सही हैं।

168. राजन ! तुम्हारा जीवन तो पुण्यों से भरा है, पर एक दिन तुमने छोटा सा पाप किया था। तुमने चरती हुई गाय को रोक दिया था। उसी पाप के कारण तुम्हें नरक का दरवाजा देखना पड़ा। अब तुम उस पाप से मुक्त हो गए और तुम्हारा पुण्य और भी बढ़ गया। राजा जनक से यह किसने कहा था—

- (a) धर्म राज ने
- (b) इन्द्र ने
- (c) नारद जी ने
- (d) इनमें से कोई नहीं।

169. गायों ! तुम दूसरों को आदर देने वाली हो। मैं तुम्हारी शरण में आयी हूँ, निर्दोष हूँ, और तुम्हारी सेविका हूँ यह जानकर मेरी रक्षा करो मुझे बताओ मैं तुम्हारे शरीर के किस भाग में रहूँ। गायों ने कहा यशस्विनी हमें तुम्हारा सम्मान अवश्य करना चाहिए। अच्छा तुम हमारे गोबर में निवास करो। गायों से यह वंदना किसने किया—

- (a) सरस्वती जी ने
- (b) लक्ष्मी जी ने
- (c) पार्वती जी ने
- (d) इनमें से कोई नहीं।

170. गाय के आहार की मात्रा का निर्धारण—

- (a) उसके शरीर की आवश्यकतानुसार हो
- (b) उसके कार्य के अनुरूप हो
- (c) उपलब्ध भोज्य पदार्थों में पाए जाने वाले पोषक तत्वों के आधार पर हो
- (d) उपरोक्त सभी सही हैं।

171. छत्तीसगढ़ की पंजीकृत गाय की नस्ल है—

- (a) कोसली
- (b) कांकरेज
- (c) गीर
- (d) इनमें से कोई नहीं।

172. छत्तीसगढ़ की कोसली गाय की विशेषता है—

- (a) यह गाय छोटे कद-काठी की होती है
- (b) इसके मूत्र में यूरिया, खनिज लवण, एन्जाइम्स और फसलों के लिए उपयोगी अन्य तत्वों की मात्रा भी पाई जाती है
- (c) इसके गौमूत्र का छिड़काव कर कीट नियंत्रण किया जाता है
- (d) उपरोक्त सभी।

173. कोसली गाय की अन्य विशेषता—

- (a) इस गाय का पालन छोटे और मध्यम किसानों के लिए लाभकारी है
- (b) इसके दूध में मिठास ज्यादा होती है
- (c) इनमें बच्चे पैदा करने की क्षमता ज्यादा होने से इन्हें रोग कम होते हैं
- (d) उपरोक्त सभी।

174. जैविक खेती के पक्षधर किसानों ने कोसली गाय के गौमूत्र के छिड़काव से अधिक लाभ प्राप्त किया है—

- (a) सत्य है
- (b) असत्य है
- (c) आंशिक सत्य है
- (d) इनमें से कोई नहीं।

175. बूचड़खानों को हर तरह से उचित उपाय कर बंद करवाना चाहिए—

- (a) सत्य
- (b) आंशिक सत्य
- (c) असत्य
- (d) इनमें से कोई नहीं।

176. गौओं की उचित वंश वृद्धि के उपाय करने चाहिए—
 (a) बिल्कुल सही (b) बिल्कुल सही नहीं
 (c) आंशिक सही (d) इनमें से कोई नहीं।
177. घास के लहलहाते मैदान गौओं के लिए सर्वत्र खुले होने चाहिए—
 (a) असत्य (b) सत्य
 (c) आंशिक सत्य (d) इनमें से कोई नहीं।
178. बैलों के काम और चारे-दाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए—
 (a) उचित है (b) अनुचित है
 (c) आंशिक उचित है (d) इनमें से कोई नहीं।
179. गौओं की तंदुरुस्ती और स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए—
 (a) बिल्कुल सही नहीं है (b) बिल्कुल सही है
 (c) आंशिक सही नहीं है (d) इनमें से कोई नहीं।
180. उत्सवों पर गौओं का विशेष पूजन होना चाहिए—
 (a) बिल्कुल सही है (b) बिल्कुल सही नहीं है
 (c) आंशिक सही है (d) इनमें से कोई नहीं।
181. गौवंश के लिए हृदय में अगाज प्रेम होना चाहिए—
 (a) बिल्कुल सही है (b) बिल्कुल सही नहीं है
 (c) आंशिक सही है (d) इनमें से कोई नहीं।
182. गाय के दूध का रिकार्ड रखने से गौ पालक को क्या फायदा होता है—
 (a) इससे संतुलित चारा दे सकता है, इससे गाय का दूध होता रहे
 (b) गाय के स्वास्थ्य का नित्य पता रहता है
 (c) गाय की बीमारी का तुरंत पता चल जाता है
 (d) उपरोक्त सभी।
183. कौन-सा वाक्य सही है—
 (a) दूध का रिकार्ड रखने से उसके वंश की उन्नति की जा सकती है
 (b) सांड खरीदते वक्त उसकी माँ के दूध का रिकार्ड महत्वपूर्ण होता है
 (c) दूध की मात्रा में मक्खन का अनुपात भी सम्मिलित है
 (d) उपरोक्त सभी सही हैं।

184. गौ पालन से संबंधित कौन-सा वाक्य सही है—

- (a) रोज बराबर नियम समय पर कम से कम दो बार और यदि हो सके तो तीन चार बार खुराक दी जाय
- (b) गाय के सामने हमेशा नमक का एक बड़ा डला रखना चाहिए ताकि जब चाहे वह उसको चाट सके
- (c) कम से कम दो बार ताजा साफ पानी गाय को पिलाना चाहिए
- (d) उपरोक्त सभी सही हैं।

उत्तरमाला

1. (c), 2. (a), 3. (a), 4. (a), 5. (a), 6. (b), 7. (b), 8. (a), 9. (b), 10. (d), 11. (b), 12. (b), 13. (a), 14. (c), 15. (b), 16. (c), 17. (a), 18. (a), 19. (a), 20. (a), 21. (a), 22. (b), 23. (c), 24. (b), 25. (b), 26. (b), 27. (a), 28. (a), 29. (a), 30. (a), 31. (b), 32. (b), 33. (a), 34. (b), 35. (a), 36. (d), 37. (a), 38. (a), 39. (a), 40. (a), 41. (a), 42. (a), 43. (c), 44. (a), 45. (a), 46. (a), 47. (c), 48. (d), 49. (c), 50. (a), 51. (c), 52. (a), 53. (b), 54. (a), 55. (a), 56. (b), 57. (a), 58. (a), 59. (a), 60. (a), 61. (d), 62. (a), 63. (a), 64. (a), 65. (d), 66. (a), 67. (a), 68. (a), 69. (a), 70. (a), 71. (a), 72. (a), 73. (c), 74. (a), 75. (d), 76. (d), 77. (d), 78. (d), 79. (a), 80. (d), 81. (d), 82. (a), 83. (a), 84. (d), 85. (d), 86. (d), 87. (d), 88. (d), 89. (a), 90. (a), 91. (d), 92. (a), 93. (d), 94. (d), 95. (b), 96. (a), 97. (a), 98. (b), 99. (c), 100. (c), 101. (b), 102. (a), 103. (b), 104. (b), 105. (a), 106. (c), 107. (b), 108. (a), 109. (b), 110. (a), 111. (b), 112. (b), 113. (b), 114. (c), 115. (a), 116. (a), 117. (a), 118. (b), 119. (a), 120. (b), 121. (a), 122. (a), 123. (b), 124. (a), 125. (a), 126. (d), 127. (b), 128. (b), 129. (a), 130. (a), 131. (d), 132. (d), 133. (a), 134. (a), 135. (b), 136. (a), 137. (a), 138. (b), 139. (a), 140. (b), 141. (b), 142. (c), 143. (a), 144. (a), 145. (a), 146. (c), 147. (a), 148. (b), 149. (a), 150. (d), 151. (b), 152. (d), 153. (a), 154. (d), 155. (d), 156. (d), 157. (d), 158. (d), 159. (d), 160. (d), 161. (d), 162. (d), 163. (d), 164. (d), 165. (d), 166. (d), 167. (d), 168. (a), 169. (b), 170. (d), 171. (a), 172. (a), 173. (d), 174. (a), 175. (a), 176. (a), 177. (b), 178. (a), 179. (b), 180. (a), 181. (a), 182. (d), 183. (d), 184. (d).